Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिजीद्वीप में मेरे २१ वर्ष

लेखक
तोताराम सनाढ्य

.P.S
97
RY-F

प्रकाशक
पं० बनारसीदास चतुर्वेदी
ज्ञानपुर, जिला—वाराणसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

185496

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्नेह भेंट डा: रामप्रकाश जी
आर्य को
सादर भेंट

पालमपुर २८.७.७७ / कैलाश वाचस्पति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिजीद्वीप में मेरे २१ वर्ष

097
185496

लेखक

तोताराम सनाढ्य

Central Library
185496
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

प्रकाशक

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी

ज्ञानपुर, जिला—वाराणसी

वितरक

शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी

पुस्तक-प्रकाशक, अस्पताल रोड, आगरा–३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ संस्करण : १९७३

R.P.S
097
ARY-F

मूल्य : दो रुपये अथवा चार शिलिंग

शिव आर्ट प्रिण्टर्स, आगरा–२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण

सन् १८७९ से लेकर सन् १९१६ तक ६०,५५३ भारतीय गिरमिट की प्रथा में फँसकर फिजी द्वीप में गये। गिरमिट की अवधि को पूरी कर कितने ही भारतीय स्वदेश लौट आये, मगर इनमें से अधिकतर फिजी में ही रहकर स्वतन्त्र रूप से खेती तथा व्यापार करने लगे। इनमें से अधिकांश अशिक्षित थे, फिर भी उन्होंने अपनी लगन और मेहनत से फिजी के सामाजिक तथा आर्थिक विकास में पूरा-पूरा हाथ बटाया। आर्थिक कठिनाइयों को झेलते हुए तथा भेदभावों का सामना करते हुए भी उन्होंने अपनी सन्तानों को शिक्षित करने में कोई कोर-कसर नहीं रखी। इन्हीं पूर्वजों की मेहनत और त्याग के फलस्वरूप फिजीद्वीप आज 'प्रशान्त महासागर के स्वर्ग' के नाम से प्रसिद्ध है।

इन साठ हजार श्रमजीवियों मे से स्वर्गीय सरदार श्री रामउग्रह भी एक श्रमिक थे। आपका जन्म यू० पी० के गोरखपुर जिले में हुआ था। सन् १९०४ में आरकटियों के चगुल में फँसकर आप फिजीद्वीप गये थे। अपनी गिरमिट की अवधि समाप्त करने के बाद वे सारु, लटौका में जमीन लेकर स्वतन्त्र रूप से खेती तथा व्यापार करने लगे। आप तथा आपके पुत्र स्वर्गीय श्री सरजूप्रसाद जी धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में सदा अग्रसर रहे। सरदार श्री रामउग्रह के पौत्र तथा स्वर्गीय श्री सरजूप्रसाद के सुपुत्र लटौका के लोकप्रिय बैरिस्टर श्री सुरेन्द्रप्रसाद जी, एल-एल. बी. भी अपने पूर्वजों की तरह धार्मिक, सामाजिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में एक उत्साही कार्यकर्ता हैं। आप में भारतीय सस्कृति का अभिमान है। आपकी यह धारणा है कि फिजीद्वीप के विकास में भारतीयों के गिरमिटिया पूर्वजों ने जो बलिदान किये थे उन्हें उनकी भावी सन्तान को तथा अन्य फिजीवासियों को कदापि नहीं भूलना चाहिए। बैरिस्टर श्री प्रसाद के उत्साह तथा सहयोग से हम पाठकों के समक्ष इस संस्करण को प्रस्तुत करने में समर्थ हुए हैं।

कृतज्ञतास्वरूप यह पुस्तक स्व० सरदार श्री रामउग्रहजी की आत्मा को सादर समर्पित है।

बनारसीदास चतुर्वेदी

ज्ञानपुर
जिला—वाराणसी
अक्तूबर १९७२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

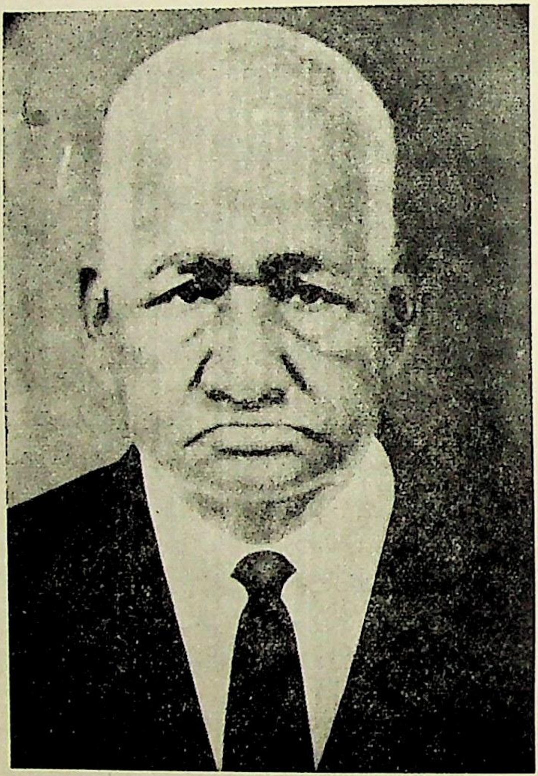

लटौका, फिजी के स्वर्गीय सरदार श्री रामउग्रहजी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धांजलि

महात्मा गांधी

वयोवृद्ध तोतारामजी किसी से भी सेवा लिये बगैर ही गये। ये साबरमती आश्रम के भूषण थे। विद्वान तो नहीं, पर ज्ञानी थे। भजनों के भण्डार थे, फिर भी गायनाचार्य न थे। अपने एक तारे और भजनों से आश्रमवासियों को मुग्ध कर देते थे। जैसे वे, वैसे ही उनकी पत्नी भी थीं। पर तोतारामजी पहले ही चल बसे!

जहाँ आदमियों का जमाव रहता है, वहाँ तरह-तरह के झगड़े चलते ही रहते हैं। मुझे ऐसा एक भी मौका याद नहीं, जिसमें इस दम्पत्ति ने भाग लिया हो या ये किसी तरह के झगड़े की जड़ बने हों। तोतारामजी को धरती प्यारी थी। खेती उनका प्राण थी। आश्रम में वे बरसों पहले आये और कभी उसे नहीं छोड़ा। छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष उनके मार्गदर्शन के भूखे रहते। उनसे अचूक आश्वासन पाया करते।

वे कट्टर हिन्दू थे, पर उनका हृदय हिन्दू, मुसलमान और अन्य धर्मियों के प्रति समान रहा। उनमें अस्पृश्यता की बू तक न थी और न किसी तरह का व्यसन ही था। राजनीति में उन्होंने भाग नहीं लिया। फिर भी उनका देश-प्रेम चाहे जिसकी तुलना में खड़ा रह सके, इतना उज्ज्वल रहा। त्याग उनमें सहज ही था। उसे ही वे शोभित करते थे।

ये फीजीद्वीप में गिरमिटिया के तौर पर गये थे। दीनबन्धु ऐण्ड्रूज ने ही उन्हें खोज निकाला था। उन्हें आश्रम में लाने का श्रेय श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को है। उनकी अन्तिम घड़ी तक जो कुछ उनकी सेवा हो सकती थी, वह भाई गुलाम रसूल कुरेशी की पत्नी और इमाम साहब की बहन ने की थी। "परोपकाराय सतां विभूतय:"—तोतारामजी में यह अक्षरश: सत्य रहा।

[‘अन्तिम झाँकी’ पुस्तक से, नवजीवन ट्रस्ट की अनुमति से साभार]

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय पं० तोतारामजी सनाढ्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थकर्ता की प्रार्थना

प्रिय देशबन्धु !

मैं वास्तव में उन महानुभावों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मेरी इस क्षुद्र पुस्तक को अपनाकर मेरे प्रयत्न को सफल किया है। जिन समाचार-पत्रों के सम्पादकों ने मुझे इस कार्य में सहायता दी है, उनका मैं आजन्म ऋणी रहूँगा। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने उनकी सहायता का दुरुपयोग नहीं किया। यह उन्हीं की कृपा का फल था कि मैं चार सौ से अधिक प्रतियाँ हरिद्वार, कुम्भ, लखनऊ साहित्य सम्मेलन तथा मद्रास कांग्रेस के उत्सव पर बिना मूल्य वितरण कर सका, और उन्हीं की मदद के कारण मेरी तुच्छ पुस्तक को आशातीत सफलता प्राप्त हुई। जो थोड़ा-सा काम मैं इस विषय में अपनी तुच्छातितुच्छ बुद्धि के अनुसार करता हूँ, उसके लिए मुझे प्रशंसात्मक शब्दों तथा धन्यवादों की आवश्यकता नहीं, क्योंकि ऐसा करना मेरा कर्तव्य ही है।

यदि हो सका तो शीघ्र ही मैं अपनी दूसरी पुस्तक लेकर आपकी सेवा में उपस्थित होऊँगा।

विनीत

तोताराम सनाढ्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लटौका, फिजी के श्री सुरेन्द्र प्रसाद बैरिस्टर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट—
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

दो शब्द

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुए अट्ठावन वर्ष हुए हैं। इन अट्ठावन वर्षों में फिजी के भारतीयों की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्थिति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो चुके हैं।

सन् १९१६ में फिजी के अधिकांश भारतीय शर्तबँधे मजदूर तथा कुछ इनके सन्तान थे। वे ज्यादातर मजदूर ही थे, मगर कुछ किसान और छोटे व्यापारी भी थे।

आज फिजीद्वीप की आबादी लगभग ५,४०,००० है जिसमें करीब २,४०,००० आदिवासी तथा शेष अन्य जाति के लोग हैं। अभी भी काफी तादाद में भारतीय मजदूर हैं, मगर अधिकांश किसान हैं, कई छोटे तथा बड़े व्यापारी भी हैं, कुछ डाक्टर, वकील इत्यादि हैं, और कई उच्च सरकारी पदों पर हैं। शर्तबन्दी के जमाने के समय से अनेक अन्यायों को सहते हुए भी भारतीयों ने आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण प्रगति की है।

भारत से १२,००० मील दूर होते हुए भी तीसरी और चौथी पीढ़ी के भारतीयों ने फिजी में अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और अपने धर्म को सुरक्षित रखा है। फिजी में आर्य समाज, सनातन धर्म, मुसलिम लीग, कबीर पन्थ सभा, सिक्ख गुरुद्वारा समिति आदि धार्मिक संस्थाएँ अपना-अपना कार्य आनन्द-पूर्वक कर रही हैं। दीपावली, होली, रामनवमी, ईद इत्यादि त्यौहार आज उसी तरह मनाये जाते हैं जैसे वे पचास वर्ष पहले मनाये जाते थे। अंग्रेजी शिक्षा प्रचलित होते हुए भी ९५ प्रतिशत भारतीय अपने घरों में हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं।

लटौका (फ़िज़ीद्वीप) ३० नवम्बर, १९७२ **सुरेन्द्र प्रसाद**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज का फिजी

आज का फिजी ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के अन्तर्गत एक स्वतन्त्र देश है। इसकी जनसंख्या ५,३५,३७५ है। इनमें भारतवंशियों की संख्या २,७२,०४० है, मूल निवासियों की संख्या २,३९,०४२ है तथा शेष यूरोपियन, चीनी तथा दूसरे द्वीपों के लोग हैं।

फिजी में दो प्रमुख पार्टियाँ हैं, एलायन्स और नेशनल फेडेरेशन। फिजी की वर्तमान सरकार एलायन्स पार्टी की है और प्रधान मन्त्री रातू सर कामिसेसे मारा हैं। विरोधी दल के नेता हैं श्री एस० एम० कोया।

अब तक फिजी के प्रमुख व्यवसाय चीनी, नारियल और सोना रहे हैं, लेकिन पिछले कुछ वर्षों से पर्यटन व्यवसाय में भी भारी प्रगति की है तथा वर्तमान समय में यह दूसरे नम्बर का व्यवसाय है और संसार के हर कोने से सैलानी फिजी आने लगे हैं। वर्तमान सरकार नये व्यवसायों को भी प्रोत्साहन दे रही है।

फिजी की राष्ट्रभाषा अंग्रेजी है, किन्तु मूल निवासियों की भाषा तथा हिन्दी को भी मान्यता प्राप्त है। हिन्दी फिल्मों तथा भारतीय संगीत फिजी में काफी लोकप्रिय है। दिवाली, ईद, होली आदि पर्व फिजी में बड़े समारोह के साथ मनाये जाते हैं। "वनुआलेवू" द्वीप की रामलीला तीन दिन तक चलती है और मीलों चलकर लोग इसमें भाग लेने आते हैं। सूबा के गिरजाघरों में भी दिवाली के दीये जलते हैं।

आज के फिजी में अनेक भाषाओं और अनेक संस्कृतियों का संगम है। देश की उन्नति के लिए सभी जातियाँ शान्ति और सहयोग के साथ परिश्रम कर रही हैं। वर्तमान सरकार के मन्त्रिमण्डल में सभी प्रमुख जातियों के लोग हैं। तीन सरकारी विभागों के मिनिस्टर भारतवंशी हैं। फिजी के प्रथम स्थानीय गवर्नर जनरल रातू जोर्ज दकाम्बाऊ नियुक्त हुए हैं।

गिरमिट में आये हुए भारतीयों की सन्तानों ने तथा भारत से बाद में आये हुए लोगों ने अन्य जातियों के साथ मिलकर फिजी के विकास के लिए कठिन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिश्रम किया है। इनमें से कई आज उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर कार्य कर रहे हैं। ये सब आज फिजी-राष्ट्र के नागरिक हैं। आज के फिजी के साथ भारत का सम्पर्क काफी घनिष्ठ है। प्रतिवर्ष भारी संख्या में फिजी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए भारत जा रहे हैं, इनमें कई विद्यार्थी इस देश के मूल निवासी भी हैं। भारत से आये हुए अध्यापक, डाक्टर तथा अन्य विशेषज्ञ फिजी को अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। फिजी के अनेक प्रमुख नागरिक भारत सरकार के अतिथि के रूप में भारत की यात्रा कर चुके हैं, इनमें फिजी के वर्तमान प्रधान मन्त्री भी हैं। रातू सर कामिसेसे मारा, जिन्हें स्नेह से केवल "रातू मारा" भी पुकारा जाता है, एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें आकर्षण है, नेतृत्व की शक्ति है और धार्मिक सहिष्णुता भी। व्यक्ति की समानता और चरित्र की गम्भीरता के बल पर फिजीद्वीप का ही नहीं बल्कि सारे दक्षिण प्रशान्त के स्वतन्त्र राष्ट्रों का नेतृत्व सँभाले हुए है और वह भी केवल भाई-चारे के नाते।

आज के फिजी की अन्तरजातीय एकता और सद्भावना फिजी के उज्ज्वल भविष्य की सूचक है। एक ऐसा भविष्य जबकि फिजी पूर्णरूप से दक्षिण प्रशान्त का स्वर्ग बन सकता है।

फिजी के भारतवंशी तामिल, तेलुगू, केरल, बिहार, यू०पी०, राजस्थान तथा पंजाब इत्यादि प्रान्तों से आये थे परन्तु आज वे अपने परिवार सहित हिन्दी बोलते हैं। फिजी रेडियो पूरे दिन हिन्दी का प्रोग्राम चालू रखता है। हिन्दी के चार साप्ताहिक पत्र हैं।

काईवीती लोग बड़े सरल, धर्मप्रेमी और गाने तथा खेलने के बड़े शौकीन हैं। उनके जीवन में सामाजिक अनुशासन भी है। उनके गाँव छोटे परन्तु बहुत ही सुन्दर, फूल-पत्ते और फलयुक्त हैं। सबका स्वागत वे सहज मुस्कान से करते और शौक से हाथ मिलाते हैं। भारतीय, फिजियन और चीनी सभ्यताओं और जातियों की त्रिवेणी फिजी देश को रंगीन और शस्य-श्यामला बनाये हुए है। आज के फिजी का वर्तमान सुखद और मनोरंजक है और भविष्य आकर्षक, उन्नत और धन-धान्यपूर्ण।

२२ नवम्बर, १९७२ **भगवानसिंह**

(फिजी में भारत के हाई कमिश्नर)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक का निवेदन

(द्वितीय संस्करण से)

पाठकगण !

आज हम आप लोगों की सेवा में "फिजीद्वीप में मेरे २१ वर्ष" नामक पुस्तक का द्वितीय संस्करण लेकर उपस्थित होते हैं। वास्तव में हम उन महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद देते हैं, जिनकी कृपा से हमें द्वितीय संस्करण के प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। निम्नलिखित पत्रों के सम्पादकों और संचालकों के हम अत्यन्त ऋणी तथा कृतज्ञ हैं।

भारतमित्र, हिन्दी चित्रमय जगत, नवजीवन, प्रताप, विद्यार्थी, सुधानिधि, प्रभा, जैनहितैषी, प्रभात, भारतसुदशा प्रवर्तक, तरङ्गिणी, हिन्दी समाचार, नवनीत, भारतोदय, चतुर्वेदी, अभ्युदय और सद्धर्मप्रचारक।

पुस्तक की सफलता

यद्यपि प्रकाशक को यह शोभा नहीं देता कि अपनी पुस्तक के विषय में प्रशंसायुक्त शब्द कहे, क्योंकि लोग उसे नोटिसबाजी ख्याल कर सकते हैं, तथापि हम दो-चार शब्द पुस्तक की सफलता के विषय में कहने से रुक नहीं सकते। इसका कारण यही है कि जिन पत्रों के सम्पादकों तथा संचालकों ने हमें कृपापूर्ण सहायता दी है, उनकी सेवा में हम निवेदन कर देना चाहते हैं कि आपकी सहायता का सर्वथा सदुपयोग ही हुआ है। हिन्दी, अंग्रेजी, बंगाली, गुजराती तथा उर्दू व मराठी पत्रों ने इस पुस्तक के विषय में जो सहमतियाँ दी हैं, उनसे पुस्तक की सफलता का कुछ-कुछ पता लग सकता है।

बंगाली के 'भारतवर्ष' नामक मासिक पत्र में, जो कि बंगाली भाषा में ही नहीं बल्कि भारत की सारी देशी भाषाओं में सर्वोत्कृष्ट मासिक पत्र है, इस पुस्तक के विषय में एक सचित्र प्रशंसात्मक लेख छपा था। इस लेख के लेखक श्रीयुत् हंसेश्वर देव शर्मा, एम०ए० हैं। पूना के सुप्रसिद्ध मराठी पत्र 'केसरी' ने डेढ़ कालम में इस पुस्तक की बड़ी बढ़िया आलोचना की, जिसका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल यह हुआ कि चार महाराष्ट्रीय सज्जनों ने इस पुस्तक के मराठी अनुवाद करने की आज्ञा माँगी ! हर्ष की बात है कि खानापुर बेलगाँव से निकलने वाले प्रसिद्ध मराठी पत्र 'लोकमित्र' के उप-सम्पादक श्रीयुत् सीताकान्त जी ने इस पुस्तक का मराठी अनुवाद कर लिया है। यह अनुवाद शीघ्र ही प्रकाशित होगा। सुप्रसिद्ध गुजराती पत्र 'प्रात:काल' के सम्पादक इस पुस्तक का गुजराती अनुवाद प्रकाशित करेंगे। इस पुस्तक का उर्दू अनुवाद हो चुका है। अनुवादक हैं हिन्दी के प्रसिद्ध राष्ट्रीय लेखक श्रीयुत् पीर मुहम्मदजी मूनिस। हम आपके अत्यन्त अनुगृहीत हैं। यह अनुवाद बहुत जल्द छपेगा। युक्त प्रान्त के सर्वोत्तम अंग्रेजी पत्र 'लीडर' के सम्पादक ने एक बड़ी जोरदार सम्पादकीय टिप्पणी इस पुस्तक के विषय में लिखी थी। इस टिप्पणी में उन्होंने लिखा था "We hope the startling facts disclosure made in this book will receive the best attention from the Government of India." अर्थात् "हम आशा करते हैं कि जो आश्चर्यदायक पोलें इस पुस्तक में खोली गयी हैं उनकी ओर भारत सरकार का ध्यान आकर्षित होगा।" सर्वश्रेष्ठ भारतीय मासिक पत्र Modern Review के सम्पादक ने अपनी एक सम्पादकीय टिप्पणी में लिखा था "It would be good if somebody could publish an English translation of Pandit Tota Ram's Hindi book. For its own information the Government of India might get it translated." अर्थात "यदि कोई पंडित तोताराम की हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कर दे तो बड़ी अच्छी बात हो। भारत सरकार ही अपने लिये इस पुस्तक का अनुवाद करा ले।" इस टिप्पणी के प्रकाशित होने के दो-चार दिन बाद ही प्रसिद्ध भारत हितैषी मिस्टर सी० एफ० ऐण्ड्रूज का कृपापत्र आया उसमें उन्होंने लिखा था, "I have got a translation made for me of your excellent book. It is very nearly completed. I shall use it freely." अर्थात् मैंने आपकी अत्युत्तम पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद अपने लिये करवा लिया है। यह अनुवाद लगभग समाप्त हो गया है। मैं उसका खूब प्रयोग करूँगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े-बड़े विद्वानों की सम्मति में कुली-प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन में इस पुस्तक ने बड़ी सहायता दी है। मिस्टर ऐण्ड्रूज ने लिखा था, "मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि शर्तबन्दी की गुलामी के उठा देने में इस पुस्तक से बड़ी भारी सहायता मिलेगी।"

भारत के कई प्रसिद्ध नेताओं ने इस क्षुद्र पुस्तक को पढ़ लिया है और सन्तोष प्रकट किया है। फिजीद्वीप में भी इस पुस्तक का अच्छा प्रभाव पड़ा है। इन बातों पर विचार करते हुए यह कहना अनुचित न होगा कि इस क्षुद्र पुस्तक को पूरी-पूरी सफलता प्राप्त हुई है।

ग्रन्थकार के विषय में दो बातें

पुस्तक के रचयिता पं० तोतारामजी सनाढ्य के विषय में दो-चार बातें कहना हमने अत्यन्त आवश्यक समझा है। इसके कई कारण हैं। कुछ लोग तो पं० तोतारामजी को कोरम कोर कुली ही समझते हैं और कुछ लोग उन्हें 'भारत गौरव' महापुरुषों की कोटि में रखकर अत्युक्ति कर देते हैं। पं० तोतारामजी इन दोनों में से कोई भी नहीं हैं। पण्डित जी एक साधारण आदमी हैं। आप हिन्दी लिख-पढ़ सकते हैं। फिजियन भाषा के आप अच्छे ज्ञाता हैं और सिर्फ थोड़ी-सी टूटी-फूटी अंग्रेजी भी जानते हैं। अंग्रेजी से हिन्दी तथा हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद आपको दूसरों से कराना पड़ता है। जो लोग पण्डितजी को बढ़े-चढ़े विद्वान समझते हैं वे भूल करते हैं। हाँ, हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि पण्डित जी कट्टर देशभक्त हैं और बड़े अनुभवी हैं। फिजी के प्रवासी भारतवासियों के लिए आपने जो काम किया है, तथा जो काम आप कर रहे हैं, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। आपके फिजी के कार्य के विषय में हम अपनी ओर से कुछ न कहकर एक अभिनन्दन पत्र से जो फिजी प्रवासी भारतीयों ने आपको भेंट किया था, कुछ वाक्य उद्धृत करते हैं।

'आपने २१ वर्ष रहकर हम सब फिजी प्रवासी भारतवासियों के साथ जो भलाई की है, उसके लिए हम सब आपके आजन्म ऋणी रहेंगे। आपने सनातन धर्म की पताका को फिजी में फहराकर हम सबको धर्म में प्रवृत्त किया। ईश्वर आपको इस उपकार का बदला देगा। महात्मा गांधीजी और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर मणिलालजी से पत्र-व्यवहार करके डॉक्टर मणिलालजी को बुलाने के लिए पैसा इकट्ठा करने के निमित्त आप अपनी गाँठ का पैसा खर्च कर पहाड़ व जंगलों में कोठियों में घूमे और अपनी स्त्री और बच्चों की भी परवाह न करके २६०० रुपये इकट्ठे किये और मणिलालजी को बुलाया। यह कहना अनुचित न होगा कि डॉक्टरजी आज आप ही के कठिन परिश्रम से आये हैं। 'भारत सरकार ने जो कमीशन हम लोगों के दुख की जाँच करने के लिए भेजा था, उसके जाँच करने की सूचना फिजी के एजेण्ट जनरल ने यहाँ के गोरे जमींदारों को दे दी थी, हम लोगों को स्वप्न में भी कमीशन के आने की खबर न थी ! आपने ऐसे समय में अपनी बुद्धिमत्ता दिखा, कुली एजेण्ट से उपरोक्त कमीशन की जाँच का नोटिस लाकर अंग्रेजी से हिन्दी में तर्जुमा कराके तमाम कोठियों में पहुँचाया..........और भी कुन्ती का दुख देख उस पर गुजरे जुल्म आपने ही भारत के समाचार-पत्रों में उद्धृत कराके भारत के नेता तथा सरकार तक पहुँचाये। आपने ही यह बात एजेण्ट जनरल तक पहुँचायी कि हिन्दू मुसलमानों के धार्मिक विवाहों को सरकार स्वीकार करे...।

३० मार्च, १९१४ के पैसिफिक हैराल्ड नामक गोरों के एक पत्र ने लिखा था—

"Tota Ram is leaving for good and his departure is much felt by the Indians of Fiji, as he has been one of the leading Aryan lecturers and debaters in the colony. It is noteworthy that Pandit Tota Ram is the first Indian who has received an address from his fellow countrymen in Fiji."

अर्थात पं० तोताराम हमेशा के लिए फिजी को छोड़कर जा रहे हैं। उनके जाने से फिजी प्रवासी भारतवासियों को बड़ा खेद हुआ है, क्योंकि वे इस उपनिवेश में आर्य धर्म पर व्याख्यान देने वाले तथा शास्त्रार्थ करने वालों में से एक मुख्य पुरुष रहे हैं............यह बात ध्यान देने योग्य है कि पं० तोतारामजी ही पहले भारतवासी हैं, जिन्हें कि अपने फिजी प्रवासी देश-भाइयों से अभिनन्दन-पत्र मिला है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसिद्ध मिशनरी मिस्टर जे० डब्ल्यू० बर्टन साहब ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'फिजी आव टुडे' Fiji of To-day में आपको 'A well educated Brahmin–clearheaded and cool debater' एक सुशिक्षित ब्राह्मण, शुद्ध मस्तिष्क वाला और शान्तिपूर्वक शास्त्रार्थ करने वाला लिखा है और आपको फिजी के हिन्दुओं का मुखिया समझा है।

भारत में आये हुए आपको एक साल से अधिक हो गया। इसी बीच में आपने कुली-प्रथा के विरुद्ध बहुत कुछ आन्दोलन किया है। कलकत्ता, लाहौर, अम्बाला, मथुरा आदि अनेक स्थानों में आप कुली-प्रथा के विरुद्ध व्याख्यान दे चुके हैं। मद्रास कांग्रेस में आप फिजी के प्रतिनिधि होकर सम्मिलित हुए थे और कांग्रेस के प्लेटफार्म से आध घण्टे तक राष्ट्रभाषा हिन्दी में कुली-प्रथा के विरुद्ध व्याख्यान दिया था। सुप्रसिद्ध पत्र भारतमित्र ने लिखा था, "कुलियों के कष्टों के विषय में हमारे पाठक बहुत कुछ जानते हैं, परन्तु कांग्रेस वाले इस विषय में कुछ भी नहीं जानते। यदि फिजी प्रवासी भाई तोतारामजी को अपना प्रतिनिधि बनाकर न भेजते तो इसकी भी आशा न थी।" हरिद्वार के कुम्भ पर अपने निज के व्यय से बारह दिन तक कुली-प्रथा के विरुद्ध प्रचार किया था और पचास हजार विज्ञापन आरकाटियों के विरुद्ध बँटवाये थे। कितने ही गाँवों में घूम-घूमकर अपने टापुओं के दुख सुनाये हैं। इस विषय में आप विना किसी दूसरे की सहायता के सात सौ रुपये अपनी गाँठ से खर्च कर चुके हैं। फिजी में भी कुली-प्रथा के विरुद्ध आपने बहुत काम किया ही था। २३ सितम्बर, १९१२ को आपने राजर्षि गोखले की सेवा में बाँकीपुर कांग्रेस को निम्नलिखित तार भेजा था :

Indians Fiji wish success congress move resolution stop recruitment coolies disproportion women murders crimes immorality differential treatment education representation grievences many ill-treatments plantations.

फिजी की धार्मिक स्थिति सुधारने के लिए भी आपने कुछ काम किया था। यह आपके ही प्रयत्न का फल था कि सन् १९०२ ई० में फिजी के नाबुआ जिले में रामलीला प्रारम्भ हुई। लगातार सात-आठ वर्ष तक आपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामलीला का वहाँ प्रबन्ध किया था। यह रामलीला दो उद्देश्यों से करायी जाती थी। एक तो यह कि प्रवासी भारतवासियों के हृदय में अपने धर्म तथा अपने उत्सवों पर श्रद्धा बनी रहे तथा शर्तबन्दी भाई-बहनों के दुखों को जानने का अवसर मिले।

पं० तोतारामजी जो उपयोगी काम आजकल कर रहे हैं उसमें उन्हें दूसरों की सहायता की बड़ी आवश्यकता है। यदि अन्य लोग इस कार्य में उनका हाथ नहीं बटायेंगे तो अर्थाभाव के कारण दो-चार महीने बाद उन्हें अपना काम छोड़ देना पड़ेगा।

हम पं० तोतारामजी के अत्यन्त कृतज्ञ हैं कि उन्होंने अपनी इस पुस्तक को भारती भवन द्वारा प्रकाशित कराकर भवन की ख्याति को बढ़ाया है।

निवेदक

सभासद—**भारती भवन**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन

१५ जून, १९१४ को मैं अपने क्षुद्र जीवन का एक चिरस्मरणीय दिवस मानता हूँ। उस दिन मुझे फीरोजाबाद के हिन्दी पुस्तकालय **भारती भवन** में फिजी से लौटे हुए पं० तोतारामजी सनाढ्य के प्रथम दर्शन हुए थे।

भवन के मैनेजर लाला चिरंजीलाल ने मुझसे उनका परिचय कराते हुए कहा था :

"इनसे मिलिए। ये पं० तोतारामजी हैं, जो अभी हाल में फिजी से लौटे हैं।"

मैंने तुरन्त ही पण्डितजी से कहा—"**भारत-मित्र** में मैंने आपके भाषण का सारांश पढ़ा था। आप अपने अनुभव क्यों नहीं लिख देते ?"

पण्डितजी ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया—"मैं कोई लेखक तो हूँ नहीं। अगर कोई लिखने वाला मिल जाय तो मैं अपनी अनुभूतियाँ उसे सुना सकता हूँ।" मार्च, १९१२ में मेरे लेखक जीवन का प्रारम्भ हो चुका था और मेरे कितने ही लेख पत्रों में छप भी चुके थे। मैंने मन में सोचा कि यदि पण्डितजी के अनुभव मैं लिख सकूँ तो एक छोटी-सी पुस्तिका तो बन ही सकती है! पर मैं उन दिनों फर्रुखाबाद के सरकारी स्कूल में तीस रुपये महीने पर अध्यापक था और जनता में सरकार के विरुद्ध आन्दोलन करने वाली किसी भी पुस्तक पर मैं अपना नाम दे ही नहीं सकता था।

भवन से निकलकर हम दोनों चल दिये। मैं पण्डितजी को अपने घर ले आया। कुछ देर बातचीत होने के बाद यह तय पाया गया कि पन्द्रह दिन तक पण्डितजी नित्य प्रति मेरे घर पधारकर अपने अनुभव सुनायें और मैं उन्हें लिपिबद्ध कर दूँ।

इस प्रकार मेरा काम एक क्लार्क का ही था। हाँ, मैंने तथ्यों तथा अंकों को इकट्ठा करके पण्डितजी की रामकहानी को जामा जरूर पहना दिया था! पुस्तक हम दोनों के सम्मिलित उद्योग से बनी थी, पर उस पर नैतिक अधिकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो पण्डितजी का ही था। पुस्तक के छपते ही जो घनघोर आन्दोलन उठ खड़ा हुआ, उसकी मैंने कल्पना भी न की थी! उसके चार भिन्न-भिन्न अनुवाद गुजराती में हुए, दो अनुवाद बँगला में, एक मराठी में और श्री पीर मुहम्मद मूनिस ने उसका अनुवाद उर्दू में किया। उसका अंग्रेजी अनुवाद कराकर दीनबन्धु ऐण्ड्रूज फिजी लेते गये। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी **किसान** नामक पुस्तिका उसी के आधार पर लिखी तथा कवियित्री सुभद्राकुमारी चौहान के पूज्य पति श्री लक्ष्मणसिंह चौहान ने **कुली-प्रथा** नाटक उसी से प्रेरित होकर **प्रताप** में छपाया, जिसे सरकार ने जब्त कर लिया। लोकमान्य तिलक के **केसरी** में उस पर दो बार अग्रलेख निकले थे और क्रान्तिकारियों को वह पुस्तक पढ़ने को दी जाती थी! मैनपुरी षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों के पास वह पायी गयी थी! श्रद्धेय जयप्रकाश नारायण उन दिनों विद्यार्थी थे और उनके जीवन-चरित्र में श्री बेनीपुरीजी ने लिखा था कि 'फिजीद्वीप में २१ वर्ष' ने उन्हें बहुत प्रभावित किया था!

जब श्री जयप्रकाशजी हमारे नगर फीरोजाबाद में पधारे थे तो 'भारती भवन' का निरीक्षण करने के लिए भी वे गये थे। उसकी निरीक्षण-पुस्तिका में उन्होंने लिखा था :

"मुझे आज 'भारती भवन' में आकर बड़ी खुशी हुई। अपने बचपन में यहाँ से प्रकाशित पं० तोताराम सनाढ्य की **फिजी में मेरे २१ वर्ष** मैंने पढ़ी थी, जिसका गहरा असर मुझ पर हुआ था। आज उस संस्था का दर्शन कर मैं बड़ा खुश हुआ, जिसने वह साहित्य देश के सामने रखा था। मैं 'भारती भवन' की उत्तरोत्तर उन्नति की शुभकामना करता हूँ।

१४-३-६३ **जयप्रकाश नारायण**

उस पुस्तक के छपने के कुछ दिनों बाद ही मुझे इन्दौर के राजकुमार कॉलेज में हिन्दी अध्यापक का कार्य मिल गया था और यदि सरकार को इस बात का पता लग जाता कि पुस्तक के लिखने में मेरा हाथ था तो मुझे नौकरी से हाथ धोना पड़ जाता! उन दिनों भाई हरप्रसादजी चतुर्वेदी भारती भवन के प्रमुख कार्यकर्ता थे और उनके द्वारा कुँवर हनुवन्तसिंह रघुवंशीजी के पास

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह खबर भिजवा दी गयी कि वे उस पुस्तक की पाण्डुलिपि को सरकार के हाथ में न पड़ने दें। पुस्तक उन्हीं के प्रेस में छपी थी।

लोकमान्य तिलक के केसरी ने अग्रलेख में लिखा था—"लाखों पाठकों में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति निकले, जो इस पुस्तक को पढ़कर रो न दे। और चूंकि पुस्तक को सरकार ने अभी तक जब्त नहीं किया, इसलिए यह सिद्ध होता है कि इस पुस्तक में वर्णित तथ्यों का कोई भी उत्तर सरकार के पास नहीं।"

उसका परिणाम यह हुआ कि सरकार की कुदृष्टि उस पुस्तक पर पड़ गयी। उन दिनों मैं डेली कॉलेज, इन्दौर में था और मेरे पास खबर पहुँची कि शायद पुलिस मेरे घर की तलाशी ले! उस समय मैं **प्रवासी भारतवासी** नामक ग्रन्थ लिख रहा था और इस खबर के पाते ही मैंने उसकी सम्पूर्ण सामग्री अपने मित्र लाला बद्रीप्रसादजी के पास रखवा दी! ७२८ पृष्ठों का यह ग्रन्थ सन् १९१८ में छपा और उसके प्रकाशक थे भाई द्वारिकाप्रसादजी सेवक, जो हमारे सौभाग्य से अब भी हमारे बीच में विद्यमान हैं।

उन दिनों मैं डेली कॉलेज में पढ़ाता था जहाँ मध्यभारत के राजा-महाराजाओं के राजकुमार अथवा उनके जागीरदारों के लड़के शिक्षा पाते थे। ओरछा के राजकुमार वीरसिंह जू देव अपने दोनों भाइयों के साथ मेरे शिष्य थे। उनमें से अधिकांश को मैंने 'फिजीद्वीप में मेरे २१ वर्ष' पढ़ने को दी थी और प्रवासी भारतवासी के कुछ पृष्ठ तो क्लास-रूम में ही लिखे गये थे!

यह विवरण मैं केवल इस विचार से दे रहा हूँ कि प्रत्यक्ष रूप से पं० तोताराम जी का और परोक्ष रूप से फिजीद्वीप समूह का मैं कितना ऋणी हूँ। फिजीद्वीप ने मेरी सम्पूर्ण जीवन-शक्ति को जकड़ लिया था! यह बात तो मुझे आगे चलकर ज्ञात हुई कि मूकों को वाणी देना एक पवित्र कर्तव्य है और 'फिजीद्वीप में मेरे २१ वर्ष' नामक पुस्तक ने मूकों को वाणी ही प्रदान की थी! सौभाग्य से एक ऐसा विषय मेरे हाथ लग गया जो उस समय उपेक्षित था।

मैं यहाँ कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करूँगा कि इस मिशन ने मेरा कितना हित किया। उसी के कारण मैं दीनबन्धु ऐण्ड्रूज, महात्मा गांधी, माननीय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R.P.S
697
ARY-F
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री निवास शास्त्री, सम्पादकाचार्य सी० वाई० चिन्तामणि आदि के सम्पर्क में आ सका। कुछ ग्रन्थ भी लिखे गये :

१. प्रवासी भारतवासी—जिसकी भूमिका दीनबन्धु ऐण्ड्रूज ने लिखी थी पृ० संख्या ७२८
२. फिजी में भारतीय—दीनबन्धु की फिजी रिपोर्ट का अनुवाद।
३. फिजी की समस्या—फिजी में १९२१ के उपद्रव का इतिहास।
४. फिजी की डायरी—गोविन्द सहाय शर्मा कृत।
५. मर्यादा, चाँद, विशाल भारत तथा नवचेतन (गुजराती) के 'प्रवासी—अंक'।
६. विदेशों से लौटने वाले भारतीयों के विषय में अंग्रेजी में रिपोर्ट, स्वामी भवानीदयाल संन्यासी के सहयोग से।
७. कांग्रेस में प्रवासी विभाग की स्थापना।
८. मॉडर्न रिव्यू इत्यादि पत्रों में इस विषय पर लेखमाला।
९. दिल्ली में प्रवासी भवन की स्थापना के लिए आन्दोलन।

इस प्रकार पूरे बाईस वर्ष—सन् १९१४ से १९३६—तक मैंने अपनी क्षुद्र बुद्धि तथा अल्प-शक्ति के अनुसार प्रवासी भारतीयों की सेवा की। जून १९२० में मैंने दीनबन्धु ऐण्ड्रूज के आदेश पर राजकुमार कॉलेज, इन्दौर की नौकरी छोड़ दी थी और फिर चौदह महीने शान्तिनिकेतन में प्रवासी भारतीयों के कार्य के लिए ही रहा था। तत्पश्चात इसी कार्य के लिए चार वर्ष साबरमती आश्रम में भी रहने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। वहीं से मुझे पूर्वी अफ्रीका की यात्रा करने का भी अवसर मिला।

सन् १९३६ में मुझे प्रवासी भारतीयों की सेवा का कार्य आर्थिक कठिनाइयों के कारण छोड़ देना पड़ा। उन बाईस वर्षों में मुझे कुल जमा चौदह सौ रुपयों की सहायता प्रवासी भाइयों से प्राप्त हुई थी।

यद्यपि सन् १९५२ में पार्लामिण्ट में पहुँचने के बाद मैंने प्रवासी भारतीयों के कार्य को पुनः अपने हाथ में लेने का प्रयत्न किया और उस समय बन्धुवर स्व० सी० एल० पटेल मेरे सहायक थे, पर वह काम आगे बढ़ नहीं सका।

Central Library
185496
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी प्रार्थना पर फिजीद्वीप के स्वर्गीय शंकर प्रताप जी ने श्री प्रकाशवीर शास्त्री द्वारा श्रद्धेय पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू को प्रवासी भवन के लिए एक भूमिखण्ड प्रदान करने के लिए लिखवाया और पण्डित जी ने कृपाकर अपने स्वर्गवास से तीन दिन पहले इस विषय का पत्र श्री प्रकाशवीर शास्त्री को भेजा था। पर जमीन का वह टुकड़ा बीच में ही एक सज्जन ने हड़प लिया! इस प्रकार मेरा वह स्वप्न जहाँ का तहाँ पड़ा रह गया! अब मैं शीघ्र ही अपनी ८१वीं वर्ष प्रारम्भ कर रहा हूँ और इस बात की सम्भावना बहुत कम है कि मैं अपने 'प्रवासी भवन' के स्वप्न को इस जीवन में चरितार्थ देख सकूं। यदि फिजी तथा मारीशस के प्रभावशाली भारतीय भारत सरकार से भूमिखण्ड प्राप्त करके अपने-अपने कमरे बनवा दें तो अन्य उपनिवेशों के भाई भी ऐसा करने के लिए उत्साहित हो सकते हैं।

इस अवसर पर मैं प्रवासी भारतीयों से कुछ निवेदन कर देना चाहता हूँ :

(१) आप लोग जहाँ भी जिस देश में रह रहे हों उसे ही अपनी मातृ-भूमि समझें और अपनी सर्वोत्तम भेंट उसी को अर्पित करें।

(२) सभी जातियों के साथ भ्रातृत्व की भावना से काम लें। सबकी मिली-जुली संस्कृति ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

(३) भारतीय पत्रों को अपने यहाँ के प्रामाणिक समाचार नियमपूर्वक बराबर भेजते रहें।

(४) स्वामी भवानी दयाल जी की तरह किसी न किसी प्रवासी भारतीय युवक को यह मिशन अपने हाथ में ले लेना चाहिए। यह बात ध्यान देने योग्य है कि स्वामीजी का जन्म दक्षिण अफ्रीका में हुआ था।

(५) यद्यपि साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा शिक्षा-सम्बन्धी कार्यों में भारतवर्ष प्रवासी भारतीयों की यथाशक्ति सेवा कर सकता है तथापि अपने राजनीतिक सवाल खुद ही हल करने होंगे। हमारा देश साम्राज्यवाद के पैरों तले कुचला गया था और हम लोग अपना उपनिवेश बनाने की कल्पना भी नहीं कर सकते।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) भारत में भी कुछ नवयुवक ऐसे तैयार होने चाहिए, जो प्रवासी भारतीयों के विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करें और उनकी यथाशक्ति सहायता करना प्रवासी भारतीयों का कर्तव्य है।

(७) एक भी वाक्य तो क्या, एक भी शब्द हमारे मुँह या लेखनी से ऐसा न निकले, जिससे भिन्न-भिन्न जातियों में पारस्परिक दुर्भावना पैदा हो।

फिजियन लोगों की अपनी अलग संस्कृति है और उनमें कई गुण ऐसे हैं, जिनका अनुकरण हम भारतीयों को करना चाहिए। पं० तोताराम जी के हृदय में फिजियन लोगों के प्रति प्रेम तथा आदर की भावना थी। उनकी भाषा पण्डितजी ने परिश्रमपूर्वक सीखी थी और **भूतलैन** में जब वे आत्मघात करना चाहते थे तो उनके जीवन की रक्षा एक फिजियन भाई ने ही की थी! पण्डितजी द्वारा लिखित **भूतलैन की कथा** प्रत्येक फिजी प्रवासी भारतीय को पढ़ लेनी चाहिए।

(८) प्रत्येक उपनिवेश में एक केन्द्रीय पुस्तकालय ऐसा होना चाहिए जिसमें हिन्दी, उर्दू, तामिल तथा गुजराती के ग्रन्थों का संग्रह हो। अंग्रेजी ग्रन्थों का रहना तो अनिवार्य है ही। उन पुस्तकालयों में महात्मा गांधी, कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, दीनबन्धु ऐण्ड्रूज, मि० पियर्सन, राजर्षि गोखले, महामाननीय श्रीनिवास शास्त्री, डाक्टर मणिलाल, स्वामी भवानी दयाल संन्यासी, जे० डबल्यू० बर्टन तथा पण्डित तोताराम सनाढ्य प्रभृति के तैलचित्र रखे जायें। जब तक ऐसे पुस्तकालय कायम न हों तब तक कुछ साधन-सम्पन्न भाइयों को अपने निजी पुस्तकालय ही स्थापित कर देने चाहिए।

इस अवसर पर जबकि पं० तोतारामजी सनाढ्य की पुस्तक का चतुर्थ संस्करण छप रहा है, मैं लटौका के श्री एस० प्रसाद बैरिस्टर साहब के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। उनकी उदारतापूर्ण सहायता के बिना यह असम्भव था। आज इस पुस्तक का केवल ऐतिहासिक महत्त्व ही रह गया है। शर्तबन्दी गुलामों की प्रथा राजर्षि गोखले, महामना मालवीयजी, महात्मा गांधी, दीनबन्धु ऐण्ड्रूज, पं० तोताराम सनाढ्य आदि के निरन्तर और अनथक प्रयत्नों से १ जनवरी, १६२० को सदैव के लिए समाप्त कर दी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी। इस प्रथा को बन्द कराने में इस पुस्तक ने भी योगदान दिया था, वह कितनी अन्यायपूर्ण और अमानुषिक थी, इस सम्बन्ध में यह पुस्तक अकाट्य प्रमाण के रूप में प्रस्तुत की गयी थी। एक बात और, जो भारतीय कुली-प्रथा के अधीन फिजी तथा अन्य उपनिवेशों को गये थे, वे सच्चे अर्थों में महाप्राण थे, फिजी के सुप्रसिद्ध नेता श्री विष्णुदेव के शब्दों में वे तपस्वी थे। हमारे सौभाग्य से बन्धुवर भगवानसिंह जी इस समय फिजी में हमारे हाई कमिश्नर हैं। फिजी से उनका पैतृक सम्बन्ध है। यह भी एक आश्चर्य की बात है कि हम तीनों पं० तोताराम जी, श्री भगवानसिंह जी और मैं एक ही जिला आगरा के निवासी हैं। श्री भगवानसिंह जी सुलझे हुए दिमाग के व्यवहार-कुशल आदर्शवादी हैं। आशा है कि फिजी प्रवासी भारतीय उनकी सेवाओं से भरपूर लाभ उठायेंगे। प्रवासी भारतीय भूतपूर्व तपस्वियों की सन्तान हैं और हमें विश्वास है कि वे अपने परिश्रम, लगन तथा सूझबूझ से अपने भविष्य को उज्जवल बना सकेंगे।

२ अक्टूबर, १९७२ **बनारसीदास चतुर्वेदी**

ज्ञानपुर, जिला—वाराणसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

फिजीद्वीप में मेरे २१ वर्ष

मेरा जन्म सन् १८७६ ई० में हिरनगौ (फीरोजाबाद) में सनाढ्य कुल में हुआ था। मेरे पिता पं० रेवतीरामजी का देहान्त सन् १८८७ ई० में हो गया, और मैं, मेरी माँ व मेरे भाई रामलाल और दुर्गाप्रसाद अनाथ रह गये। पिताजी ने हम लोगों के लिए कोई चार हजार रुपये के गहने, इत्यादि की सम्पत्ति छोड़ी थी, परन्तु वह कुल एक ही वर्ष में उड़ गयी! कारण यह था कि जिन महाजनों के यहाँ गहने रखकर रुपये उधार लिये गये, उन्होंने बहुत कम मूल्य में ही गहने रख लिये। इस कारण चार हजार रुपये का गहना थोड़े ही दिनों में व्यय हो गया। वे दरिद्रता के दिन मुझे आज तक स्मरण हैं और जब मैं उन दिनों की कल्पना अपने मस्तिष्क में करता हूँ तो मेरे हृदयाकाश में एक दुख की घटा छा जाती है।

मेरा बड़ा भाई रामलाल इन दुखों से पीड़ित होकर कलकत्ता चला गया और वहाँ रेली ब्रादर्स के यहाँ आठ रुपये महीने की मुनीमगीरी की नौकरी कर ली। मेरी माता इस निर्धनता से बड़ी पीड़ित थीं। आठ रुपये महीने में मेरा भाई स्वयं अपना व्यय चलाता था और थोड़ा बहुत घर भी भेज दिया करता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। मैं हिरनगौ की एक पाठशाला में तीसरे दर्जे में पण्डित कल्याण प्रसाद के पास पढ़ता था। मेरी माता मुझ से कहा करती थीं—"बेटा! जिस तरह हो, अब तो अपने पेट-पालन का उपाय सोचो।" माता का दुख मुझसे देखा न गया, अतएव सन् १८९३ ई० में नौकरी के लिए मैं घर से निकलकर पैदल चल दिया। मेरे पास कुल सात आने पैसे थे। मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करता हुआ कोई सोलह दिन में प्रयाग पहुँचा। बस, इसी स्थान से मेरी तुच्छ जीवनी की दुखजनक रामकहानी प्रारम्भ होती है।

प्रयाग पहुँचकर मैंने भागीरथी के तट पर स्नान किये, तदनन्तर दारागंज के बच्चा नामक एक अहीर से मेरी भेंट हो गयी। उस अहीर ने मेरा सब हाल सुनकर मुझ पर दया की और मुझे अपने घर ले गया। मैं लगभग दो महीने उस अहीर के यहाँ रहा। उस अहीर ने जिस कृपा का बर्ताव मेरे साथ किया उसे मैं जन्म-पर्यन्त नहीं भूलूँगा। जब तीर्थराज में रहते-रहते मुझे बहुत दिन हो गये और कोई नौकरी नहीं मिली, तो मैंने विचार किया कि चलो अपने घर ही लौट चलें, परन्तु फिर मेरे मन में यही विचार आया कि अब घर चलकर माता के वे कष्ट मुझसे देखे न जायेंगे, उसे कुछ भी सहायता न देते हुए उसके ऊपर भार-स्वरूप होना ठीक नहीं। कभी माता का प्रेम मुझे घर की ओर खींचे लाता था और कभी माता के दुखों की स्मृति मुझे इस बात के लिए बाध्य कर रही थी कि मैं कहीं कोई नौकरी कर लूँ और घर न जाऊँ। इस प्रकार मैं दुविधा में पड़ा हुआ था।

एक दिन मैं कोतवाली के पास चौक में इसी आर्थिक चिन्ता में निमग्न था कि इतने में मेरे पास एक अपरिचित व्यक्ति आया और उसने मुझसे कहा, "क्या तुम नौकरी करना चाहते हो?" मैंने कहा 'हाँ'। तब उसने कहा 'अच्छा हम तुम्हें बहुत अच्छी नौकरी दिलवायेंगे। ऐसी नौकरी कि तुम्हारा दिल खुश हो जाय।' इस पर मैंने कहा, 'मैं नौकरी तो करूँगा लेकिन छह महीने या साल-भर से अधिक दिन के लिए नौकरी नहीं कर सकता।' उसने कहा, 'अच्छा! आओ तो सही, जब तुम्हारी इच्छा हो तब नौकरी छोड़ देना, कोई हर्ज नहीं, चलो जगन्नाथजी के दर्शन तो कर लेना।' मेरी बुद्धि परिपक्व तो थी नहीं, मैं बातों में आ गया! इसी तरह धोखे में आकर सहस्रों भारतवासी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजन्म कष्ट उठाते हैं। हे मेरे सुशिक्षित देशबन्धुओ! क्या आपने कभी इन भाइयों के विषय में कुछ विचार किया है? क्या आपके हृदय में कभी इन दुखित भाइयों के लिए कुछ कष्ट हुआ है? क्या कभी इसी सजला सफला मातृभूमि के उन पुत्रों के विषय में आपने सुना है जो डिपोवालों की दुष्टता से दूसरे देशों में भेजे जाते हैं? क्या इन लोगों के आर्त्तनाद को सुनकर आप के कान पर जूँ भी नहीं रेंगेगी?

वह आरकाटी मुझे बहकाकर अपने घर ले गया वहाँ जाकर मैंने देखा कि एक दालान में लगभग एक सौ पुरुष और दूसरे में करीब साठ स्त्रियाँ बैठी हुई हैं। कुछ लोग गीली लकड़ियों से रसोई कर रहे थे और चूल्हा फूँकते-फूँकते हैरान हो रहे थे। उस आरकाटी ने मुझे एक मूढ़े पर बैठा दिया। उन स्त्रियों को देखकर मैंने सोचा कि ये पुरुष तो नौकरी करने के लिए जा रहे हैं परन्तु बेचारी ये स्त्रियाँ कहाँ जा रही हैं। लेकिन उस समय उन स्त्रियों से बातचीत करने की उस आरकाटी ने बिलकुल मनाही कर रखी थी। वहाँ से न तो कोई बाहर आ सकता था और न कोई बाहर से भीतर जा सकता था। आरकाटी ने मुझसे कहा—"तुम यहीं चावलों का भात बना लो, मैं अभी चावल तुम्हें देता हूँ। मैंने कहा—मैं भात बनाना नहीं जानता। इसी ब्राह्मण के साथ जो रसोई बना रहा है, मैं भी खा लूंगा। आरकाटी उन लोगों को समझाता था "देखो भाई, जहाँ तुम नौकरी करोगे वहाँ तुम्हें ये दुख नहीं सहने पड़ेंगे। तुम्हें वहाँ किसी बात की तकलीफ नहीं होगी। खूब पेट-भर गन्ने और केले खाना और चैन की बंशी बजाना।"

तदनन्तर तीसरे दिन वह आरकाटी हम सब को मजिस्ट्रेट के पास ले जाने की तैयारियाँ करने लगा। कुल १६५ स्त्री-पुरुष थे। सब गाड़ियों में बन्द किये गये और कोई आध घण्टे में हम लोग कचहरी पहुँचे। उस आरकाटी ने हम लोगों से पहले ही कह रखा था कि साहब जब तुम लोगों से कोई बात पूछे तो 'हाँ' कहना, अगर तुमने नाहीं कर दी तो बस तुम पर नालिश कर दी जायगी और तुम्हें जेल काटनी पड़ेगी। सब लोग एक-एक करके मजिस्ट्रेट के सामने लाये गये। वह प्रत्येक से पूछता था, "कहो तुम फिजी जाने को राजी हो?" मजिस्ट्रेट यह नहीं बताता था कि फिजी कहाँ है, वहाँ क्या काम करना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ेगा तथा काम न करने पर क्या दण्ड दिया जायगा। उस मजिस्ट्रेट ने १६५ आदमियों की रजिस्ट्री कोई २० मिनट में कर दी। इस बात से पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि मजिस्ट्रेट साहब भी किसी तरह अपना पिण्ड छुड़ाना चाहते थे, नहीं तो यह काम इतनी जल्दी कैसे हो सकता है!

यहाँ से चलकर हम सब रेल में लादे गये। न तो गाड़ी में बैठे हुए मनुष्यों से और न बाहर के आदमियों से बातचीत करने पाते थे, यदि कोई आपस में बातचीत करते तो उठा दिये जाते थे। हाँ, यह कहना भूल गया कि वह ट्रेन स्पेशल थी और सीधी हावड़ा पहुँची, बीच में कहीं नहीं रुकी। हावड़ा स्टेशन से सब लोग बन्द गाड़ी में बिठाये जाकर डिपो में पहुँचाये गये। यहाँ इमीग्रेशन अफसर ने हम सब को एक पंक्ति में खड़ा किया और कहा, "तुम फिजी जाते हो, वहाँ तुम्हें १२ आना रोज मिलेंगे और ५ वर्ष तक खेती का काम करना होगा। अगर तुम वहाँ से पाँच वर्ष बाद लौटोगे तो अपने पास से किराया देना होगा और अगर १० वर्ष बाद लौटोगे तो सरकार अपने पास से भाड़ा देगी। तुम लोग वहाँ से बहुत रुपये ला सकते हो। केवल बारह आना ही नहीं, बल्कि और भी ऊपर कमा सकते हो। वहाँ बड़े आनन्द से रहोगे। फिजी क्या है स्वर्ग है!" इस प्रकार उसने बहुत कुछ चिकनी-चुपड़ी बातें कहीं। हम अशिक्षित लोग कुछ तो पहले ही से बहकाये हुए थे और रहे-सहे उस अफसर ने बहका दिये। इमीग्रेशन अफसर ने भी यह पूछा, "तुम्हारा किसी के पास धन तो नहीं है?" उस आरकाटी ने जो साहब के पीछे खड़ा हुआ था हम लोगों से हाथ से इशारा कर दिया कि कुछ मत कहो, हम तुम्हारी चीजें अभी दे देंगे। लेकिन साहब के जाते ही वह आरकाटी भी चला गया। फिर कौन देता है और कौन लेता है! कितने ही आदमियों के बर्तन, वस्त्र, रुपये-पैसे इत्यादि उस आरकाटी के पास रह गये!

जब वह अफसर हम लोगों को समझा रहा था तो मेरे दिल में एक शंका उत्पन्न हुई। मैंने सोचा, पाँच वर्ष बहुत होते हैं, न जाने फिजी जाकर कैसा कठिन काम करना पड़ेगा और काम न कर सका तो फिर कैसी मार पड़ेगी। यही विचारकर मैंने कहा, "मैं फिजी नहीं जाना चाहता, मैंने खेती का काम कभी नहीं किया, मेरे हाथ देखिए ये खेती कभी नहीं कर सकते, मैं फिजी न जाऊँगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुनकर उस अफसर ने मुझे दो बंगाली बाबुओं के हवाले किया और उनसे कहा, 'इसे समझाकर ठीक करो।' मैंने उनसे भी इन्कार किया और कहा "मेरा भाई कलकत्ते में यहीं किसी मुहल्ले में है, मुझे उससे मिल लेने दो, फिर जैसा होगा देखा जायेगा।" पर कौन सुनता है ! मेरे साथ-साथ दरबान रहता था। जब मैं समझाये जाने पर किसी तरह राजी न हुआ, तो एक कोठरी में बन्द कर दिया गया। एक दिन एक रात मैं भूखा-प्यासा उसी कोठरी में रहा। अन्त में लाचार होकर मुझे कहना पड़ा कि मैं फिजी जाने को राजी हूँ। क्या करता ! वहाँ कोई अपना आदमी तो था नहीं जिसे यह दुख-वृत्तान्त सुनाता।

जब मैं कोठरी से बाहर लाया गया तो मैंने देखा कि जबरदस्ती चमार, कोली, ब्राह्मण इत्यादि सबको एक ही जगह बैठाकर भोजन कराया जाता है। लगभग सबको मिट्टी के जूठे बर्तनों में भोजन कराया गया और पानी पिलाया गया। जहाँ कोई कुछ बोला, बस फिर क्या है खूब पीटा गया। मैंने यह व्यवस्था देखकर कहा, "मैं इनके साथ भोजन नहीं करूँगा चाहे भूखों मर जाऊँ।" उस अफसर ने कहा "मर जाओ कोई डर नहीं, तुम्हें नदी में फेंक देंगे।" अन्त में मुझे आज्ञा दी गयी कि तुम भण्डारी के साथ भोजन कर लिया करो। कपड़े जो हम लोगों के पास अच्छे-अच्छे थे धोने के बहाने सब ले लिये गये और एक भंगी स्नान कराने के लिए हम सब को घाट पर ले गया। हम सब को साबुन दिया गया। बेचारे बहुत-से भोले-भाले लोगों ने यह समझा कि हम लोग दूर से आये हैं, हमें जल-पान के लिए बर्फी मिली है ! कुछ लोगों ने तो उसे कलाकन्द जानकर खा भी लिया और फिर हरे राम हरे राम, थू थू थू करने लगे। देखिए किस तरह के सीधे-सादे लोगों को आरकाटी बहकाकर ले जाते हैं। ये विचारे साबुन को भी बर्फी समझते हैं ! क्या हमारे धर्मोपदेशकों ने जो कि धर्म की धुरी बने हुए हैं और शहरों में ही प्लेटफार्म को व्याख्यान देते-देते घिसा करते हैं, कभी उन ग्रामीण बुद्धि के रंकों के ऊपर भी दया की है ? क्या कभी ग्रामों में आकर किसी ने इनके उद्धार के विषय में भी व्याख्यान देना कर्तव्य समझा है ? शहरों में तो नित्य नये

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपदेशक बने रहते हैं पर बेचारे ग्रामीणों को ऐसे उपदेश दुर्लभ हैं, इसी से यह साबुन को बर्फी समझ बैठे।

डाक्टरी परीक्षा—जब जहाज पर चढ़ने के दो या तीन दिन शेष रहे, तब हम सब की डाक्टरी परीक्षा हुई। पुरुषों और स्त्रियों तक की परीक्षा पुरुष डाक्टरों ने ही ली। तत्पश्चात पहनने के लिए कैदियों के से कुर्ते, टोपी और पाजामा दिये गये। पानी के लिए टीन का लोटा, भोजन रखने के लिए टीन की थाली और सामान रखने के लिए एक छोटा-सा थैला दिया गया।

जहाज का वृत्तान्त—फिर हम लोगों के नाम पुकारे गये और हम सब जहाज पर चढ़ाये गये। उस समय पाँच सौ भारतवासी अपनी मातृभूमि को छोड़ कैदियों और गुलामों की तरह फिजी को जा रहे थे। यह किसे ज्ञात था कि वहाँ पहुँचकर हमें असंख्य कष्ट सहने पड़ेंगे ! कितने ही आदमी अपनी माता, पिता, भाई, बहन इत्यादि के प्रेम में अश्रुओं की धारा बहा रहे थे। उन दुखों की कथा सुनने वाला वहाँ कोई नहीं था। जो लोग खसखस की टट्टियों में रहते हैं और जिन्होंने कि 'Eat drink and be merry' खाओ और मौज उड़ाओ, यही अपने जीवन का उद्देश्य समझ रखा है, वे उन बेचारे पाँच सौ भारतवासियों के हाल को क्या जान सकते हैं ! उनकी दुर्दशा पर तो वे ही ध्यान दे सकते हैं जिन्होंने कि 'परोपकाराय सतां हि जीवनम्' यही अपना आदर्श मन्त्र बना लिया हो।

हम लोगों में से प्रत्येक को डेढ़ फुट चौड़ी और छह फुट लम्बी जगह दी गयी। इतनी जगह एक मनुष्य के लिए कहाँ तक पर्याप्त हो सकती है, यह आप स्वयं विचार सकते हैं। कई लोगों ने शिकायत की कि इतने स्थान में हम नहीं रह सकते, तो गोरे डाक्टर ने ललकारकर कहा "साला टुम को रहना होगा"। जब हम लोग बैठ चुके तो हर एक को चार-चार बिस्कुट और आधी-आधी छटाँक चीनी दी गयी। इन बिस्कुटों को गोरे लोग डाग बिस्कुट कहते हैं और ये कुत्तों को खिलाये जाते हैं। हा परमात्मन् ! हम भारतवासी क्या कुत्तों के समान हैं ? बिस्कुटों के विषय में क्या पूछना है ! इतने ज्यादा नरम थे कि घूंसों से टूटे और पानी में भिगोकर खाये गये। लगभग चार बजे जहाज छोड़ दिया गया। अब अपनी मातृभूमि के लिए हमारा अन्तिम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमस्कार था। ६ बजे सूर्य भगवान अस्त हुए। रात को ८ बजे हम लोग सो गये। प्रातःकाल पहरेवाले ने हम लोगों को उठा दिया। देखते क्या हैं कि समुद्र में हिलोरें लेता हुआ हमारा जलयान चला जा रहा है। चारों ओर नीले आकाश के अतिरिक्त कुछ नहीं दीख पड़ता था। उस समय हम लोगों के हृदय में अनेक भाव उत्पन्न हो रहे थे। जिस प्रकार कि कोई स्वतन्त्र पक्षी पिंजरे में बन्द कर दिया जाता है, उसी प्रकार हम लोग बन्द कर दिये गये थे।

सवेरा होते ही उस जहाज के एक अफसर ने हम लोगों में से कुछ को रसोई बनाने के लिए और कुछ को पहरा देने के लिए चुना, और कुछ लोगों को 'टोपस' का काम करने के लिए नियुक्त किया। लोगों से कहा गया कि टोपस का काम कौन-कौन करेगा। हमारे भोले-भाले भाई नहीं जानते थे कि 'टोपस' क्या बला है! अतएव कितने ही लोगों ने 'टोपस' का काम करने वालों की सूची में अपना नाम लिखा लिया। जब जहाज के अफसर ने टोपस वालों से कहा "तुम लोग अपना काम करो" टोपस वालों ने कहा "क्या काम करें?" तब आज्ञा दी गयी कि तुम लोग टट्टियों को साफ करो। कितने ही लोगों ने आपत्ति की! लेकिन वे पीटे गये और जबरदस्ती उनसे मैला उठवाया गया! सारे जहाज में त्राहि-त्राहि का शब्द गूँजने लगा। क्या हमारा शिक्षित जनसमुदाय इन दुखी भाइयों की पुकार पर ध्यान देगा? हमारे भाई जबरन जहाज पर मैला उठायें और हम चुपचाप बैठे रहें, क्या हमारे लिये यह लज्जा की बात नहीं है?

पीने के लिए दिन में दो बार एक-एक बोतल पानी मिलता है। फिर नहीं मिलता चाहे प्यासे मरो। खाने के विषय में भी यही बात है। वहीं मछली पकती थी और वहीं भात बनता था। Sea-sickness (समुद्री बीमारी) से भी बहुत-से आदमी पीड़ित हो गये। कई तो बेचारे कै करके इस संसार से सदा के लिए विदा हो गये। वे लोग समुद्र में फेंक दिये गये!

इस प्रकार तीन महीने बारह दिन में हमारा जहाज सिंगापुर, बोर्नियो इत्यादि के किनारे होता हुआ फिजी पहुँचा। यहाँ कुछ फिजी के विषय में लिखा जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिजीद्वीप

फिजी द्वीपसमूह दक्षिण प्रशान्त महासागर में स्थित है। उसके पश्चिम में न्यूहैब्रीडीज है। भूमध्यरेखा के दक्षिण में देशान्तर के १५ अंक से लेकर २२ अंक तक और पूर्व और पश्चिम में अक्षांश की १७५ डिग्री से लेकर १७७ डिग्री तक फैला हुआ है। इसमें सब मिलाकर २५४ द्वीप हैं। इनमें से लगभग ८० टापुओं में आदमी रहते हैं। फिजी द्वीपसमूह का क्षेत्र-फल ७४३५ वर्गमील है। सन् १९११ की जनगणना के अनुसार फिजी जन-संख्या १,३९,५४१ है। इन द्वीपों में दो द्वीप सबसे बड़े हैं, एक तो वीती लेवू (Viti Levu) और दूसरा वनुआ लेवू (Vanua Levu)। इनके अतिरिक्त कन्दावू और तवयूनी नामक टापू भी बड़े-बड़े हैं। इनकी भूमि बड़ी उपजाऊ है और विशेषतः पूर्व की ओर यह द्वीप बहुत-कुछ हरा-भरा दीख पड़ता है। यहाँ पर कितने ही पहाड़ हैं, जिनकी चोटी हजारों फुट ऊँची हैं। समुद्र के किनारे-किनारे नारियल के बहुत पेड़ होते हैं। यहाँ रतालू, शकरकन्द और नारंगी बहुत पायी जाती हैं। यहाँ पर पहले बहुत कम जानवर थे। फिर पीछे से बहुत-से जानवर भेजे गये। गाय, बैल, घोड़ा, बकरी, जंगली सुअर इत्यादि थोड़े बहुत पाये जाते हैं। कबूतर, तोता, बतख इत्यादि चिड़ियाँ भी जो गरम मुल्कों में प्रायः हुआ करती हैं, देखने में आती हैं। सन् १८६६ ई० में यहाँ पर न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया से बहुत-से यूरोपियन आ-आ कर बसने लगे। सन् १८७४ ई० में यह द्वीपसमूह ब्रिटिश सरकार के हाथ में आ गया और ब्रिटिश राज्य का उपनिवेश कहा जाने लगा। फिजी की राजधानी सूवा है जो कि वीती लेवू के दक्षिण किनारे पर स्थित है। फिजी के विषय में विस्तारपूर्वक आगे चलकर लिखेंगे।

भिन्न-भिन्न स्टेटों में बाँट दिये गये

फिजी में नुकलाओ नामक एक टापू है। यहाँ पर भी एक डिपो है। हम लोग, जो कि कुली के नाम से पुकारे जाते हैं, यहीं उतारे जाते हैं। ज्योंही हमारा जहाज वहाँ पहुँचा त्योंही पुलिस ने आकर उसे घेर लिया, जिससे कि हम वहाँ से भाग न जायँ। हम लोगों के साथ वहाँ गुलामों से भी बुरा बर्ताव किया गया। लोग कहा करते हैं कि दासत्व-प्रथा संसार के सब सभ्य देशों से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठ गयी है। यह बात ऊपर से तो ठीक मालूम होती है परन्तु वास्तव में नितान्त भ्रममूलक है। क्या आप इस कुली-प्रथा को दासत्व-प्रथा से कम समझते हैं ? इसी न्यायशील ब्रिटिश सरकार के राज्य में यह प्रथा जारी रहे यह कितने खेद की बात है ! क्या अब बर्क, ब्राडला जैसे निष्पक्ष अंग्रेज इंगलैण्ड में नहीं रहे ?

थोड़ी देर के बाद डाक्टर आया और उसने हम सबकी परीक्षा की। सब लोगों के कपड़े हौज में एक साथ डालकर गरम किये गये। कोठीवालों को पहले से ही एजेण्ट जनरल ने आज्ञा दे दी थी कि आकर अपने-अपने कुली नुकलाओ डिपो से ले जाओ। कोठीवालों ने प्रत्येक मनुष्य का व्यय दो सौ दस रुपये इमीग्रेशन विभाग में पहले से जमा कर दिया था। एजेण्ट जनरल की आज्ञानुसार वे लोग नुकलाओ डिपो में पहुँचे। वहाँ पर छोटे कुली एजेण्ट ने हम सब को भिन्न-भिन्न स्टेटों में जाने के लिए विभक्त कर दिया। फिर उस एजेण्ट ने हम सबको बुलाया और प्रत्येक से कहा, "तुम आज से पाँच वर्ष तक के लिए अमुक साहब के नौकर हुए" मैंने कहा 'मैं नौकरी नहीं करता ! मैं बिका नहीं हूँ। मेरे बाप या भाई ने किसी से कुछ लेकर मुझे बेच नहीं दिया है। मैंने भी किसी से कुछ नहीं लिया !" जब मैंने तीन-पाँच की तो दो गोरे सिपाहियों ने धक्के देकर मुझे नाव पर चढ़ा दिया। इस प्रकार सब लोग भिन्न-भिन्न स्टेटों में बाँट दिये गये।

स्टेट का हाल—स्टेट में रहने के लिए कोठरियाँ मिलती हैं। प्रत्येक कोठरी १२ फुट लम्बी ८ फुट चौड़ी होती है। यदि किसी पुरुष के साथ उसकी विवाहिता स्त्री हो तो उसे यह कोठरी दी जाती है और नहीं तो तीन पुरुषों या तीन स्त्रियों को यह कोठरी रहने को मिलती है। दिखाने के लिए तो यह नियम बनाया गया है "Employers of Indian labourers must provide at their own expense suitable dwellings for immigrants. The style and dimension of these buildings are fixed by regulations." यानी 'जो लोग भारतवासी मजदूरों को नौकर रखेंगे, उन्हें अपने खर्च से उन मजदूरों को रहने के लिए अच्छे निवास-स्थान देने होंगे। इन मकानों की बनावट, लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई इत्यादि नियमों से स्थिर की जायेगी।'

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठको, यही तीन आदमियों के रहने, उठने, बैठने, सोने, खाना बनाने इत्यादि के लिए १२ फुट लम्बी ८ फुट चौड़ी कोठरी उचित निवास-स्थान है। परमात्मा ऐसे अच्छे मकान में किसी को न रखे! जिन तीन आदमियों को यह कोठरी मिलती है उनमें चाहे कोई हिन्दू हो या मुसलमान, अथवा चमार-कोली, कोई ही क्यों न हो। यदि कोई ब्राह्मण देवता किसी चमार-कोली इत्यादि के संग आ पड़े तो फिर उनके कष्टों का क्या पूछना है! और प्रायः ऐसा हुआ करता है कि ब्राह्मण लोगों को चमारों के साथ रहना पड़ता है।

पहले छह महीने के कष्ट—पहले छह महीने तक स्टेट से रसद मिलती है और इसके लिए २ शिलिंग ४ पेंस प्रति सप्ताह के हिसाब से काट लिये जाते हैं। प्रतिदिन १० छटाँक आटा, २ छटाँक अरहर की दाल और आधी छटाँक घी के हिसाब से सप्ताह भर की रसद एक दिन मिल जाती है। हम लोगों के वास्ते जो कि भारी-भारी फावड़े लेकर दस घण्टे रोज कठिन परिश्रम करते थे, भला ढाई पाव आटा एक दिन के लिए कैसे पर्याप्त हो सकता है। हम लोग ४ या ४½ दिन में सप्ताह भर की रसद खाकर बाकी दिन एकादशी व्रत रहते थे, अथवा कहीं किसी पुराने भारतवासी से उधार आटा-दाल मिल गया तो उसी से अपना पेट भर लेते थे।

काबुली पठानों पर अत्याचार

एक बार एक आरकाटी ने ६० काबुली पठानों को बहकाकर फिजी में भेज दिया। इन लोगों से डिपो वालों ने कहा था कि तुम्हें पलटन में बड़ी-बड़ी नौकरियाँ मिलेंगी। ये लोग खूब मोटे-ताजे थे और पलटन में नौकरी पाने की इच्छा से ही फिजी जाने को राजी हुए थे। पर जब वे फिजी पहुँचे तो उन्हें वहाँ कुली का काम करना पड़ा। रसद भी उन्हें उतनी ही दी गयी जितनी कि औरों को मिलती है, यानी ढाई पाव आटा और आध पाव दाल के हिसाब से सात दिन का सामान उन्हें एक दिन दे दिया गया। वे लोग एक सप्ताह की रसद को साढ़े चार दिन में ही खाकर बैठ गये। फिर जब उनसे काम करने को कहा गया तो वे बोले "खाना लाओ, तो काम करें।" इस पर पुलिस को खबर दी गयी। फिर क्या था कान्स्टेबिल और इन्स्पेक्टर आ धमके। स्टेट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के गोरे ने कहा "देखिए साहब ये ६० बदमाश कुली हमें मार डालने और लूट लेने की धमकी देते थे। तब काबुलियों ने कहा "हम लोग सिर्फ खाना माँगते हैं, बिना खाये काम न करेंगे, और हमने कुछ नहीं कहा।" पुलिस लौट गयी, काबुली काम पर न गये। फिर उस गोरे कोठीवाले ने काबुलियों से काम पर जाने के लिए कहा। काबुलियों ने फिर भी वही जवाब दिया। गोरा फिर पुलिस को बुला लाया। अबकी बार पुलिस ने उन निहत्थे काबुलियों पर गोली चलाकर धमकाया। काबुलियों ने कहा हम तो वैसे ही भूखों मरे जाते हैं, और आप हम पर गोली चलाते हैं, इस पर पुलिस फिर लौट गयी। घायल काबुली अस्पताल भेजे गये।

तदनन्तर उन काबुलियों से कहा गया कि चलो नुकलाओ डिपो में तुम लोगों के खाने-पीने, रहने और नौकरी का ठीक प्रबन्ध कर दिया जायेगा। इस बात पर वे सहमत हो गये और सबके सब नुकलाओ डिपो में लाये गये। उन्हें खाना बनाने के लिए चावल इत्यादि दे दिये गये और वे अपना भोजन तैयार करने लगे। इधर इमीग्रेशन विभाग के गोरे अफसरों ने ५०० फिजी के आदिम निवासी जंगल में छिपा दिये थे। ज्योंही काबुली लोग मुँह में कौर देना चाहते थे, त्योंही एक सीटी बजायी गयी। देखते-देखते ५०० आदि-वासी उन निःशस्त्र काबुलियों पर आ टूटे और उन्हें पकड़-पकड़कर समुद्र के किनारे ले गये। काबुली लोग जबरदस्ती डोंगियों पर बैठा दिये गये और भिन्न-भिन्न कोठियों में विभक्त कर दिये गये।

यह थी इमीग्रेशन विभाग की न्यायप्रियता और बहादुरी। इस पर कितने ही निष्पक्ष समाचार-पत्रों ने खूब खरी-खरी सुनायी थीं; पर कौन ध्यान देता है।

कठिन परिश्रम

सब लोग नित्य प्रति प्रातःकाल चार बजे उठाये जाते हैं और सबको रोटी तैयार करके पाँच बजे खेत पर पहुँचना होता है। जो स्त्रियाँ बच्चे वाली होती हैं वे अपने बच्चों को खेत पर ले जाती हैं। लगभग प्रत्येक मनुष्य को १२०० फुट से लेकर १३०० फुट लम्बी और ६ फुट चौड़ी गन्ने की लैन कुदाली से दिन-भर को नराने के लिए दी जाती है। इसको Full task पूरा काम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हैं। डाक्टर प्रायः लिख दिया करते हैं कि इन लोगों को 'पूरा काम' दिया जाय। जो डाक्टर साहब ३० या ४० जरीब चलने से ही हाँफ जाते हैं और रूमाल से मुँह पोंछने लगते हैं, वे ही बेचारे भूखे लोगों से कठिन परिश्रम करवाते हैं। पर उन लोगों से इतना काम नहीं होता। फिर क्या है, चट ही दूसरे दिन सम्मन आ जाता है और मजिस्ट्रेट के सामने कचहरी में मामला पेश हो जाता है। मजिस्ट्रेट पूछता है 'फलां तारीख को तुमने पूरा काम क्यों नहीं किया ?' वह कहता है 'काम इतना अधिक था कि नहीं हो सका।' मजिस्ट्रेट यह बात सुनकर कहता है "हमारा सवाल यह नहीं है कि शक्ति से बाहर काम था। हमारा सवाल तो यह है कि फलां तारीख को काम पूरा किया या नहीं।' 'हाँ या नहीं' जो सवाल हम पूछें उसी का जवाब दो। अधिक मत बको।" बेचारे मजदूर को लाचार होकर कहना पड़ता है "हाँ सरकार काम पूरा न हो सका।" बस फिर क्या है, दफा कायम हो जाती है। मजिस्ट्रेट १० शिलिंग से लेकर १ पौण्ड तक जुर्माना ठोंक देता है! इस प्रकार बेचारों का १५ या २० दिन का वेतन जुर्माने में ही चला जाता है! मासिक वेतन एक पौण्ड दो शिलिंग पूरा काम करने पर मिलता है। लेकिन पूरा काम प्रति सैकड़ा पाँच आदमी से अधिक नहीं कर सकते, और ये आदमी भी पाँच या छह महीने से अधिक लगातार पूरा काम नहीं कर सकते। मेरे २१ वर्ष के अनुभव में ४०००० भारतवासियों में मुझे एक भी ऐसा नहीं मिला जिसने लगातार पाँच वर्ष तक पूरा काम किया हो। साधारण मनुष्य १० शिलिंग यानी साढ़े सात रुपये मासिक से अधिक नहीं कमा सकते। इस पर भी फिजी में खाद्य-पदार्थ भारतवर्ष से दूने तेज हैं और क्या कहें, सैकड़ों भूखों मरते हैं! कितने ही लोगों को इतना कठिन परिश्रम करने पर भी आधे पेट ही रहना पड़ता है।

ओवरसियरों के अत्याचार—ओवरसियर हम लोगों पर मनमाने अत्याचार करते हैं। कितने ही हमारे भाई वहाँ पर कठिन परिश्रम के डर से और ओवरसियरों की मार और जेलखाने के भय से फाँसी लगाकर मर गये हैं। बहुत दिन नहीं हुए जबकि कई मद्रासी नबुआ की कोठी में इसी कारण फाँसी लगाकर मर गये थे। इन लोगों की मृत्यु का कारण वहाँ की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु-विवरणी से ज्ञात हो सकता है। प्रत्येक जिले में हम लोगों के दुख-सुख की जाँच करने के लिए यद्यपि इमीग्रेशन-विभाग की ओर से कुली-इन्सपेक्टर नियत हैं, पर ये गोरे इन्सपेक्टर लोग हमारी वास्तविक स्थिति को कभी प्रकट नहीं करते। कोठीवालों के यहाँ ब्राण्डी उड़ाने वाले ये महाशय भला हम दीन-हीन भारतवासियों के दुख निवारणार्थ कब प्रयत्न कर सकते हैं ?

जब ओवरसियर लोग किसी से नाराज होते हैं, तो उस पर दलेल बोल देते हैं। दलेल वाले को सब आदमियों से अलग बहुत कड़ा काम करना पड़ता है। वहाँ अकेले में जाकर ये ओवरसियर लोग उसे खूब पीटते हैं। पहले तो बेचारे नालिश ही नहीं करते, क्योंकि उन्हें डर लगा रहता है कि इन्हीं साहब के आधिपत्य में हमें पाँच वर्ष तक काम करना पड़ेगा और यदि कोई करता भी है, तो गवाह न मिलने के कारण मुकदमा खारिज हो जाता है। ऐसे कितने ही दृष्टान्त हमारे देखने में आये हैं जिनमें ओवरसियरों के डर के मारे भाई इत्यादि निकट-सम्बन्धी भी गवाही नहीं दे सके हैं। इसी दलेल के बहाने ओवरसियर लोग हमारी कितनी ही देश-बहनों पर अत्याचार करते हैं। उदाहरणार्थ, कुन्ती नामक चमारिन का वृत्तान्त यहाँ लिखना अनुचित न होगा।

कुन्ती पर अत्याचार—आरकाटियों ने कुन्ती और उसके पति को लखुआपुर जिला गोरखपुर से बहकाकर फिजी को भेज दिया था। इन लोगों को वहाँ पर बड़े-बड़े कष्ट सहने पड़े। इस समय कुन्ती की अवस्था २० वर्ष की थी। बड़ी कठिनाई से कुन्ती ४ वर्ष तक अपने सतीत्व की रक्षा कर सकी। तदनन्तर सरदार और ओवरसियर उसके सतीत्व को नष्ट करने के लिए सिरतोड़ कोशिश करने लगे। १० अप्रैल, १९१२ को ओवरसियर ने कुन्ती को साबू केरे नामक केले के खेत में, सब स्त्रियों और पुरुषों से पृथक घास काटने का काम दिया, जहाँ कोई गवाह न मिल सके और चिल्लाने पर भी कोई न सुन सके। वहाँ उसके साथ पाशविक अत्याचार करने के लिए सरदार और ओवरसियर पहुँचे। सरदार ने ओवरसियर के धमकाने पर कुन्ती का हाथ पकड़ना चाहा। कुन्ती हाथ छुड़ाकर भागी और पास की नदी में कूद पड़ी लेकिन दैव-संयोग से जयदेव नामक एक लड़के की डोंगी पास में ही थी। कुन्ती

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डूबते-डूबते बची। जयदेव ने उसे डोंगी पर चढ़ाकर पार किया। जब कुन्ती ने यह बात अपने कोठी वाले गोरे स्वामी से कही तो उसने जवाब दिया "चला जाओ खेत का बात हम सुनना नहीं माँगता।" तत्पश्चात १३ अप्रैल तक कुन्ती काम पर न गयी। १४ अप्रैल को २० जरीब घास उसे खोदने को दी गयी और उसके पति को एक मील की दूरी पर काम दिया गया। कुन्ती का पति भी इतना पीटा गया कि बेचारा अधमरा हो गया! कुन्ती ने यह समाचार किसी से लिखवाकर 'भारतमित्र' में छपवा दिया, भारत-सरकार की उस पर दृष्टि पड़ी और कुन्ती के मामले की जाँच फिजी में करायी गयी। इमीग्रेशन अफसर वहाँ पहुँचा और उसने कुन्ती को बहुत धमकाया। पर कुन्ती ने यही कहा कि जो कुछ मैंने 'भारतमित्र' में छपवाया था, बिलकुल ठीक था। यहाँ पर कुन्ती के धैर्य और साहस की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। नदी में कूदकर उसने अपने सतीत्व की रक्षा की और पराधीन होने पर भी उसने इमीग्रेशन अफसर को फटकार बतायी।

क्या कुन्ती के इस दृष्टान्त को सुनकर भी हमारे भाई इस कुली-प्रथा को रोकने का प्रयत्न नहीं करेंगे?

नारायणी—इस नाम की एक स्त्री नादी जिला की नावो नामक कोठी में काम करती थी। इसके एक बच्चा पैदा हुआ जो कि मर गया। बच्चा पैदा होने के दो-तीन दिन बाद ही ओवरसियर ने यह चाहा कि वह काम पर चले, यद्यपि सरकारी नियम के अनुसार बच्चा पैदा होने पर तीन महीने तक कोई स्त्री काम पर नहीं जा सकती। पर गोरा ओवरसियर भला ऐसे नियमों को क्यों मानने लगा! नारायणी ने कहा "मेरा बच्चा मर गया है। मैं काम पर न जाऊँगी।" इस पर उम ओवरसियर ने उसे इतना पीटा कि वह एकदम बेहोश होकर गिर पड़ी। पुलिस के गोरे सब-इन्सपेक्टर ने आकर जाँच की और उस स्त्री को अस्पताल पहुँचाया। ओवरसियर गिरफ्तार किया गया। सूवा नगर की बड़ी अदालत Supreme court तक यह अभियोग पहुँचा। जब सूवा में स्टीमर से यह स्त्री उतारी गयी तो उसमें इतनी भी शक्ति नहीं थी कि एक फर्लांग भी पैदल चल सके। इसीलिए कचहरी तक खाट पर रखकर लायी गयी थी। अभियोग के अन्त में वह गोरा ओवरसियर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरपराध (not guilty) होकर छूट गया ! उस बेचारी स्त्री पर इतनी मार पड़ी थी कि उसका मस्तिष्क खराब हो गया था, वह अभी तक पागल सी रहती है। न्याय का यह एक ज्वलन्त दृष्टान्त है ! श्वेत रंग की महिमा अपार है ! इस प्रकार के कितने ही अत्याचार वहाँ नित्य प्रति हुआ करते हैं। ये ओवरसियर लोग जूतों की ठोकरों से भारतवासियों को पीटना खूब जानते हैं, और घूसों की मार से जड़ से दाँत तोड़ना भी खूब जानते हैं। ये लोग कपड़े जला देते हैं, लात मारकर खाना फेंक देते हैं, और हम लोगों को मनमाने कष्ट देते हैं। ये सब भीतरी दुख हैं। बिना गवाह के कचहरी में जाना वृथा हो जाता है। सन् १६१२ ई० में एक बार मैं जिला नादी की कचहरी में बैठा था, वहाँ पर मैंने एक मामला मजिस्ट्रेट के इजलास पर होते देखा। एक मद्रासी ने नवकाई के कम्पनी अस्पताल के श्वेतांग डाक्टर (सुपरिण्टेण्डेण्ट) पर नालिस की थी। उसका बयान इस तरह हुआ—"मैं हाथ के दर्द से व्याकुल होकर कोठी में काम न कर सकने पर अस्पताल में भरती हो गया। दिन-रात हाथ के दर्द से व्याकुल रहता हूँ। अस्पताल के सरदार ने मुझको दो डोल देकर कुएँ से टंकी में पानी भरने को कहा। मैंने जवाब दिया "मैं हाथों के दर्द से लाचार हूँ, पानी नहीं भर सकता। अगर काम करने लायक होता तो कोठी में ही रहता। अस्पताल में क्यों आता ? यह सुनकर सरदार ने मुझे निर्दयता से पीटा, मैं चिल्लाया, पीछे डाक्टर साहब ने मेरे पास आकर पूछा क्या बात है ?" सरदार ने कहा "यह आदमी हुक्म नहीं सुनता, पानी नहीं भरता।" डाक्टर से मैंने कहा मेरा हाथ दुखता है इस बात को आप जानते हैं। हाथ के दर्द से मैं खाली डोल नहीं उठा सकता, पानी से भरा किस तरह उठेगा ? उस नरपिशाच डाक्टर ने भी मुझे ठोकर और घूंसों से मारा। घूंसे की चोट से मेरे दांत जख्मी हो गये, नाक से लहू बहकर मेरी कमीज तर हो गयी। मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। बेहोशी की दशा में मुझे उठाकर टट्टी की कोठरी में बन्द करके बाहर से ताला लगा दिया गया। यह घटना शाम चार बजे की है, जब मुझे होश आया तब मैंने अपने आपको टट्टी की कोठरी में बन्द पाया। मैंने जहाँ पर मैले का बर्तन रहता है, उस द्वार से एक तख्ता लकड़ी का उखाड़ा। उसी रास्ते से कोठरी से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकल भागा। भागकर हुजूर के पास आया। हुजूर ने जिला डाक्टर के पास भेजा। वहाँ से यहाँ बुलाया गया हूँ। मेरी इस घटना के समय बहुत आदमी देखते थे। डाक्टर के डर से मेरी गवाही कोई न देगा। मेरे गवाह जो यहाँ आये हैं उनको भी डाक्टर ने धमका दिया है।"

मजिस्ट्रेट ने बयान सुनकर गवाह बुलाये। पर वे मद्रासी के पक्ष से विरुद्ध निकले। डाक्टर साहब के वकील ने बड़ी बहस की। लाचार पक्ष पुष्ट न होने से मद्रासी की हार हुई। डाक्टर साहब जीत गये। फैसले में डाक्टर साहब निर्दोष ठहरे। डाक्टर साहब ने मजिस्ट्रेट साहब से अपने खर्चे की प्रार्थना की। दयालु मजिस्ट्रेट बोले कि जब यह आदमी मेरे पास आया था तो चोट से इसका मुँह फुटबाल के समान फूल गया था। तिस पर आप खर्च लौटाना चाहते हैं! खर्च नहीं मिलेगा। बस डाक्टर चले गये।

मद्रासी को उसका मालिक ओवरसियर पकड़कर काम पर ले गया। उस मद्रासी का नाम रामदास था।

काले रंग से घृणा

स्टीमरों पर काले रंग के कारण हम लोगों को अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं। प्रथम तो यह कि बैठने के लिए हम लोगों को बहुत ही बुरा स्थान मिलता है। यूरोपियन लोगों की कोठरी की ओर तो जाने के लिए भी आज्ञा नहीं है। चाहे हम लोग पूरा किराया देने के लिए उद्यत हों पर हमें तो भी अच्छी जगह बैठने के लिए नहीं मिलती। एक बार मैं एण्डी केपा नामक स्टीमर पर चढ़कर सूवा से लतौका को गया। मुझे वहाँ बिठाया गया जहाँ कि सुअर इत्यादि जानवर भी बिठाये जाते हैं। कई कारणों से मुझे ज्वर आ गया था। रात्रि को पानी बरसने लगा और मेरे पास केवल एक कम्बल ही था। मेरे कपड़े सब भीग गये थे और जाड़े के मारे मैं थरथरा रहा था। मैंने बहुत प्रार्थना की कि मुझे एक अच्छी कोठरी मिल जाय, मैं पूरा-पूरा भाड़ा उसका दे दूंगा, पर कुछ सुनायी न हुई। लाचार हो मुझे वहीं पड़ा रहना और भीगना पड़ा। यह बर्ताव मेरे जैसे अशिक्षित व अल्प-शिक्षित भारतवासियों के साथ ही नहीं किया जाता, बल्कि बड़े-बड़े सुशिक्षित भारतवासियों के साथ भी किया जाता है। कितने ही बन्दरगाहों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर तीसरे दर्जे तक के गोरे योंही निकाल दिये जाते हैं और दूसरे दर्जे वाले भारतवासियों के मोजे, पाजामे इत्यादि सब कपड़े उतारे जाते हैं और निःसंक्रमक (disinfect) किये जाते हैं।

फिजी में सी० एस० आर० नामक एक बड़ी कम्पनी है जो खाँड़ का व्यापार करती है। वह हम लोगों के गन्ने मोल लेती है। जिस मनुष्य का गन्ना वहाँ जाता है उसे एक रसीद दी जाती है। सप्ताह में एक दिन इस रसीद से गन्ने वालों को रुपया मिलता है। कम्पनी के गोरे अफसर हम लोगों के हाथों से जब रसीद लेते हैं तो पहले दूर से ही उसे लोहे के चिमटे से पकड़ते हैं और फिर उसे जलती हुई गन्धक का धुआँ देते हैं। जब उनसे पूछा जाता है कि ऐसा क्यों करते हो, तो यही कहते हैं कि तुम लोग काला आदमी है। तुम्हारे हाथ की छुई हुई रसीदों से हमको बीमारी हो जाने का डर है, इसलिए हम इन रसीदों का रोग दूर करते हैं।

एक बार मैं अपने एक मित्र के साथ एक अंग्रेज बैरिस्टर के कार्यालय में गया। वहाँ पर एक भारतवासी अपने इजहार लिखा रहा था। बैरिस्टर साहब ने अपनी मेम साहब से कहा कि रुमाल से मुँह और नाक बन्द कर लो, नहीं तो इस काले आदमी के मुँह से निकलने वाली हवा से तुमको रोग हो जायगा। यद्यपि यह आदमी मेम साहब से बहुत दूर पर खड़ा हुआ था, पर तब भी श्वेतांग बैरिस्टर साहब ने ऐसा कह ही दिया! पाठक! ये वे ही बैरिस्टर साहब हैं जो कि हमारे भाइयों की बदौलत ही हजारों पौण्ड प्रतिवर्ष कमाते हैं।

कम्पनियों के कार्यालय के बराण्डों तक हम लोग नहीं जाने पाते। यदि भूल से चले भी गये तो धक्का मारकर धकेल दिये जाते हैं।

उपर्युक्त प्रकार के कितने ही दुख हमें काले रंग के कारण हर रोज सहने पड़ते हैं। हम लोग, जो अपने को ब्रिटिश राज्य की प्रजा समझते हैं, जब अपने घर भारतवर्ष से बाहर निकलते हैं, तो यह बर्ताव हमारे साथ किया जाता है तब हमारी आँखें खुल जाती हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौदागरों के अत्याचार

फिजी के अंग्रेज सौदागर हम भारतवासियों की भलाई कभी नहीं चाहते। पहले तो कितने ही हमारे भाई पाँच वर्ष तक कठिन परिश्रम करते-करते ही यमलोक को चले जाते हैं और यदि कोई परमेश्वर की कृपा से पाँच वर्ष तक काम करके स्वतन्त्र (free) हो जाते हैं और खेती का काम करना चाहते हैं तो यूरोपियन सौदागर उनके कार्य में अनेक बाधाएँ डाल देते हैं ! गन्ने की खेती में गोरों का माल १४ शिलिंग प्रति टन के हिसाब से लिया जाता है, पर हम लोगों का माल चाहे वह गोरों के माल से अच्छा ही हो, ९ शिलिंग फी टन से अधिक पर नहीं बिकता ! कितने ही भारतवासी फिजी में केले का व्यापार करते हैं। बहुत-सा केला वहाँ से आस्ट्रेलिया भेजा जाता है। आस्ट्रेलिया में जाकर तो हम लोग व्यापार कर ही नहीं सकते। ये यूरोपियन सौदागर इस लिए केले के जिस सन्दूक का दाम आस्ट्रेलिया में १४ शिलिंग लेते हैं उसी को हम लोगों से दो या तीन शिलिंग में खरीद लेते हैं। मक्का के जिस बोरे के लिए वे हमें दस शिलिंग से अधिक नहीं देते उसे वे स्वयं १८ शिलिंग में बेचते हैं। हम लोगों को हारकर उन्हें माल बेचना पड़ता है, न बेचें तो क्या करें ?

२०० भारतवासियों को धोखा दिया गया !

फिजी में बाइनर साहब एक पुराना प्लैण्टर है। उसने ८०० एकड़ भूमि पट्टे पर ले ली। उस भूमि में बहुत-सा जंगल था, साहब ने सोचा कि इस जंगल को यदि अपने व्यय से कटवायेंगे तो १००० पौण्ड से कम खर्च नहीं पड़ेगा, इसलिए यदि किसी तरह भोले-भाले भारतवासियों को धोखा देने से काम चल जाये तो ठीक है। यही विचारकर उसने कोई २०० भारतवासियों को बुलाया और कहा, हमारे पास ८०० एकड़ भूमि है, जिसको जितनी भूमि की आवश्यकता हो, हमसे ले सकता है। इस जमीन को साफ कर लो और इसे जोतो या बोया करो। इस प्रकार चिकनी-चुपड़ी बातें कहकर उसने कुल भूमि उन भारतवासियों में बाँट दी और उनको एक-एक कागज पर लिख दिया कि इस भूमि को तुम ५ या १० वर्ष तक काम में लाना और एक पौण्ड प्रति एकड़ के हिसाब से दाम देना। उन विचारों नें बड़े परिश्रम से और अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास के पौण्ड खर्च करके उस जंगल को काटकर ठीक किया और एक वर्ष उसमें खेती की। दूसरी वर्ष के प्रारम्भ होते ही बाइनर साहब ने उन सब भारतवासियों को वहाँ से निकाल दिया और जमीन छीन ली। उन बेचारों ने बहुत कुछ कहा-सुनी की पर सब व्यर्थ !

इस प्रकार के कितने ही दृष्टान्त दिये जा सकते हैं, पर स्थानाभाव के कारण नहीं लिखे गये। पाठक स्थाली-पुलाक-न्याय (डेगची के चावल) से उनका भी अनुमान कर लें।

फिजी के कानून से विवाह

फिजी में जो आदमी अपनी स्त्री की मेरिजकोर्ट (marriage court) में रजिस्ट्री करा लेता है, वही उसका हकदार होता है। विवाह हो जाने पर मजिस्ट्रेट के सामने स्त्री-पुरुष दोनों को जाना पड़ता है, वहाँ पर मजिस्ट्रेट दोनों की राजी पूछकर उन्हें एक-एक सर्टीफिकट दे देता है जो कि विवाह का सर्टीफिकेट कहलाता है। रजिस्ट्री करायी पाँच शिलिंग देना पड़ता है। हमारी धार्मिक रीति से जो विवाह किये जाते हैं, बिना रजिस्ट्री कराये फिजी के शासन-नियमों के अनुसार वे ठीक नहीं समझे जाते। यदि कोई भारतवासी फिजी में अपनी विवाहिता स्त्री के साथ जाये और वहाँ जाकर विवाह की रजिस्ट्री न कराये तो उस पुरुष का धन मृत्यु के पश्चात उसकी स्त्री को नहीं मिल सकता। वह धन इमीग्रेशन दफ्तर को भेजा जाता है ! जिन आदमियों का कोई उत्तराधिकारी नहीं होता उनका धन भी इमीग्रेशन कार्यालय को भेजा जाता है। इमीग्रेशन विभाग वाले उस धन को भारतवर्ष में भेजते हैं। परन्तु आरकाटी जिन लोगों को बहकाकर ले जाते हैं प्रायः उनका नाम, जाति और पता बिलकुल झूठा लिखवा देते हैं। इमीग्रेशन आफिस से वह धन उसी पते पर भेजा जाता है। जब कुछ पता नहीं चलता तो वह धन लौटकर फिजी में वहीं पहुँच जाता है। इस प्रकार आरकाटियों की बदमाशी से मृत मनुष्य का धन उसके माता, पिता, भाई इत्यादि सम्बन्धियों को भी नहीं मिलता।

क्या हम आशा कर सकते हैं कि भारत सरकार इस प्रकार के अन्याय को रोकने का प्रयत्न करेगी ? फिजी के विवाह सम्बन्धी कानून के विषय में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी फिजी-प्रवासी भारतवासी लिखा-पढ़ी कर रहे हैं, परन्तु अभी तक कोई फल नहीं निकला।

गोरे बैरिस्टर और वकील

यदि कोई भारतवासी गोरे बैरिस्टरों और वकीलों के पास जाता है तो वे एक गिन्नी के काम के लिए दस-दस गिन्नी ले लेते हैं। कितने ही बैरिस्टर तो यहाँ तक धूर्तता करते हैं कि पहले मनमाना मेहनताना ले लेते हैं और फिर कोर्ट में जाते भी नहीं! कुछ गोरे बैरिस्टर यह करते हैं कि पहले कुछ पौण्ड ले लेते हैं और अभियोग की पेशी के एक दिन पहले रात को कहला भेजते हैं कि अगर हमको पाँच गिन्नी और लाओ तो हम तुम्हारी पैरवी करेंगे, अन्यथा नहीं। बेचारे रात को दूसरा बैरिस्टर भी नहीं कर सकते, अतएव लाचार होकर पाँच गिन्नी देनी पड़ती हैं। यदि उनसे कहा जाये कि हमारे दाम वापस दे दो तो वे यही कहते हैं "हम लोग वापस नहीं दे सकते।" भारतवासियों के कितने ही मुकदमे यों ही खारिज हो गये हैं क्योंकि गोरे बैरिस्टर ठीक समय पर नहीं पहुँचते। यदि कोई झगड़ा किसी भारतवासी और गोरे में वहाँ हो जाये, तो प्रायः गोरे बैरिस्टर यह किया करते हैं कि रुपये तो भारतवासी से पैरवी करने के लिए लेते रहते हैं और फिर अभियोग में गोरे का पक्ष लेकर गोरे को ही जिता देते हैं! हमारे जो भाई दस-दस घण्टे काम करके कठिन परिश्रम से थोड़ा-बहुत कमाते हैं उसे ये गोरे बैरिस्टर छल-कपट से ठग लेते हैं, बेचारे भारतवासी उन पर रुपयों के लिए नालिश भी नहीं कर सकते, क्योंकि गोरे बैरिस्टर अपने श्वेतांग भाई के विरुद्ध अभियोग में काम करना स्वीकार ही नहीं करते।

गोरा बैरिस्टर १९२५ पौण्ड हजम कर गया

फिजी की राजधानी सूबा में बर्कले नाम के एक बैरिस्टर हैं। एक बार ४५ पंजाबी सिक्ख उनके निकट गये और प्रार्थना की "हम दक्षिण अमरीका में अर्जेण्टाइन प्रजातन्त्र (Argentina Republic) राज्य को जाना चाहते हैं। हमने सुना है कि वहाँ पर हमको बहुत मजदूरी मिलेगी। परन्तु फिजी से कोई स्टीमर दक्षिण अमरीका को नहीं जाता, क्या करें, कैसे जायँ?" गोरे बैरिस्टर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने मन में सोचा कि चलो ये लोग अच्छे चंगुल में आ फँसे। फिर उन सिक्खों से बातें बनाकर कहा "यदि तुम में से प्रत्येक ४ पौण्ड जमानत के दे, ५ पौण्ड मेरे मेहनताने के दे और १६ पौण्ड किराये के दे तो मैं स्टीमर तैयार कराके तुमको सीधा अर्जेण्टाइना भेज सकता हूँ।" सिक्ख लोग बातों में आ गये और बैरिस्टर की आज्ञानुसार पच्चीस-पच्चीस पौण्ड दे दिये। इनमें केवल १६ पौण्ड की उसने रसीद दी इस प्रकार उस बैरिस्टर ने १९२५ पौण्ड इन लोगों के ले लिये और अपनी सब धन-सम्पत्ति अपने पुत्र के नाम कर दी।

पंजाबियों ने सुप्रीम कोर्ट में नालिश की। बीसियों पौण्ड उनके और व्यय हुए, तब कहीं डिग्री मिली, पर अब उस बैरिस्टर के पास क्या था। एक कौड़ी भी वसूल न हुई। वेचारे रो-पीटकर रह गये। कितने ही दीन-हीन हो गये और एक सिक्ख तो इसी के दुख में मर भी गया!

भारतवासी बैरिस्टर का बुलाया जाना

जब हमको इतने कष्ट सहने पड़े, तो हम लोगों ने सोचा कि यदि कोई भारतवासी बैरिस्टर फिजी में आ जाये तो ठीक हो। गोरे बैरिस्टर लिखते कुछ हैं और हम लोगों को सुनाते कुछ और ही हैं। हमारे साथ सहानुभूति रखना तो दूर रहा, हमें घृणा की दृष्टि से देखते हैं, इसलिए ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि कोई हिन्दुस्तानी बैरिस्टर यहाँ आकर रहे। हम लोग श्रीमान् प्रातःस्मरणीय गांधीजी का नाम बहुत दिनों से समाचार-पत्रों में पढ़ा करते थे और उनके परोपकारी कार्यों के विषय में भी हम लोग थोड़ा बहुत जानते थे। अतएव हम लोगों ने एक सभा की। इस सभा के सभापति श्रीयुत् रूपराम जी थे। सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि एक पत्र श्रीमान् गांधीजी के पास भेजना चाहिए जिसमें हमारे कष्टों का संक्षिप्त विवरण हो और जिसमें गांधीजी से प्रार्थना की जाय कि वे किसी बैरिस्टर को फिजी में भेजने का प्रबन्ध करें। पत्र लिखने का कार्य मुझे सौंपा गया और मैंने अपनी तुच्छातितुच्छबुद्धि-अनुसार एक पत्र लिखा। पत्र का सारांश यह था "हम लोग फिजी में गोरे बैरिस्टरों से अनेक कष्ट पा रहे हैं। ये गोरे लोग हम पर नाना प्रकार के अत्याचार करते हैं और हमारे सैकड़ों पौण्ड खा जाते हैं। यहाँ पर एक भारतवासी बैरिस्टर की बड़ी आवश्यकता है। श्रीमान्

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रसिद्ध देशभक्त हैं, अतएव हमें आशा है कि आप हमारे ऊपर कृपा करके किसी भारतवासी बैरिस्टर को यहाँ भेजने का प्रबन्ध करेंगे। इस विदेश में आपके अतिरिक्त हमारे लिये कोई सहारा नहीं है।" श्रीमान् गांधीजी ने कृपा कर के पत्र के कुछ उद्धृत अंशों का अनुवाद कई समाचार-पत्रों में छपवा दिया और मेरे पास एक पत्र भेजा। पत्र की प्रतिलिपि निम्नलिखित है :

श्रावण वदी ८, सं० १९६७

"आपका खत मिला है। वहाँ के हिन्दी भाइयों का दुख की कथा सुनके मैं दुखी होता हूँ। यहाँ से कोई बैरिस्टर को भेजने का मौका नहीं है। भेजने जैसा कोई देखने में भी नहीं आता है।

जो इजा परे उसका बयान मुझ को भेजते रहना। मैं वह बात विलायत तक पहुँचा दूँगा।

स्टीमर की तकलीफ का ख्याल मुझे बराबर यहाँ पाता है। यह सब बातों के लिए वहाँ कोई इंगरेजी पढ़ा हुआ स्वदेशाभिमानी आदमी होना चाहिए। कोई मेरे ख्याल में आवेगा तो मैं भेजूंगा।

आपके दूसरे खत की राह देखूंगा।

मोहनदास करमचन्द गांधी का यथायोग्य पहुँचे।।"

जिन गांधीजी ने अपने भाइयों के लिए सारा जीवन व्यतीत किया है, जिन्होंने ४००० पौण्ड की वार्षिक आय छोड़कर भारतवासियों के दुख मोचनार्थ कुली तक का काम किया है, जो कि अपने देशबन्धुओं के लिए कई बार जेल भी गये हैं, उन्हीं श्रीमान् गांधीजी का उपर्युक्त पत्र है। इस पत्र में भी गांधीजी की महान् आत्मा और पूर्ण देशभक्ति की झलक दीख पड़ती है। गांधीजी से महापुरुष ने यह पत्र हिन्दी में लिखा है यह बात हिन्दी के लिए कितने गौरव की है! इस पत्र से हिन्दी की राष्ट्रीयता भी प्रकट होती है।

गांधीजी के छपाये हुए लेख को "इण्डियन ओपीनियन" में श्रीमणिलालजी, एम० ए०, एल-एल० बी०, बैरिस्टर-एट-लॉ ने पढ़ा। उन दिनों वे मौरीशस में काम कर रहे थे। श्रीमान् मणिलाल जी भारतवर्ष के एक प्रसिद्ध देशभक्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, कांग्रेस में आप बहुत दिनों से भाग ले रहे हैं। अपने देश के शिक्षित भाइयों के सामने मणिलाल जी का परिचय इस क्षुद्र पुस्तक में देना वृथा है। आपने मौरीशस में बहुत कुछ कार्य किया था। आपने वहाँ कुली जाना बन्द करा दिया, जो भारतवासी वहाँ पर थे उनकी बहुत कुछ सहायता की, वहाँ कानून में हेर-फेर कराया और कष्टदायक फ्रेंच नियमों से हिन्दू-मुसलमानों को मुक्त करा दिया। पहले मौरीशस में जेलखानों में हमारे भाइयों की चोटी और दाढ़ी काटी जाती थी और खाने-पीने में भी बहुत गड़बड़ होती थी। यह श्रीमान् मणिलाल जी का ही काम था कि उन्होंने इन बातों को बिलकुल बन्द करा दिया।

श्रीमान् मणिलाल जी ने गांधीजी के उक्त लेख को पढ़कर हम लोगों से पत्र-व्यवहार किया। फिजी में हम लोगों ने मणिलालजी के लिए १७२ पौण्ड चन्दा किया। इसमें से ४५ पौण्ड उन्हें स्टीमर के भाड़े को भेज दिये और शेष से उनके लिए कानून की किताबें खरीदीं और उनके रहने के लिए घर इत्यादि का प्रबन्ध किया। परन्तु कुछ दिनों बाद मणिलाल जी का हिन्दी में एक पत्र आया, जिसमें उन्होंने लिखा था "हमारे सम्बन्धी हमें इस बात की सम्मति नहीं देते कि हम फिजी जायँ। हम नैटाल जा रहे हैं, वहाँ श्रीमान् गांधीजी से राय लेकर जैसा कुछ होगा लिखेंगे। यदि न आ सके तो आपके दाम हम वापस कर देंगे।" जब श्री मणिलाल जी का यह पत्र हमें मिला तो हमारी आशा-लता मुरझाने लगी। फिर एक सभा की गयी। सर्व-साधारण की आज्ञानुसार मैंने पुनः एक पत्र श्रीमान् गांधीजी के पास भेजा। इतने में श्रीमान् मणिलाल जी नैटाल पहुँचे। गांधीजी ने मणिलाल जी से यही कहा कि आपने जो वचन दिया है उसका पालन करना उचित है। मणिलाल जी फिजी आने को राजी हुए। स्वनामधन्य गांधीजी ने कृपाकर एक पत्र हम लोगों को फिर भेजा, पत्र की लिपि निम्नलिखित है—

"आपका पत्र मिला है। मी० मणिलाल डाक्टर के लिए मैं तार भेजा था। उसका जबाव आपने न भेजा। इस पर से मैं समझा कि आप लोग उसको मुक्त करने में राजी न थे, दूसरे सबबों के लिए भी मणिलाल जी ने फिजी ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने का निश्चय किया। गत शुक्रवार के रोज ये भाई केप से निकल चुके हैं, आप को तार भी दिया हूँ। आस्ट्रेलिया होकर वहाँ पहुँचेंगे।

मेरी उमीद है आपके सब अब राजी होवेंगे और मी० मणीलाल जी की अच्छी तरह बरदास करोगे। उनका रहना खाने का बन्दोबस्त वहाँ के लोगों ने हाल तुरत में करना चाहिए! सब भाइयों का उत्तेजन मिलेगा तो अवश्य मी० मणिलालजी वहाँ स्थायी बनेंगे।

फेर कुछ लीखना होगा तो लीखना
मोहनदास गांधी के यथायोग्य।"

२७ अगस्त, १९१२ को मणिलालजी फिजी की राजधानी सूबा पहुँचे। हम लोगों ने उनके स्वागत का यथाशक्ति प्रबन्ध किया था। जिस दिन उनका स्वागत किया गया था, उस दिन हम फिजी प्रवासी भारतवासियों को जो प्रसन्नता हुई थी वह अकथनीय है। सैकड़ों भारतवासी वहाँ एकत्रित हुए थे। उस दिन स्टीमर से सैकड़ों ही हमारे भाई दूसरी जगहों से आये हुए थे। फिजी के आदिम निवासी लोगों को भी उस दिन बड़ी खुशी हुई। कठिन परिश्रम और दौड़-धूप के कारण बहुत-से भारतवासियों के मुख पर स्वेदबिन्दु झलक रहे थे। अहा! वह दृश्य कैसा रमणीय था! सड़कों पर तिल-भर भी जगह नहीं थी, खचाखच आदमी भरे हुए थे। फिजी के दो एक अंग्रेजी पत्रों के सम्वाददाता घबड़ाये हुए इधर से उधर घूम रहे थे। उन्हें इस बात का पता नहीं था कि यह हो क्या रहा है? मणिलालजी उतारे गये और बँगले में ठहराये गये। तदनन्तर संध्या के समय फिजी-निवासी भारतवासियों की ओर से उन्हें स्वागत का अभिनन्दन-पत्र दिया गया। अभिनन्दन-पत्र में उनसे यही प्रार्थना की गयी थी कि आप हमारे भाइयों की गिरी हुई दशा को सुधारें और कृपा कर हम लोगों की सहायता करें। मणिलालजी ने एक छोटा-सा व्याख्यान दिया और उसमें उन्होंने कहा "मैं यथाशक्ति आप की सेवा करने का प्रयत्न अवश्य करूँगा।" अत्यन्त हर्ष की बात है कि मणिलालजी अपनी प्रतिज्ञा को पूर्णतया पालन करने में तत्पर हैं।

इसके तीन दिन बाद फिजियन लोगों ने भी मणिलालजी का स्वागत बड़ी धूमधाम के साथ किया। कोई छह या सात सौ फिजियन इकट्ठे हुए। उन्होंने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मणिलालजी को निमन्त्रित किया और उनके स्वागत के उपलक्ष में फिजियन पुरुष व स्त्रियों ने खूब नृत्य और गान किया। फिजियन लोगों में यह रीति है कि जिस मनुष्य को वे सबसे अधिक प्यारा समझते हैं और जिसका कि बहुत कुछ आदर-सत्कार करना उन्हें अभीष्ट होता है, उसके गले में वे अपने यहाँ के बड़े सरदार की लड़की के हाथ से माला पहनवाते हैं। यहाँ यह कहना बाहुल्य-मात्र है कि मणिलालजी को भी यह माला पहनायी गयी थी। हम लोगों को फिजियन लोगों के इस उत्साह को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। कितने ही फिजियन अपनी भाषा में कह रहे थे "आज हमारे लिये बड़े हर्ष की बात है कि हमें एक ऐसे पढ़े-लिखे भारतवासी के स्वागत करने का सौभाग्य हमारे मित्र पंडित तोताराम के द्वारा प्राप्त हुआ। जब से फिजी देश बसा है तब से आज तक कोई इतना सुशिक्षित भारतवासी यहाँ नहीं आया। आप जैसे सुशिक्षितों की यहाँ अत्यन्त आवश्यकता है, इस देश में आपको और आपके भाइयों को ईश्वर चिरायु करे। आप हम लोगों को भी अपने भाइयों की तरह समझना।" तत्पश्चात मि० मणिलालजी ने भी एक मनोहर वक्तृता दी। मि० साम मुस्तफा ने फिजियन्स की भाषा का तर्जुमा अंग्रेजी में मि० मणिलालजी को समझाया, फिर संन्ध्या को वहाँ से विदा होकर मेरे यहाँ भोजन हुआ। प्रातः होते ही वे दुरुलुलु थाने के पास महाजन अलगू से मिलने को गये। वहाँ पहुँचते ही उन्होंने मारे खुशी के धूर-गोलों में आग लगा दी। आवाज होते ही मजिस्ट्रेट ने हुक्म दिया कि बन्द करो, नहीं तो सम्मन मिलेगा। संध्या के तीन बजे मणिलालजी श्रीमान् बाबू रामसिंह की लंच पर सवार होकर सूबा को चले गये।

फिजीद्वीप

फिजी का इतिहास--फिजी के प्राचीन इतिहास के विषय में हम बहुत कम जानते हैं। बहुत कुछ अनुसन्धान करने पर भी इस विषय में कोई निश्चित बात ज्ञात नहीं हुई। इसका कारण यही है कि मिशनरियों के जाने के पहले फिजी वाले लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे। इतिहास के अन्वेषकों का मत है कि ये लोग न्यू गायना से आकर यहाँ पर बसे; पर यह बात निराधार-सी है। इस विषय में अद्यपर्यन्त कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं मिला। हाँ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोलीनीशियन लोगों की भाषा में और इन लोगों की भाषा में थोड़ी-सी समानता पायी जाती है, पर अभी तक इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिला कि पोलीनीशियन लोग कब और कैसे फिजी में आये। सन् १६४३ ई० में Tasman नामक एक डच ने इसे आविष्कृत किया था। जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं, यह द्वीप १८७६ ई० में ब्रिटिश सरकार के हाथ में आया। रतूमा नामक द्वीप इसमें सन् १८७९ में मिला दिया।

जनसंख्या—सन् १९११ ई० की द्वितीय अप्रैल को जो मर्दुमशुमारी हुई थी, उससे ज्ञात हुआ कि फिजी की जनसंख्या १,३९,५४१ है।

नाम जाति	पुरुष	स्त्री	योग
यूरोपियन और दूसरे गोरे	२४०३	१३०४	३७०७
वर्णसंकर व अर्धगोरे (Half-Caste)	१२१७	१८४१	२४०१
भारतवासी	२६०७३	१४२१३	४०२८६
पोलीनीशियन	२४२९	३२९	२७५८
फिजी के आदिम निवासी	४६११०	४०९८६	८७०९६
चीन निवासी	२७६	२९	३०५
रोतूमन	१०४३	११३३	२१७६
मिश्रित	४५७	३५५	८१२
	८०००८	५९५३३	१३९५४१

जलवायु—फिजी की आबोहवा बहुत अच्छी है। भूमध्य रेखा के निकट के देशों में इतना अच्छा जलवायु बहुत कम पाया जाता है। मलेरिया का तो फिजी में अभाव ही है! इसके अतिरिक्त और भी कितने ही प्रकार के ज्वरों और रोगों का वहाँ नाम-निशान भी नहीं। फिजी के दक्षिण-पूर्व के कोने से जो पछुवा हवा चलती है उससे फिजी की गर्मी शान्त हो जाती है। फिजी में हैजा और प्लेग कभी नहीं फैलते। मच्छर फिजी में बहुत हैं, परन्तु मलेरिया उनसे पैदा नहीं होता। चीता, सिंह, साँप, बिच्छू इत्यादि फिजी में बिलकुल नहीं पाये जाते। परन्तु मक्खियाँ फिजी में बहुत ज्यादा होती हैं; इतनी ज्यादा कि उनके मारे नाक में दम हो जाता है। फिजी की राजधानी सूबा में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग १०७ इंच पानी प्रतिवर्ष बरसता है। फिजी में अकाल का विशेष डर नहीं क्योंकि थोड़ा बहुत पानी वहाँ हर महीने में बरसा ही करता है। परन्तु आँधी वहाँ बड़े जोर की आती है, इस कारण खेती को बड़ी हानि पहुँचती है, और केलों की खेती के लिए तो ये आँधियाँ बहुत ही हानिकारक होती हैं।

फिजी के आदिम निवासी

पहले फिजी के आदिम निवासियों की अपनी सभ्यता थी, परन्तु जब से फिजी ब्रिटिश अधिकार में आया है तब से काफी परिवर्तन हो गया है। पहले इन लोगों में अनेक परम्पराएँ प्रचलित थीं, परन्तु अब वे क्रमशः नष्ट हो गयी हैं। कोई २५० वर्ष पहले इन लोगों में यह रीति थी कि जब कोई फिजियन बहुत वृद्ध हो जाता था तो कुछ फिजियन युवक मिलकर उसके पास जाते थे और कहते थे "कोई को सिंगनी बीआ बीऊ ना बूरा-बूरा" अर्थात् "क्या तुम संसार को नहीं छोड़ना चाहते ?" जब वह कुछ उत्तर नहीं देता था तो उसको भूनकर खा जाते थे।

विवाह की रीति जो पहले इन लोगों में प्रचलित थी, वह भी बड़ी अद्‌भुत थी। एक गाँव का फिजियन जाकर दूसरे गाँव की किसी कन्या को भगाकर अपने घर ले आता था। तब फिर उस लड़की के गाँव वाले उस आदमी पर धावा बोलते थे। इधर लड़के की तरफ भी कितने ही आदमी लड़ने को तैयार रहते थे। फिर दोनों ओर से खूब लड़ाई होती थी। यदि वर-पक्ष वाले जीतते तो उस लड़की का विवाह पुरुष से कर दिया जाता था और लड़की वाले विजयी होते तो लड़की अपने गाँव को लौट जाती थी और उसका विवाह किसी दूसरे के साथ कर दिया जाता था। पति के शव के साथ पहले फिजियन लोगों की स्त्रियाँ भी जीवित ही गाड़ दी जाती थीं ! जब किसी मनुष्य का मित्र मर जाता था तो वह अपने बायें हाथ की सबसे छोटी अँगुली काटकर उसके साथ गाड़ देता था। परन्तु अब ये कुरीतियाँ बहुत कम हो गयी हैं, क्योंकि अधिकांश फिजियन ईसाई हो गये हैं। विवाह की वह रीति भी अब नहीं रही है। कन्याएँ अपने आप वर को चुन लेती हैं। उनके माता-पिता उनके इस कार्य में हस्तक्षेप नहीं करते। फिजियनों में १६ वर्ष से कम की कन्याओं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और २५ वर्ष से कम के पुरुषों का विवाह नहीं होता। यद्यपि उंगली गाड़ने की प्रथा अब बन्द हो गयी है, पर तब भी दब-छिपकर थोड़े बहुत आदमी अपनी उँगली काटकर गाड़ देते हैं! मैंने कितने ही आदमी ऐसे देखे हैं जिनकी अंगुली कटी हुई हैं। अपने मित्र व भाई मृतक के साथ अंगुली काटकर गाड़ देने से ये लोग "मांते बाता" यानी मित्र के प्रेम के वश उसके साथ मरने का परिचय देते थे। ये फिजियन अपने मित्र के मरने पर प्रेमपद को कैसा पूरा करते थे!

फिजियन लोग नित्यप्रति के कार्यों में चाहे विदेशी वस्त्र व्यवहार करें, पर जब उनके यहाँ कोई त्योहार होता है तो वे सदा अपने हाथ की बनायी हुई चीजों को ही काम में लाते हैं। हम लोगों को जो कि विवाह के अवसर पर सैकड़ों रुपये विदेशी वस्तुओं के खरीदने में व्यय कर देते हैं, फिज़ियनों से यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। फिजियन लोगों में जब पुत्र उत्पन्न होता है तो फिजियन स्त्रियाँ तीन रात तक जागरण करती हैं और रात को घर में दीपावली की तरह खूब उजाला करती हैं। जब पहले-पहल फिजी आविष्कृत हुआ था तब ये लोग इतने नासमझ थे कि इन्होंने दियासलाई की एक-एक डिबिया के लिए पचास-पचास एकड़ भूमि दे दी थी। पर अब वे बहुत बुद्धिमान हो गये हैं। अधिकांश लोग ईसाई हो गये हैं। उनके लिए गाँव-गाँव में ईसाइयों के स्कूल हैं, जहाँ कि फिजियन भाषा पढ़ायी जाती है। सब मांसभक्षी हैं। तीर-कमान और बरछा, ये ही उनके हथियार हैं। घूंसा मारने में वे बड़े निपुण हैं। वे सुअरों को भी घूंसों से मार डालते हैं।

फिजियनों का गिरमिट—हमारे भाई-बहनों पर जो अत्याचार फिजी में होते हैं, उनका वर्णन किया जा चुका है। पर ये अत्याचार फिजियन लोगों पर नहीं होने पाते। पहले तो फिजियन लोग शर्तबन्दी करके काम करते ही नहीं और यदि गिरमिट (agreement) में काम करते भी हैं तो अपनी सुविधा के लिए नौकर रखने वालों से कितनी ही शर्तें लिखवा लेते हैं। जब कोई फिजियन गिरमिट में काम करता है तो वह पहले लिखा लेता है कि दिन-भर में तीन बार भोजन देना होगा, छह महीने बाद कपड़े देने होंगे और साबुन, तम्बाखू,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिट्टी का तेल और कम्बल इत्यादि देने पड़ेंगे। जब तक इस बात को लिखा कर रजिस्ट्री नहीं करा लेता तब तक कोई भी फिजियन काम करने को कदापि राजी नहीं होता।

'COLONY OF FIJI' में एक यूरोपियन ने एक लेख लिखा है, जिसका आशय है : "फिजी के असली निवासी मजदूरी का काम अच्छी तरह नहीं कर सकते, उनका स्वभाव ही इस कार्य के लिए सर्वथा अयोग्य है। गन्ने की खेती में वही काम बार-बार रोज करना पड़ता है (जिसे करते-करते जी ऊब जाता है)। परन्तु भारतवासी कुली इसी कार्य के लिए सर्वथा योग्य हैं और प्लैण्टर लोग प्रायः उन्हीं से काम लेते हैं।"

बहुत ठीक ! फिजी के असली बाशिन्दों को कौन नौकर रखेगा ? पहले तो उनके नौकर रखने में खर्च ही बहुत पड़ता है और फिर गोरे लोग उन पर अत्याचार नहीं कर सकते। यह तो भारतवासी कुली ही हैं जिनके घूँसे मारो, पीटो, ठोकरें लगाओ, जिन्हें तनख्वाह मत दो, कैदखाने में भेज दो, कोई सुनने वाला ही नहीं !

निष्पक्ष लेखक हो तो ऐसा हो ! फिजी के आदिम निवासी इस कार्य के योग्य नहीं हैं। क्यों ? इसलिए कि उनका स्वभाव ही इस कार्य के लिए अयोग्य है !

अब आप एक फिजियन मजदूर और भारतवासी की तुलना कीजिए। हम लोगों को वहाँ प्रति सप्ताह में ५ शिलिंग ६ पैंस मिलते हैं, सो भी तब, जब पूरा काम करें, और सौ आदमियों में ५ से अधिक पूरा काम कभी भी नहीं कर सकते। परन्तु तब भी हमें देखना है कि एक असाधारण परिश्रमी भारतवासी कुली, हर प्रकार के अत्याचार सहते हुए अधिक से अधिक कितना कमा सकता है। प्रति सप्ताह के ५ शिलिंग ६ पैंस के हिसाब से एक महीने के १ पौण्ड २ शिलिंग, एक वर्ष के १३ पौण्ड ४ शिलिंग हुए। इसमें ९ पौण्ड तो सूखे खाने में ही व्यय हो जाते हैं। सेर-भर आटा और पाव-भर दाल के हिसाब से ९ मन आटा और २$\frac{1}{4}$ मन दाल हुई। फिजी में आटा ४ आना सेर, दाल ६ आना सेर और मसाला हल्दी, मिर्च इत्यादि १२ आना का एक पौण्ड (आधा सेर) मिलता है। इस प्रकार कम से कम नौ पौण्ड तो खाने में ही व्यय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होंगे और साल-भर में एक-दो पौण्ड जुर्माना हो जाना कोई बड़ी बात नहीं, अथवा दस-बीस दिन की कैद ही हो जाना एक बिलकुल साधारण बात है; इसलिए इसका भी एक पौण्ड निकाल डालिए और कम से कम डेढ़ पौण्ड ऊपरी खर्च के लिए रख लीजिए। इस प्रकार कुल मिलाकर ११½ पौण्ड हुए। इस पर भी अभी कपड़े-लत्ते, तेल, लकड़ी, त्योहार इत्यादि सबके सब बाकी हैं। १ पौण्ड से अधिक कभी भी नहीं बच सकता। परन्तु फिजियनों को सूखे ९ पौण्ड बचते हैं क्योंकि उनका खाना, पीना, कपड़ा, लत्ता, तेल, साबुन सब प्लैण्टरों के जिम्मे होता है और साल-भर में ९ पौण्ड मिलते हैं।

फिजियन लोग पूछताछ करके और सब प्रकार की सुविधाजनक शर्तें लिखा कर तब कहीं रजिस्ट्री करते हैं और हमारे यहाँ आरकाटी बहकाकर मजिस्ट्रेट के पास ले जाता है। मजिस्ट्रेट पूछता है, 'फिजी जाने को राजी हो' ? जहाँ मुँह में से 'हाँ' निकली कि रजिस्ट्री हो गयी। रजिस्ट्री क्या हुई, केवल हाँ कहने से पाँच वर्ष का कालापानी हो गया !

फिजियनों की भाषा—पहले यहाँ लिखने की कोई भाषा नहीं थी। परन्तु जब से ईसाई लोग वहाँ पहुँचे हैं तब से वहाँ के लोग रोमन में अपनी बातों को लिखते हैं और पढ़ते हैं। फिजियन लोगों के नाम भी बड़े अजीब होते हैं, जैसे माद्यू, इयोम्बी, लैबानी, सावे नादा, रातूइरोनी, च्यौ इत्यादि। फिजियन भाषा के दो-चार शब्द भी सुन लीजिए।

तेनाना	=	माँ
तमाना	=	बाप
तोकाना	=	बड़ा भाई
तादीना	=	छोटा भाई
वतीना	=	पत्नी
कलौ	=	ईश्वर

फिजी प्रवासी भारतवासियों के जीवन पर एक दृष्टि

फिजी में ४०,००० से अधिक हिन्दुस्तानी हैं। इनमें ३५ फीसदी स्त्री हैं और ५५ फीसदी पुरुष। जब मैंने घूम-घूमकर वहाँ की भारतीय स्त्रियों से फिजी के आने के विषय में पूछा तो कुछ स्त्रियों ने कहा "हमारे निर्धन पति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को आरकाटी ने बहका दिया, इसलिए हमें भी अपने पति के साथ यहाँ आना पड़ा।" बहुत-सी स्त्रियों ने कहा "हमारे सास, ससुर, पति इत्यादि मर गये तो निकट के कुटुम्बी लोगों ने कुछ मदद नहीं की, इसलिए हम तीर्थ-भ्रमण करने को चली गयीं और वहाँ से हमें आरकाटी बहकाकर ले आये।" कुछ स्त्रियों ने यह भी कहा "पति के मरने पर जब हम विधवा हुईं तो घर के लोग हमसे लड़ने-झगड़ने लगे और हमें कष्ट देने लगे। इन्हीं दुखों से हम घर से निकल गयीं, बीच में दुर्भाग्यवश आरकाटियों के फन्दे में पड़ गयीं और अन्त में हमें अनन्त कष्ट सहने के लिए यहाँ आना पड़ा।"

उपर्युक्त बातों से प्रकट होता है कि गृह-सम्बन्धी लड़ाई-झगड़ों से और विधवाओं के साथ समुचित बर्ताव न करने से, बहुत-सी स्त्रियों को द्वीप-द्वीपान्तरों में जाकर अनेक कष्ट भोगने पड़ते हैं। ये स्त्रियाँ बिलकुल भोली-भाली और प्रायः अशिक्षित होती हैं; इसी कारण वे आरकाटियों के फन्दे में और भी जल्दी फँस जाती हैं। पता लगाने से ज्ञात हुआ कि रेवा और नाबुआ जिले की ५०० स्त्रियों में कुल तीन या चार पढ़-लिख सकती थीं। यद्यपि पुरुषों को भी फिजी में अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं, पर स्त्रियों को उनसे भी अधिक दुख उठाने पड़ते हैं। पहले तो उन्हें साढ़े तीन बजे प्रातःकाल उठना पड़ता है और रोटी बनानी होती है। तत्पश्चात दस घण्टे खेत पर कठिन परि-श्रम करना पड़ता है, फिर घर लौटकर रोटी करनी होती है। जब स्त्रियाँ काम पर से लौटती हैं तब उनके मुँह पर मुर्दनी-सी छा जाती है। उस समय उनके मुख की मलीनता को देखकर जो दुख होता है वह वर्णनातीत है। जो स्त्रियाँ भारतवर्ष में कभी अपने गाँव से बाहर नहीं गयी थीं, जो स्त्रियाँ इतना भी नहीं जानती थीं कि हमारे जिले के बाहर कोई देश है भी या नहीं, जो स्त्रियाँ स्वभावतः नम्र और सुकुमार थीं, जिन्होंने कि घर पर कभी कड़ा काम नहीं किया था, वे ही स्त्रियाँ आज हजारों कोस दूर फिजी, जमैका, क्यूबा, होण्डूरास, गायना इत्यादि में जाकर दस-दस घण्टे कठिन परिश्रम करती हैं। कितनी ही बाल-विधवाएँ बहकायी जाकर फिजी में भेज दी गयी हैं, उनके दुखों की कहानी सुनकर कड़े से कड़ा हृदय भी पसीज सकता है। जिस समय वे नीचा मुख

185496
Gurukula K... University, Haridwar

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके अश्रुधारा बहाती हुई अपने दुख की कहानी सुनाती हैं उस समय अपनी आँखों से आँसुओं को रोकना सुनने वालों के लिए असम्भव है।

गोरे ओवरसियरों के कारण हमारी भगनियों को जो-जो दुख वहाँ उठाने पड़ते हैं वे अवर्णनीय हैं। भारतीय स्त्रियों के कष्टों को देखकर फिजियन लोग अपनी भाषा में हमसे कहा करते थे 'सादा बकलेबू न वाण्डआ इन्दिआ, साङ्गई लाको माई, न या लेवा वू लांगी माई बीती साती को दाई के सा वुतूका वेसिङ्गा वेसिङ्गा ने ओवासिआ सा दा न काई इण्डिया न मरा मा साला को माई बीती वनुआ वूलांगी कँबक दुआ न आता माता सा न कीता का वाता नई लेवा नकीतौ बक मतीआ सारा को का या।"

अर्थात् "इण्डिया बहुत बुरा देश है, जहाँ की स्त्रियाँ मजदूरी करने के लिए परदेश में फिजी को आती हैं और यहाँ आकर अनेक अत्याचार सहती हैं। जैसे अत्याचार तुम्हारी इण्डियन स्त्रियों पर किये जाते हैं वैसे यदि हमारी स्त्रियों पर किये जायँ तो करने वालों को हम जड़ से मिटा दें।"

क्या फिजियनों की यह बात अक्षरशः सत्य नहीं है ? क्या हमारे लिये यह लज्जा की बात नहीं है कि हमारी भगनियों, माताओं और कन्याओं पर सात समुद्र पार ये अत्याचार किये जायँ ? क्या हम में अब आत्माभिमान और आत्म-रक्षा का लेश भी नहीं रहा ? जब हम लोग फिजियनों के सामने अपने देश की बड़ाई करते थे तो वे फौरन यही कहते थे। "तुम्हारा देश कुछ काम का नहीं, खबरदार अपने बुरे मजूरा देश की बड़ाई हमारे सामने फिर कभी न करना।" फिजियनों की यह बात सुनकर हमें निरुत्तर होना पड़ता था।

देश लौटने में जाति का भय—कितने ही स्त्री और पुरुष अपने गिरमिट को पूरा करके और पाँच वर्ष और रहकर अपनी मातृभूमि को लौटना चाहते हैं तो वे इस विचार से नहीं लौटते कि वहाँ पहुँचकर कोई हमें जाति में तो मिलायेगा नहीं, जाति-अपमान वहाँ और सहना पड़ेगा, इसलिए मृत्युपर्यन्त उन्हें वहीं कष्ट उठाने पड़ते हैं। हमारे देश के भाई समुद्र-यात्रा की दफा लगाकर टापुओं से लौटे हुए अपने भाइयों को जाति से च्युत करके उनको इतना कष्ट देते हैं कि जिससे दुखित होकर वे फिर टापुओं को लौटकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले जाते हैं और उनके धन को, जो कि उन्होंने परदेश में जाकर मारपीट सहकर, अनेक अपमान सहकर, आधे पेट खा-खाकर कौड़ी-कौड़ी मुश्किल से जमा किया है, कुछ तो भाई-बन्धु ले लेते हैं और कुछ स्वार्थी पुरोहित प्रायश्चित्त कराने में बेदर्द होकर खर्च करवा डालते हैं। अपने देश-बन्धुओं को मैं इसका एक उदाहरण देता हूँ। मेरे घर के पास फिजी टापू में एक गुलजारी नाम का कान्यकुब्ज ब्राह्मण रहता था। उसने बड़े परिश्रम से आठ वर्ष में लगभग तीन सौ रुपये इकट्ठे किये। इसको ब्राह्मण जानकर सब लोग प्रायः महीने की पूर्णमासी को सीधा दे दिया करते थे। भारतवर्ष में कन्नौज के रहने वाले थे, इनके घर से इनके भाई ने पत्र भेजा, उसमें लिखा था कि तुम चले आओ। इस साल में तुम देश को नहीं आओगे तो तुमको एक सौ एक गौ मारने की हत्या होगी। गुलजारीलाल ने भाई की लिखित जब ऐसी शपथ देखी तब ब्राह्मण-धर्म सोचकर वे देश को चले आये। चलते समय इनको लोगों ने कुछ और दक्षिणा दी। जब ये अपने घर आये तो दूसरे घर में ठहराये गये। रुपया-पैसा सब भाई को सौंप दिया। तीन-चार दिन बाद पुरोहित जी बुलाये गये। ये महाशय कानून की पुस्तक साथ लेकर आये। गाँव के बड़े-बूढ़े सब मिलकर बैठे। समुद्र-यात्रा पर विचार हुआ। गुलजारी ने घर से निकलने से लेकर फिजी में पहुँचने तक जहाज का खाना-पीना बयान किया। फैसले में सब तीर्थ बताये गये! भागवत सुनने को बतायी गयी। लगभग पाँच या छह गाँव का भोज बताया। कोई सात सौ या आठ सौ रुपये के लगभग खर्च करने का फैसला दिया गया। गुलजारी ने खर्च करने के लिए भाई से अपने दिये हुए रुपये माँगे। भाई ने कोरा जवाब दिया। जाति वालों ने अलग कर दिया। गुलजारी के साथ गाँव वाले बड़ी घृणा करने लगे। भाई लोग कट्टर शत्रु हो गये। बोले कि तुमने कुछ हम लोगों से रुपया छिपा लिया है, वही खर्च करो। यह रुपया हम न देंगे। लाचार गुलजारी ने फिजी में अपने इष्ट-मित्रों को कष्ट-कहानी की चिट्ठी भेजी और लिखा कि कसाई के हाथ से गाय छुड़ाने के समान मुझे बचाकर पुण्य के भागी हो। वहाँ से चन्दा करके छह सौ रुपया लोगों ने भेजा, तब गुलजारी अप्रैल १९१४ ई० में फिर फिजी पहुँचे। इसी तरह कितने ही लोग लौटकर फिजी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये हैं, और जाकर ईसाई और मुसलमान भी हो गये हैं। समुद्र-यात्रा की दफा में मुजरिम होकर हमारे बहुतेरे भाई मातृभूमि को अन्तिम नमस्कार करके चले गये हैं और वहाँ पहुँचकर सनातन धर्म की जय बोलकर मसीह के रूल को पकड़ लिया है। पाठक! जरा विचारिए, क्या आप रामायण पढ़ते हैं? क्या आपने भरत के प्रेम की शिक्षा को ग्रहण किया है? क्या आप भाई से प्रेम करना जानते हैं? हम भारत धर्म-महामण्डल के संचालकों से सविनय प्रश्न करते हैं कि आपने इन प्रवासी भाइयों के लिए क्या उपाय सोचा है, आप इनको क्या आज्ञा देते हैं? ये लोग गौ की कुर्बानी में भाग लें या ईसाइयों में? या आप पुचकारकर इन्हें अपनी छाती से लगायेंगे?

क्या हम अपने देश के व्याख्यानदाताओं और धार्मिक पुरुषों से पूछ सकते हैं कि इन लोगों को पुनः जाति में मिला लेने में क्या हानि है? जो मनुष्य घर के अत्याचारों से पीड़ित होकर और दुष्ट आरकाटियों द्वारा बहकाये जाकर विदेश में भेज दिये गये हैं. उसमें उन विचारों का क्या दोष है?

शिक्षा की दशा—फिजी में मिशनरियों के स्कूल हैं, पर ऐसे स्कूलों में लड़कों को पढ़ाना मानो ईसाई बनाना है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि कुछ हिन्दी पढ़े-लिखे और अंग्रेजी जानने वाले आदमी भारतवर्ष से जायँ और स्कूल खोलकर अपने भाइयों को शिक्षित बनायें। हमारे थोड़े बहुत भाई वहाँ समाचार-पत्र पढ़ सकते हैं, यह अच्छी बात है। भारतवर्ष से कितने ही समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ वहाँ जाया करती हैं, यथा—सरस्वती, चित्रमयजगत्, मर्यादा, भास्कर. भारतमित्र, अभ्युदय, आर्यमित्र, भारत-सुदशाप्रवर्त्तक, वीरभारत, वेङ्कटेश्वर इत्यादि। जो आदमी पढ़ सकते हैं, वे अपने निरक्षर भाइयों को मातृभूमि भारत के समाचार सुनाया करते हैं। भारतमित्र को वहाँ के भारतवासी बड़े चाव के साथ पढ़ते हैं, और वास्तव में फिजीवासियों के लिए भारतमित्र ने बहुत काम किया है। आशा है कि हमारे अन्य समाचार-पत्र भी भारतमित्र का अनुकरण करेंगे और अपने प्रवासी भाइयों की सहायतार्थ थोड़ा बहुत लिखा करेंगे।

धार्मिक स्थिति—जो पण्डित या मौलवी फिजी में जाते हैं, वे पहले तो स्वयं कुछ पढ़े-लिखे ही नहीं होते और फिर उनका उद्देश्य यही होता है कि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने भोले भाइयों से रुपया ठगकर अपने घर लौट आयें ! ऐसे स्वार्थी मनुष्य फिजी प्रवासी भाइयों का कुछ उपकार नहीं कर सकते ।

एक बार हम लोगों ने एक प्रार्थना-पत्र फिजी के गवर्नर के पास इस आशय का भेजा था कि यदि भारतवर्ष से कोई अच्छा उपदेशक फिजी में बुला लिया जाय तो बहुत लाभ हो । उसके आने-जाने का व्यय Immigration विभाग दे और उसके भोजन इत्यादि का प्रबन्ध हम लोग करेंगे । गवर्नर के यहाँ से यह प्रस्ताव स्वीकृत होकर भारतवर्ष को आया; परन्तु खेद की बात है कि यहाँ से कोई जाने को राजी न हुआ । भारत धर्म-महामण्डल का यह कर्तव्य है कि अपना एक अच्छा उपदेशक फिजी को भेजे; परन्तु जो लोग समुद्र-यात्रा को पाप समझते हैं वे प्रवासी भारतवासियों के दुख-मोचनार्थ वहाँ कैसे जा सकते हैं ? श्री राममनोहरानन्द सरस्वती नामक एक आर्यसमाजी सज्जन वहाँ गये हुए हैं और उन्होंने वहाँ प्रचार का काम भी किया है, अतएव वे धन्यवाद के पात्र हैं । पर वहाँ एक ऐसे उपदेशक की अत्यन्त आवश्यकता है, जो कि वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञाता हो और अच्छी तरह अंग्रेजी भी जानता हो । धर्म का प्रचार करना बड़ी टेढ़ी खीर है, इसके लिए सैकड़ों कष्ट सहने पड़ते हैं और इस कार्य में बड़े साहस, आत्मिक बल, शारीरिक शक्ति, धैर्य और सहिष्णुता की आवश्यकता है । हम यह जानते हैं कि आर्यसमाज के ऊपर काफी बोझ रखा हुआ है और आर्यसमाज बहुत कार्य कर रहा है, परन्तु संसार के उपकार का दम भरने वाला आर्यसमाज अपने प्रवासी भाइयों के लाभार्थ क्या एक उपदेशक भी फिजी को नहीं भेज सकता ? हमें पूर्ण आशा है कि फिजी के हिन्दू लोग यहाँ से भेजे हुए उपदेशकों की यथाशक्ति सहायता करेंगे । हम लोगों ने वहाँ दो-चार जगहों में प्रतिवर्ष रामलीला करने का भी प्रबन्ध किया था । अब भी लम्बासा, नावुआ, लतौका इत्यादि कई स्थानों में हर साल रामलीला हुआ करती है । इससे लाभ यह होता है कि हमारे भाइयों के हृदय में अपने जातीय उत्सवों की ओर प्रेम बना रहता है ।

फिजी में ईसाई लोग कितने ही वर्षों से बराबर अपना कार्य कर रहे हैं; परन्तु बहुत प्रयत्न करने पर भी उन्होंने बहुत कम हिन्दू ईसाई बनाये हैं ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका कारण यह है कि हम लोग बराबर यही प्रयत्न करते रहे हैं कि हमारे भाई ईसाई न होने पायें और यदि इतने पर भी वे ईसाई हो जाते थे तो हम लोग उन्हें शुद्ध कर लेते थे। फिजी में बहुत-से कबीरपंथी, रामानन्दी, सतनामी, गुसाईं इत्यादि कितने ही प्रकार के साधु हैं; परन्तु ये लोग अपने-अपने चेले बनाते फिरते हैं। कितने ही साधु बहकाकर फिजी में भेज दिये गये हैं। ५ वर्ष गिरमिट में काम करके जब यह लोग स्वतन्त्र हो जाते हैं तो भीख माँगना प्रारम्भ कर देते हैं। साल-भर में एक-दो बार अपने चेलों के पास चक्कर लगाना बस यही उनका काम है। इसीलिए हम कहते हैं कि एक अच्छा उपदेशक फिजी में पहुँच जाये तो बहुत लाभ हो।

कुछ वर्षों से फिजी में स्त्रियों के पुनर्विवाह भी होने लगे हैं। बात असली यह है कि पहले तो फिजी में मर्दों की संख्या स्त्रियों की संख्या से लगभग दूनी है और फिर इन स्त्रियों में कितनी ही बाल-विधवाएँ हैं, जो बहकाई जाकर भेज दी गयी हैं। ऐसी दशा में व्यभिचार होना स्वाभाविक ही है। फिजी में ऐसे कितने ही अभियोग हुआ करते हैं, जिनमें कि पुरुष ने अपनी स्त्री को दुराचार के कारण मार डाला है और वह स्वयं फाँसी पर चढ़ गया है। इसमें दोष किसी का नहीं है। असली दोष है इस 'Indenture system' यानी कुलीप्रथा का। ऐसी बुरी और पतित दशा में रहते हुए भी फिजी का भारतीय समाज बहुत नहीं बिगड़ा, यह बात वास्तव में आश्चर्यजनक है। जब फिजी निवासियों ने देखा कि दब-छिपकर बहुत व्यभिचार होता है तो उन्होंने यह उत्तमतर समझा कि पुनर्विवाह की प्रथा जारी कर दी जाय।

पुनर्विवाह शास्त्र-सम्मत है या नहीं, इस विषय में कहना मेरे लिये अनधिकार चेष्टा होगी; पर इतना अवश्य कहे बिना मैं नहीं रह सकता कि फिजी में व्यभिचार को रोकने में पुनर्विवाह ने थोड़ी बहुत सहायता अवश्य दी है।

आर्थिक स्थिति—फिजी-प्रवासी भारतीय लोगों की आर्थिक स्थिति खराब है। पाँच वर्ष के बाद स्वतन्त्र होकर थोड़े बहुत आदमी खेती कर लेते हैं; परन्तु धान की खेती के अतिरिक्त और किसी में लाभ होने की सम्भावना नहीं है। खाद्य-पदार्थों की तेजी के कारण कुछ लोग भूखों भी मरते हैं। अगर वहाँ धान न पैदा होता तो और भी कितने ही आदमी भूखों मरने लगते। सैकड़ा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे एक-दो आदमी ऐसे हैं जो अपना व्यापार करते हैं। हम पहले कह चुके हैं कि पूरा काम करने पर एक शिलिंग मजदूरी मिलती है। परन्तु पूरा काम करने वाले १०० में पाँच निकलेंगे, क्योंकि पूरे काम की कोई हद्द मुकर्रर नहीं है, वैसे तो २० जरीब लम्बे और ६ फुट चौड़े खेत का काम पूरा काम कहलाता है; परन्तु यदि कोई आदमी इस कठिन कार्य को एक दिन में कर लेता है तो दूसरे दिन का फुल टास्क २५ जरीब लम्बाई ६ फुट चौड़ाई का हो जाता है! साधारण मनुष्य १२ शिलिंग यानी नौ रुपये से अधिक एक महीने में नहीं कमा सकते। फिजी में गेहूँ का आटा एक शिलिंग का ६ पौण्ड चावल ४ पौण्ड, दाल अरहर की ४ पौण्ड के हिसाब से मिलते हैं। सारांश यह है कि भारतवर्ष की अपेक्षा वहाँ दूना खर्च पड़ता है। कुछ लोगों का ख्याल है कि इन द्वीपों में जाकर आदमी बहुत कुछ रुपया कमाकर ला सकता है; परन्तु उनका यह ख्याल भ्रममूलक है। हम यह मानते हैं कि इन द्वीपों से जो सैकड़ों आदमी भारतवर्ष लौटते हैं, उनमें से दो-चार आदमी रुपया अवश्य कमा लाते हैं। पर हम लोगों के कहने को यह हो जाता है कि देखो अमुक मनुष्य कुली बनकर गया था और वहाँ से इतना धन बटोर लाया! हम लोग यह नहीं विचारते कि सौ में पाँच आदमी कमा लाये तो कौन-सी बड़ी बात हुई। बाकी ९५ तो बेचारे भूखों मरते लौटे हैं। और जो आदमी कमा लाते हैं, उनसे पूछा जाये तो वे प्रायः यही कहेंगे कि भारतवर्ष में रहकर यदि उतना परिश्रम करते तो उससे अधिक नहीं तो कम भी नहीं कमा सकते थे। अस्तु, तात्पर्य यह है कि लोगों के दिल में से और विशेषतया गाँव के लोगों के हृदय में से यह भ्रम दूर कर देना चाहिए कि इन द्वीपों में जाकर आदमी मालामाल हो जाता है।

शारीरिक अवस्था—जो लोग गिरमिट में काम करते हैं, उनमें से ९० फीसदी की शारीरिक अवस्था शोचनीय है। यदि गिरमिट वाले बीमार पड़ते हैं तो वे प्लैण्टर लोगों के अस्पताल में भेज दिये जाते हैं, पर जो लोग गिरमिट के काम से छूटकर स्वतन्त्र हो जाते हैं, उन्हें इस विषय में बहुत कष्ट सहना पड़ता है। स्वतन्त्र आदमी को वहाँ सरकारी अस्पताल में जाना चाहें तो उन्हें इमीग्रेशन आफिस में जाना पड़ता है। इस आफिस के कार्यकर्ता जब पहले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस रुपये जमा करा लेते हैं तब अस्पताल जाने के लिए पत्र देते हैं। यदि रुपया न हुआ तो गहना ही रखवा लेते हैं। पहले तो जिनके पास दाम नहीं होते उनको अस्पताल में भेजते ही नहीं और यदि कृपा करके भेज भी दिया तो उनके नाम आठ आना प्रतिदिन के हिसाब से दाम जुड़ते हैं और पीछे से उन्हें सब देना पड़ता है। क्या ही अच्छा हो यदि भारतवर्ष से कुछ डाक्टर और वैद्य जाकर वहाँ अपने औषधालय खोल दें! स्वतन्त्र आदमियों की शारीरिक अवस्था साधारण है।

संगठन-शक्ति—यहाँ पर हमें हर्षपूर्वक लिखना पड़ता है कि फिजी निवासी भारतीय भाइयों में अब तीन-चार वर्ष से संगठन-शक्ति का भी अंकुर उत्पन्न हो गया है। यदि कोई कठिन परिश्रम करके चन्दा इकट्ठा करना चाहे तो वह भी हो सकता है। दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भाइयों के लिए हम लोगों ने अकेले सूबा नगर से १८ पौण्ड चन्दा करके भेजा था। फिजी का सब चन्दा ४० पौण्ड (६०० रुपये) गया था। हम लोगों ने ब्रिटिश इण्डियन एसोसियेशन नामक सभा भी कायम की थी, जो अब तक बराबर अपना काम कर रही है। उसके सभापति श्रीयुत् मणिलालजी बैरिस्टर हैं, और मन्त्री बाबू रामसिंह। श्रीयुत् राममनोहरानन्द सरस्वती ने बहुत परिश्रम करके १४० पौण्ड चन्दा करके सरस्वती स्कूल नामक पाठशाला ताईवाऊ नामक ग्राम में स्थापित कर दी है। श्रीराममनोहरानन्द सरस्वती फिजी को अपने व्यय से गये हैं। ये महाशय जब ब्रह्मदेश में थे तब फिजी से एक व्यक्ति ने इनके पास पत्र भेजा था। इसी तरह एक वर्ष पत्र-व्यवहार होता रहा। तत्पश्चात ६ जनवरी, १९१३ ई० को फिजी में पहुँचने के एक महीने बाद इन्होंने भ्रमण करना आरम्भ किया। हर्ष की बात है कि स्वामीजी ने फिजी-प्रवासी भारतवासियों की अशिक्षित सन्तान को शिक्षित बनाने का संकल्प किया है। स्वामी जी ने सामाकला स्थान में व्याख्यान देते हुए कहा था कि 'मेरी आयु का शेष भाग फिजी-प्रवासी भारतीय भाइयों की सन्तान के उद्धार के लिए है।' परमेश्वर उनकी इस प्रतिज्ञा को पूर्ण करे।

प्रसन्नता की बात है कि फिजी के मुसलमान लोग हिन्दुओं से मिले रहते हैं। वे लोग बकरीद पर गाय की कुर्बानी कभी नहीं करते। चन्दे इत्यादि के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामों में भी वे आगे बढ़कर भाग लेते हैं। हम अशिक्षित आदमियों में इतना मेल होना कोई साधारण बात नहीं।

फिजी-प्रवासी भारतवासियों के विषय में कुछ निष्पक्ष लोगों की सम्मति

फिजी की राजधानी सूबा में कुमारी एच० डडले (Miss H. Dudley) नामक एक मिशनरी हैं। आप आस्ट्रेलियन मेथोडिस्ट हैं और आपकी फिजी के भारतवासियों से बहुत कुछ सहानुभूति है। उन्होंने भारतवासियों की दशा पर खेद प्रकट करके एक पत्र 'इण्डिया' नामक पत्र में भेजा था। यह पत्र माडर्न रिव्यू में उद्धृत किया गया था। पाठकों के लिए माडर्न रिव्यू से लेकर उसे हम यहाँ लिखे देते हैं।

लेखिका कुमारी डडले, सूबा, फिजोद्वीप

Sir,

Living in a country where the system called, "Indentured labour" is in vogue, one is continually oppressed in spirit by the fraud, injustice, and inhumanity of which fellow creatures are the victims.

Fifteen years ago I came to Fiji to do mission work among the Indian people here. I had previously lived in India for five years. Knowing the natural timidity of Indian village people and knowing also that they had no knowledge of any country beyond their own immediate district, it was a matter of great wonder to me as to how these people could have been induced to come thousands of miles from their own country to Fiji. The women were pleased to see me as I had lived in India and could talk with them of their own country. They would tell me of their troubles and how they had been entrapped by the recruiter or his agents. I will cite a few cases.

One woman told me she had quarrelled with her husband and in anger ran away from her mother-in-law's house to go to

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

her mother's. A man on the road questioned her, and said he would show her the way. He took her to a depot for Indentured labour. Another woman said her husband went to work at another place. He sent word to his wife to follow him. On her way a man said he knew her husband and that he would take her to him. This woman was taken to a depot. She said that one day she saw her husband passing and cried out to him but was silenced. An Indian girl, was asked by a neighbour to go and see the Muharram festival. Whilst there she was prevailed upon to go to a depot. Another woman told me that she was going to a bathing ghat and was misled by a woman to a depot.

When in the depot these women are told that they can not go till they pay for food they have had and for the other expenses, they are unable to do so. They arrive in this country timid fearful women not knowing where they are to be sent. They are alloted to plantations like so many dumb animals. If they do not perform satisfactorily the work given to them, they are punished by being struck or fined, or they are even sent to gaol. The life on the plantations alters their demeanour and even their very faces. Some look crushed and broken-hearted, others sullen, others hard and evil, I shall never forget the first time I saw "indentured" women. They were returning from their day's work. The look on those women's face's haunts me.

It is probably known to you that only about 33 women are brought out to Fiji to every one hundred men, I can not go into details concerning this system of legalised prostitution. To give you some idea of the result, it will be sufficient to say that every few months some Indian man murders for unfaithfullness of the woman whom he regards as his wife.

It makes one burn with indignation to think of the helpless little children born under the revolting condition of the "indentured labour" system. I adopted two little girls—daughters of two

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

unfortunate women who had been murdered. One was a sweet, graceful child so good and true. It is always a marvel to me how such a fair jewel could have come out of such loathsome environments. I took her with me to India some years ago, and there she died of tuberculosis. Her fair form was laid to test on a hill side facing snow-capped Kinchin-chinga. The other child is still with me—now grown up to be a loyal, true, and pure girl. But what of the children—what of the girls—who are left to be brought up in such pollution ?

After five years of slavery, after five years of legalised immorality—the people are "free". And what kind of a community emerges after five years of such a life ? Could it be a moral and self-respecting one ? Yet some argue in favour of this worse than barbarous system, that the free Indians are better off financially than would be in their own country ! I would ask you at what cost to the Indian people ? What have their women forfeited ? What is the heritage of their children ?

And for what is all this suffering and wrong against humanity ? To gain profits—pounds, shillings and pence for sugar companies and planters and others interested.

I beseech of you not to be satisfied with any reforms to the system of indentured labour. I beg of you not to cease to use your influence against this iniquitious system till it be utterly abolished—H. Dudley, Suva, Fiji, November 4.

अर्थात्, "श्रीमान्—एक ऐसे देश में रहते हुए जहाँ कि 'कुलीप्रथा' प्रचलित है, मनुष्य की आत्मा को अपने सजातीय लोगों के साथ छल, अन्याय और अमानुषिकता का बर्ताव होते देखकर, बार-बार पीड़ा पहुँचती है।

पन्द्रह वर्ष हुए, जब मैं प्रवासी भारतवासियों में ईसाई-धर्म का प्रचार करने के लिए फिजी में आयी थी। इसके पहले मैं पाँच वर्ष हिन्दुस्तान में रह चुकी थी। मैं यह जानती थी कि भारतवर्ष में गाँव के रहने वाले स्वभावतः डरपोक होते हैं और मुझे यह भी ज्ञात था कि उन लोगों को अपने पास के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिले के अतिरिक्त और किसी देश का ज्ञान भी नहीं होता, अतएव यह देखकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि ये लोग अपने देश से हजारों मील दूर फिजी को आने के लिए किस प्रकार प्रेरित किये गये। फिजी की भारतीय स्त्रियाँ मुझे देखकर प्रसन्न होती थीं, क्योंकि मैं पहले भारतवर्ष में रह चुकी थी और उनके साथ देश के विषय में बातचीत कर सकती थी। वे मुझे अपने दुखों को बताया करती थीं और मुझे सुनाया करती थीं कि किस प्रकार हम आरकाटियों के जाल में फँसीं। मैं यहाँ दो-एक उदाहरण देती हूँ :

एक स्त्री ने मुझसे कहा—'मुझसे और मेरे पति से झगड़ा हुआ, इसीलिए मैं क्रुद्ध होकर अपने सास के घर से माँ के घर को चल दी। रास्ते में सड़क पर मुझे एक आदमी मिला, उसने कहा 'कहाँ जाती हो ? मैं तुम्हें मार्ग बता दूँगा।' इसी बहाने वह आदमी मुझे डिपो ले गया और वहाँ से शर्तबन्दी में यहाँ भेज दी गयी।' एक दूसरी स्त्री ने कहा—'मेरा पति एक जगह काम करने के लिए गया था, उसने मुझे खबर भेजी कि तू यहाँ चली आ। मैं उसके पास जा रही थी कि मार्ग में मुझे एक आदमी मिला। उसने मुझसे कहा कि चलो मैं तुम्हें तुम्हारे पति के पास ले चलूँ। मैं उसकी जगह जानता हूँ। वह आदमी मुझे डिपो में ले आया। जब मैं डिपो में थी तो एक दिन मैंने अपने पति को वहाँ से जाते हुए देखा। मैं चिल्लायी, परन्तु मुझे चुप कर दिया गया। डिपो से मैं फिजी को भेज दी गयी।' एक हिन्दुस्तानी लड़की से उसके पड़ोसी ने कहा—'जा मुहर्रम का मेला देख आ।' मेला में वह लड़की बहका दी गयी और डिपो में भेज दी गयी। एक और स्त्री ने मुझसे कहा—'मैं घाट पर स्नान करने जा रही थी। रास्ते में एक स्त्री ने मुझे बहकाकर डिपो में भेज दिया।'

जब ये स्त्रियाँ डिपो में पहुँच जाती हैं तो उनसे कहा जाता है कि जब तक तुम खाने का खर्चा न दे दोगी और जब तक दूसरी चीजों का व्यय न दे दोगी तब तक तुम यहाँ से अपने घर नहीं जा सकतीं। वे बेचारी कहाँ से दे सकती हैं ? ये भीरु-हृदय और डरपोक स्त्रियाँ इस देश में भेज दी जाती हैं, और उन्हें यह भी नहीं मालूम होता कि हम कहाँ भेज दी गयी हैं ! वे खेतों पर काम करने के लिए गूँगे जानवरों की तरह लगा दी जाती हैं। जो काम उन्हें दिया जाता है, यदि वे उसे ठीक तरह नहीं करतीं तो पीटी जाती हैं,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन पर जुर्माना होता है ! यहाँ तक कि वे जेल में भी भेज दी जाती हैं। खेतों पर काम करते-करते उनकी चेष्टा बदल जाती है और उनके चेहरे भी बदल जाते हैं। कुछ अत्यन्त पीड़ित और विदीर्ण-हृदय दीख पड़ती हैं, कुछ उदास और उद्विग्न ज्ञात होती हैं और अन्य व्यथित और दुखित जान पड़ती हैं। बार-बार उनके म्लान-मुखों की आकृति मुझे याद आ जाती है।

यह तो शायद आपको ज्ञात ही होगा कि फी १०० पुरुष पीछे ३३ स्त्रियाँ फिजी में लायी जाती हैं। मैं इस व्यभिचारपूर्ण प्रथा के बारे में, जिसका विरोध कानून भी नहीं करता, विस्तारपूर्वक नहीं लिख सकता। इसके नतीजे का कुछ बोध आपको कराने के लिए यह कहना पर्याप्त होगा कि महीने-दो-महीने पीछे एक न एक फिजी-प्रवासी भारतवासी दुश्चरित्रता के कारण अपनी स्त्री को मार डालता है। इस कुली-प्रथा के भयानक और अत्यन्त निन्दनीय कारणों से जो अनाथ बच्चे पैदा होते हैं, उनका विचार करते हुए क्रोध से हृदय प्रज्वलित हो जाता है। मैंने दो लड़कियों को जिनकी कि माँ मार डाली गयी थी (और जिनके बापों ने फाँसी की सजा पायी थी) ग्रहण कर लिया था। उनमें से एक बड़ी ही सुन्दर और कोमल लड़की थी। यह बात मेरे लिये सर्वदा आश्चर्य-जनक रही है कि ऐसी कुत्सित और निन्दनीय स्थिति में वह प्यारी, सच्ची रत्नस्वरूपा लड़की कैसे पैदा हुई। कुछ वर्ष हुए, मैं अपने साथ उसे भारतवर्ष को ले गयी थी, वहाँ पर तपैदिक से वह मर गयी। हिम-मण्डित किनचिनचिंगा के सामने पहाड़ पर उसका सुन्दर शरीर गाड़ दिया गया। दूसरी लड़की अब तक मेरे पास है और वह बड़ी सच्ची, पवित्र और आज्ञाकारिणी कन्या है; परन्तु उन बच्चों की बाबत—उन लड़कियों की बाबत—तो विचार करो जो कि इस प्रकार की दूषित और कलंकित अवस्था में पाली जाती हैं।

पाँच वर्ष की गुलामी के बाद—पाँच वर्ष के कानून-प्रेरित दुराचारों के बाद ये लोग स्वतन्त्र हो जाते हैं। जिन लोगों ने पाँच वर्ष तक ऐसी बुरी तरह जीवन व्यतीत किया हो, उन लोगों से किस प्रकार का समाज संगठित होता है। क्या यह समाज सदाचारी और आत्माभिमानी हो सकता है? इस पर भी कुछ महाशय ऐसे हैं जो इस निष्ठुर और अत्यन्त असभ्य कुली-प्रथा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पक्ष में तर्क करते हैं और कहते हैं कि शर्तबन्दी के बाद स्वतन्त्र हुए प्रवासी भारतवासियों की आर्थिक स्थिति, अपने देश में रहने पर उनकी जो स्थिति होती उससे, उत्तमतर होती है।

मैं आप से पूछती हूँ कि इसमें भारतवासियों की कितनी अधिक हानि हुई है ? उनकी स्त्रियों ने कौन-सा अपराध किया है, जिसके लिए उन्हें यह दण्ड दिया जाता है और उनके बाल-बच्चे कैसी दशा में पैदा होते हैं ?

और फिर मनुष्य जाति के विरुद्ध यह अन्याय और क्लेशोत्पादक कार्य किस लिए किये जाते हैं ? इसलिए कि जिस से चीनी की कम्पनियों को, प्लैण्टरों को और दूसरे स्वार्थी लोगों को पौण्ड, शिलिंग और पैंस का लाभ हो।

मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप इस अन्यायपूर्ण कुली-प्रथा में किसी प्रकार के सुधारों पर राजी न हों। मैं आप से याचना करती हूँ कि आप बराबर इस प्रथा का विरोध करें, जब तक कि यह अत्याचारपूर्ण प्रथा जड़-मूल से नष्ट न हो जाय।

एच० डडले, सूबा, फिजी, ४ नवम्बर

इस पर टिप्पणी करते हुए India के सम्पादक ने कुमारी डडले के विषय में लिखा था—

Miss. Dudley, the writer of this pathetic letter, is the pioneer Indian missionary in Fiji. She is an Australian methodist and has done admirable and devoted service in undertaking the care of Indian orphan-girls whose mothers have been murdered and their father hanged and the result of sexual jealousy produced by the scarcity of women, which is one of the many blots upon the system of indentured labour."

अर्थात इस करुणापूर्ण चिट्ठी की लेखिका कुमारी डडले हैं, जो कि फिजी में प्रवासी भारतवासियों में ईसाई-धर्म का प्रचार करने वालों में अग्रणीय हैं। उन्होंने भारतवासियों की अनाथ लड़कियों की रक्षा कर के प्रशंसनीय परोपकार का कार्य किया है। कुली-प्रथा के कितने ही दोषों में से एक दोष यह है कि इसमें स्त्रियों की कमी होती है। इस कारण पुरुषों में स्त्रियों के लिए पारस्परिक ईर्ष्या उत्पन्न होती है। जो स्त्रियाँ दुराचार के कारण मार डाली

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी हैं और जिनके पति फलतः फाँसी पर चढा दिये गये हैं, उन्हीं की लड़कियों की रक्षा कुमारी डडले करती रही हैं।"

कुमारी डडले के पत्र पर टीका-टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं ! हम नहीं समझते कि हमारी सरकार फिजी में मजदूरों का जाना तो भी क्यों बन्द नहीं करती।

फिजी में श्री जे० डब्ल्यू० बर्टन साहब एक प्रसिद्ध ईसाई हैं। आप बड़े निष्पक्ष लेखक हैं। आप फिजी में कभी-कभी मेरे यहाँ आया करते थे। आपको न जाने कैसे यह विश्वास पैदा हो गया था कि मैं ईसाई हो जाऊँगा ! एक बार उन्होंने मुझसे ईसाई होने के लिए कहा भी था, मुझे अच्छी तरह याद है। मैंने यही उत्तर दिया था कि "पादरी साहब आप किस भ्रम में फँसे हुए हैं। मैं ईसाई होने वाला आदमी नहीं। अच्छा और तो और, आप मेरे यहाँ काम करने वाले इस लड़के को ही तर्क से ईसाई बना लीजिए !" पादरी साहब इस पर उस लड़के से बहस करने लगे। उस लड़के ने ऐसी युक्तिसंगत बातें पूछीं कि पादरी साहब दग रह गये। पादरी साहब ने एक पुस्तक में उस लड़के का जिक्र करते हुए लिखा है कि जिन भारतवासियों के छोटे-छोटे बच्चों में इतनी तर्क-बुद्धि हो, उनमें ईसाई-धर्म का प्रचार होना दुस्साध्य है।

अस्तु, इन्हीं बर्टन साहब ने Fiji of to-day नामक एक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक में आपने फिजी की वास्तविक स्थिति की आलोचना की है। यद्यपि हम बर्टन साहब के कुल विचारों से सहमत नहीं, पर उनके आत्मिक बल की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते। सत्य और तिस पर भी अप्रिय सत्य लिखने के लिए बड़े आत्मिक बल की आवश्यकता है, और 'फिजी आफ-टु-डे' को पढ़कर हम यह जान सकते हैं कि बर्टन साहब बड़े साहसी हैं। जिन प्लैण्टरों के डर के मारे हमारी सरकार कुली-प्रथा को बन्द करने में हिचकती है, उन्हीं प्लैण्टरों के विरुद्ध सच्ची बातें बर्टन साहब ने लिखी हैं। उदाहरणार्थ, दो-चार बातें उपरोक्त पुस्तक में से हम उद्धृत करेंगे।

गोरे लोगों के अमानुषिक अत्याचारों के विषय में बर्टन साहब लिखते हैं—

"The young and brutal overseers on sugar estates (of Australian and Newzealand origin) take all sorts of liberties with good

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

looking Indian women and torture them and their husbands in case of refusal. Sometimes compounders of medicine will call an Indian woman into a closed room pretending to examine her, though she may protest there is nothing the matter with her) and then torture her most indecently for the gratification of their lust and even for getting her to swear a charge against some Indian who may have incurred their displeasure. Women are known to have been fastened in a row to trees and then flogged in the presence of their little children."

अर्थात् "असभ्य और जवान ओवरसियर जो कि आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड के होते हैं, खूबसूरत हिन्दुस्तानी स्त्रियों पर मनमाने अत्याचार करते हैं और अगर वे स्त्रियाँ मना करती हैं तो उनको और उनके पति को अत्यन्त दुख देते हैं। कभी-कभी दवाखाने के कम्पाउण्डर किसी भारतीय स्त्री को एक बन्द कमरे में बुला लेते हैं और यह बहाना करते हैं कि आओ हम तुम्हारी डाक्टरी परीक्षा करें, चाहे वह बेचारी विरोध करे और कहे कि मुझे कोई बीमारी नहीं, मैं नहीं जाना चाहती, पर तब भी बलात् उसे कोठरी में ले जाते हैं फिर अपनी कामेच्छा पूर्ण करने के लिए अत्यन्त असभ्यता के साथ उस पर पाशविक अत्याचार करते हैं अथवा उसे इसलिए तंग करते हैं कि वह एक ऐसे भारतवासी के विरुद्ध गवाही दे दे जिससे कि उनकी कुछ अनबन हो गयी हो। सुना गया है कि स्त्रियाँ वृक्षों से एक कतार में बाँध दी गयी हैं और उनके छोटे-छोटे बच्चों के सामने उन पर कोड़े फटकारे गये हैं।"

भारतीय निस्सहाय अबलाओं पर ये अत्याचार होते हैं और हमारे यहाँ के धनी और सुशिक्षित आदमी भी यह कहते हुए पाये जाते हैं—"अजी ! हिन्दुस्तान की आबादी बहुत बढ़ गयी है, इसलिए यह जरूरी है कि बहुत-से मर्द और औरतें दूसरे मुल्कों और जजीरों में जाकर आबाद हों, वहाँ मजदूरों की माँग है और वहाँ वे मौज से रहेंगे।" ऐसे सुशिक्षित मनुष्यों से (यदि हम उन्हें सुशिक्षित कह सकते हैं) हमारी विनीत प्रार्थना है कि जरा आँखें खोलकर उपरोक्त अत्याचारों पर विचार करें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों की कमी के विषय में बर्टन साहब ने भी कुमारी डडले की भाँति ही लिखा है। बर्टन साहब का कथन है—'भारतवासियों की स्थिति में सबसे बड़ा दोष यह है कि यहाँ पर स्त्रियों की कमी है। इसका कारण वही कुली-प्रथा है। प्रति सौ पुरुष पीछे ३३ स्त्रियाँ यहाँ लायी जाती हैं। इसका फल यह होता है कि बलात्कार, अपहरण और व्यभिचार इत्यादि के ही अभियोग प्रायः कचहरियों में दीख पड़ते हैं। कचहरी की हरएक बैठक में दो-चार अभियोग इस तरह के आया करते हैं कि पुरुष ने अपनी स्त्री को परपुरुष-संगति के कारण मार डाला। समाजशास्त्र के अनुसार यदि विचार किया जाय तो इस दोष की जड़ Indenture system अर्थात कुली-प्रथा ही है। कोई एक दर्जन भारतवासी इस प्रकार हर साल फाँसी पर चढ़ा दिये जाते हैं।"*

मजिस्ट्रेटों के विषय में बर्टन साहब ने बहुत ठीक लिखा है। विस्तार-भय से हम उनके कथन का सारांश ही यहाँ दिये देते हैं।

"फिजी में बहुत कम मजिस्ट्रेट कानून पढ़े हुए हैं, वे गोरे रंग के होते हैं और थोड़ा लिखना-पढ़ना जानते हैं। बस मजिस्ट्रेट होने के लिए यही काफी है और प्रायः बहुत-सी जगहों में मजिस्ट्रेट ही मैडीकल आफिसर यानी डाक्टर का काम करते हैं। ताविन्नी नामक एक जगह में एक ही आदमी मजिस्ट्रेट District Medical Officer, जिले का डाक्टर, पुलिस का इन्सपैक्टर, जेल-खानों का सुपरिटेण्डेण्ट, बन्दरगाह का स्वामी, सड़कों का दरोगा और अपने छोटे जहाज का कप्तान है।"

देखा पाठक आपने, फिजी की सरकार ने अपने आफीसरों को कैसा सर्वशक्तिमान् बनाया है! ऐसे सर्वशक्तिमान मनुष्यों से यह आशा रखना कि ये लोग अपने कर्तव्य का पालन करेंगे, व्यर्थ है।

---

* In Fiji every sitting of the Assizes is bound to have two or three cases of tragedy to be traced sociologically to the root-evil of the Indenture system, *i. e.*, the paucity of women. Nearly a dozen Indians are thus hanged here every year. (Fiji of To-day)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्टन साहब का कथन है कि फिजी में पुलिस का प्रबन्ध ठीक नहीं और पुलिस संख्या में आवश्यकता से बहुत कम है। एक तो फिजी वैसे ही बहुत कम आबाद है और इस पर भी थाने और कचहरियाँ बीसियों मील की दूरी पर बसी हुई हैं।

The Inspector of Indian coolies only pays two visits a year to their miserable baracks where men and women are penned together like cattle and even these inspectors are for the most part not very keen about the grievances of Indians, as some of them are ex-employees of the C. S. R. Co. (Colonial Sugar Refining Company) which is the real king of the colony.

अर्थात भारतवासी कुलियों का इन्स्पैक्टर उनके क्षुद्र और अभागे घरों को देखने के लिए साल-भर में दो ही बार आता है। इन कोठरियों में स्त्री और पुरुष जानवरों की तरह भर दिये जाते हैं। और ये इन्सपेक्टर भी ज्यादातर भारतवासियों के दुखों पर खास तौर पर ख्याल नहीं करते, क्योंकि उनमें से कितने ही सी० एस० आर० कम्पनी के पुराने नौकर होते हैं। वास्तव में यही कम्पनी इस उपनिवेश की असली मालिक है।

स्टेट में भारतवासियों को कैसा जीवन व्यतीत करना पड़ता है, इस विषय में बर्टन साहब लिखते हैं—

"The difference is small between the state he now finds himself in, and absolute slavery.........The coolies themselves, for the most part frankly call it 'Nark' (hell)! Not only are the wages low, the tasks hard, and the food scant, but it is an entirely different life, from that to which they have been accustomed, and they chafe, especially first at the bondage...........No effort is made either by the Government or by the employers to provide the coolie with any elevating influence.........A company of course has no soul. So long as its labour is maintained in sufficient health to do its tasks, no more is required. The same may be said of its mules and bullocks. The children are allowed to run wild. No educational privileges are given. As soon as they reach the age of twelve they too must go to the field."

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जिस स्थिति में कुली को रहना पड़ता है उसमें और पूर्ण दासत्व में बहुत कम फर्क है। ज्यादातर कुली इसे स्पष्टतया नर्क कहते हैं। तनख्वाह कम होती है, काम बहुत कड़ा होता है और खाना कम मिलता है; परन्तु इन कष्टों के अतिरिक्त एक कष्ट यह भी होता है कि उन्हें ऐसा जीवन व्यतीत करना पड़ता है जोकि उनके पहले जीवन से बिलकुल भिन्न होता है। ये लोग जब पहले-पहल इस बन्धन में डाले जाते हैं तो बड़े संतप्त और क्षुब्ध होते हैं। न तो गवर्नमेण्ट और न कम्पनी ही उनकी उन्नति का कुछ प्रयत्न करती है। कम्पनी वालों के तो वास्तव में आत्मा होती ही नहीं। जब तक कम्पनी का काम मजदूर लोग भले प्रकार करते रहते हैं तब तक कम्पनी वालों को किसी बात की फिक्र नहीं। और यही बात कम्पनी के खच्चरों और बैलों के विषय में कही जा सकती है। लड़के-लड़कियाँ उद्दण्ड बना दिये जाते हैं। शिक्षा-सम्बन्धी कोई अधिकार उन्हें नहीं दिया जाता। ज्योंही वे १२ वर्ष के हुए कि उन्हें भी खेत में काम पर जाना पड़ता है।"

बर्टन साहब का यह कथन अक्षरशः सत्य है। फिजी की सरकार हमारी उन्नति के लिए कुछ नहीं करती, पर हम फिजी की सरकार को उलाहना क्यों दें, जब हमारी सरकार ही हमें आरकाटियों के फन्दे में फँसने देती है और थोड़े-से प्लैण्टर लोगों की प्रसन्नता के लिए हम ३० करोड़ भारत-वासियों के भावों और विचारों का कुछ भी ख्याल नहीं करती !!

खेत के कार्य के विषय में बर्टन साहब एक जगह लिखते हैं—

"The system of tasks prevails on the estates. So many chains of sugar-cane weeding or planting counted, for example, as task. For the satisfactory performance of this amount of work the coolie receives one shilling. He is expected to accomplish it in one day and the basis is that of an average man's ability. The women are placed on the same footing, but their tasks are lighter and the payment proportionately less. If a man fails to perform the task set him within the day, he is to be summoned to the court and may be fined or imprisoned for his slothfulness.........When the

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

coolie judges that the task is too hard, he has the right of appeal to the coolie inspector (a Government official) but as that gentleman is not seen oftener than once or twice a year, it is a somewhat limited privilege. Of course there is the magistrate to whom complaint can be made, but the court-house may be twenty or thirty miles away, and that is practically an impossible distance. It is not surprising, therefore that under such conditions it frequently happens, that the coolie takes the law into his own hands, tries the edge of his cane-knife upon the skull of the English overseer."

अर्थात् स्टेटों में 'टास्क' की प्रथा जारी है। गन्ने के खेत में इतने चेन लम्बी और इतनी चौड़ी जगह के नराने या बोने को एक 'टास्क' कहते हैं। अगर इस कार्य को अच्छी तरह कर ले तो कुली को एक शिलिंग मिलता है। कुली से आशा की जाती है कि वह इस कार्य को एक दिन में कर ले। यह आशा इसी आधार पर की जाती है कि एक साधारण मनुष्य इतना काम एक दिन में कर सकता। स्त्रियों के साथ भी ऐसा ही बर्ताव किया जाता है। लेकिन उनका काम कुछ हल्का होता है और इसलिए मजदूरी भी उसी हिसाब से उन्हें कम मिलती है। अगर कोई आदमी अपने काम को एक दिन में नहीं कर सकता है तो उसके नाम सम्मन आता है और अपनी सुस्ती के लिए उस पर जुर्माना हो सकता है और उसे कैद भी हो सकती है। जब कुली को अपना कार्य बहुत ही कड़ा ज्ञात हो तो उसको अधिकार है कि वह 'कुली-इन्सपेक्टर' से इसके लिए शिकायत करे, परन्तु यह महाशय साल भर में एक या दो बार से ज्यादा नहीं आते हैं, इसलिए यह 'अधिकार' भी एक संकुचित अधिकार ही है। कुली इन्सपेक्टर एक सरकारी नौकर होता है। हाँ, मजिस्ट्रेट के यहाँ भी कुली इसके लिए शिकायत कर सकता है; परन्तु कचहरी बीस मील या तीस मील दूर होती है और वस्तुतः इतनी दूर जाना कुली के लिए असम्भव है। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस स्थिति में प्रायः कुली कानून को अपने हाथ में ले लेते हैं और गन्ने काटने की छुरी को अंग्रेज ओवरसियर के सिर पर जमा देते हैं।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्टन साहब बहुत ठीक लिखते हैं, क्योंकि जब आप किसी जानवर को भी हर तरफ से घेर लेंगे और उसके बचने का कोई मार्ग न रहेगा तो फिर वह भी यही सोच लेगा कि 'मारो और मरो' और आखिर आदमी तो आदमी है। कुली इन्सपेक्टर साल में एक-आध दफे आता है; परन्तु तब भी वह हम लोगों की शिकायत कभी सुनता नहीं। मजिस्ट्रेट की कचहरी में जा किस तरह सकते हैं, क्योंकि छुट्टी तो कम्पनी देती ही नहीं और बिना छुट्टी लिये भागकर शिकायत करना मानो अपने आपको जेल में भेजना है। और फिर शिकायत भी कैसे करें ? जिनके यहाँ पाँच वर्ष तक अवश्यमेव काम करना है, उनकी शिकायत कैसी ? आज हमने शिकायत की, कल ही वह हमारे जूतों की ठोकरें लगाता है, काम और भी कठिन देता है, लिखता एक शिलिंग है रजिस्टर में, और देता छह पैंस ही है। यह नतीजा हमारी शिकायत का होता है।

बर्टन साहब का कथन है, सन् १९०७ में ११,६८९ कुलियों में से १४६१ पर अभियोग लगाया गया कि उन्होंने सुस्ती से काम किया और उन पर जुर्माने हुए या उन्हें जेल हुई। बर्टन साहब आगे चलकर लिखते हैं—

"Probably an even greater proportion of dissatisfaction did not make its appearance before the bench."

अर्थात 'इससे भी ज्यादा आदमी अपने कार्य से असन्तुष्ट थे, परन्तु वे कचहरी में नहीं लाये गये'। मतलब यही कि मारपीटकर बलात उनसे काम लिया गया। बर्टन साहब लिखते हैं—

"One of the saddest and most depressing sights, a man can behold if he have any soul at all is a 'coolie line' in Fiji."

अर्थात "यदि किसी मनुष्य में थोड़ा भी हृदय हो तो संसार में सबसे अधिक कष्टदायक और विषादोत्पादक दृश्य उसके लिए यह होगा कि वह फिजी में 'कुली लेन' को देखे।" बर्टन साहब ने हम भारतवासी कुलियों को 'Human agricultural instruments' यानी 'मनुष्य के रूप में खेती के यन्त्र' कहा है, और है भी बात ठीक, प्लैण्टर लोग हम कुलियों के साथ यही समझकर बर्ताव करते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्टन साहब लिखते हैं कि जो लोग खेत पर काम करते हैं उनमें कितने ही थोड़ा-बहुत पढ़े-लिखे होते हैं, उच्च जाति के और सभ्य भी होते हैं। ये लोग भारतवर्ष से आरकाटियों द्वारा बहकाये जाते हैं कि थोड़े ही दिनों में वहाँ पहुँचकर तुम मालामाल हो जाओगे। वे इन चिकनी-चुपड़ी बातों पर विश्वास कर लेते हैं और जब फिजी में पहुँचते हैं तो उन्हें कठिन से कठिन परिश्रम करना पड़ता है और ओवरसियरों की ठोकरें खानी पड़ती हैं, इत्यादि।

हाँ, कभी-कभी तो दुष्ट आरकाटी पढ़े-लिखों को भी बहका देते हैं। आरा जिले में एक एण्ट्रेंस तक पढ़ा हुआ लड़का आरकाटी ने बहका दिया। जब वह फिजी पहुँचा तो उसे भी खेत पर काम करने को दिया गया। जैसे-तैसे मरते-गिरते उसने कुछ दिन काम किया। तदनन्तर उसने एक पत्र मेरे नाम भेजा और उसमें लिखा 'मैं फाँसी लगाकर मर जाऊँगा नहीं तो मेरे बचाने का कोई उपाय करो। मुझसे इतना कठिन परिश्रम नहीं होता।' मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार लिख भेजा कि एक दावा इमीग्रेशन आफिस पर अपने बाप को चिट्ठी लिखकर करवा दो। यदि आपके पिता आपका व्यय इमीग्रेशन आफिस को दे देंगे तो शायद ईश्वर की कृपा से आप छुटकारा पा जायें। आखिर उसने ऐसा ही किया। बड़े ही प्रयत्न के बाद दासत्व से उसका पीछा छूटा। भारतवर्ष को आते समय उसे मैं अपने साथ लेता आया।

बर्टन साहब ने भारतवासियों के और भी कितने ही कष्ट लिखे हैं। उन सब का वर्णन तो हम फिर कभी करेंगे, क्योंकि हमारा विचार 'Fiji of to-day' का भावानुवाद प्रकाशित करने का है, परन्तु दो-चार बातें उनमें से यहाँ देना ठीक होगा।

(१) फिजी में सब जानवरों पर पहचान के लिए गरम लोहे से अंक डाले जाते हैं। यह कहना अनावश्यक है कि गौ पर भी यही अत्याचार किया जाता है। यह बात वास्तव में हम हिन्दुओं को दुख देने वाली है।

(२) नबुआ जिले में कुछ स्वतन्त्र भारतवासी बड़ी-बड़ी नावों पर माल लाद नदी द्वारा किनारे की कोठियों में बेचा करते थे। इस प्रकार रोजगार करते उनको पन्द्रह-बीस वर्ष हो गये थे। सन् १९१३ में एक गोरे ने नबुआ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी में दुकान खोली; परन्तु उसका माल इन नाव वालों के मुकाबले में कम बिकता था। उसने मैनेजर से कहकर नदी से सब नावें हटवा दीं। ये बेचारे लाचार होकर सब नाव हटा लाये और रोजगार से हाथ धो बैठे !

(३) मारीशस में जहाँ कि कुली जाना अब बन्द कर दिया गया है, भारतवासियों को व्यवस्थापक सभा के सभासद चुनने के लिए वोट देने का अधिकार है, पर फिजी में यह अधिकार भी नहीं। यह भी गनीमत है कि फिजी में चुंगी के मेम्बर चुनने के लिए भारतवासियों को वोट देने का अधिकार है। पर अब फिजी के गोरे लोग यह तुच्छ अधिकार भी छीनने की फिक्र में हैं ! वे एक बिल पेश करना चाहते हैं जिसमें कि वोट देने वालों को एक परीक्षा अंग्रेजी में देनी होगी, तब वह अधिकार मिलेगा।

यदि फिजी की सरकार इसे स्वीकृत कर ले तो वास्तव में उसका यह बड़ा भारी अन्याय होगा।

एक भी स्कूल नहीं, जिस पर भी तुर्रा यह कि शिक्षा की परीक्षा अंग्रेजी में ली जायगी ! क्या हम भारतवासी पेट में से अंग्रेजी पढ़कर निकलेंगे ?

(४) जो भारतवासी गन्ना उगाते हैं उन्हें अपने गन्ने जिस कीमत पर कम्पनी लेती है, देने पड़ते हैं, क्योंकि दूसरा कोई खरीदने वाला नहीं। जो भारतवासी न्यूजीलैण्ड या आस्ट्रेलिया को केले भेजना चाहे तो उसे गोरा दलाल अवश्य ही करना पड़ता है। यह दलाल स्वयं लाभ का अधिकांश अपने लिये रख लेता है।

(५) फिजी में कोई ऐसे अमीर भारतवासी नहीं हैं जो कलकत्ता और बम्बई से माल सीधा अपने नाम मँगा लें, इसलिए कुछ यूरोपियन लोगों की कम्पनी ही माल मँगाती हैं। ये कम्पनी छोटे-छोटे भारतवासी बजाजों और दूकानदारों से मनमाना नफा लेती हैं।

इन बातों पर टीका-ठिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं।

आगे चलकर बर्टन साहब कुली-प्रथा के विषय में लिखते हैं।

"The system is a barbarous one, and the best supervision

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

can not eliminate cruelty and injustice. Such a method of engaging labour may be necessary in order to carry out the enterprises of capital, but there is something dehumanising and degrading about the whole system; it is bad for the coolie; it is not good for the Englishman."

अर्थात "कुली-प्रथा बड़ी निष्ठुरतापूर्ण है और अच्छी से अच्छी देखभाल भी इसमें से निर्दयता और अन्याय को दूर नहीं कर सकती। पूंजी लगाकर व्यवसाय करने के लिए मजदूर रखने की यह पद्धति भले ही आवश्यक हो, पर यह सम्पूर्ण प्रथा भ्रष्ट, अपकृष्ट और मनुष्यत्व नष्ट करने वाली है। कुली लोगों के लिए यह बुरी है और अंग्रेजों के लिए भी यह अच्छी नहीं।"

उपरोक्त कष्टों को सहते हुए भी स्वतन्त्र भारतवासी फिजी का कितना उपकार कर रहे हैं, यह कहने की आवश्यकता नहीं। बीस हजार एकड़ भूमि को भारतवासी जोतते-बोते हैं, यानी ५५८० एकड़ गन्ना, २००० एकड़ केला, ११५८ एकड़ मक्का, ६३४७ एकड़ धान इत्यादि।

राज्य-प्रबन्ध

फिजी ब्रिटिश सरकार का एक उपनिवेश है। अंग्रेज सरकार की ओर से वहाँ गवर्नर नियत होकर जाता है। गवर्नर की सहायता के लिए व्यवस्थापक और कार्यकारिणी सभाएँ हैं। इन सभाओं का सभापति गवर्नर होता है। व्यवस्थापक सभा में गवर्नर के चुने हुए दस सरकारी अफसर सदस्य होते हैं। फिजियन लोगों के सरदारों की सभा अपनी ओर से दो सदस्य भेजती है और छह सदस्य सर्वसाधारण द्वारा चुने जाते हैं। गवर्नर कार्यकारिणी सभा का काम, चीफ जस्टिस, अटार्नी जनरल, नेटिव कमिश्नर, इमीग्रेशन विभाग के एजेण्ट जनरल और रिसीवर जनरल की सहायता से करता है। बाहर से आये हुए माल पर जो कर लगाया जाता है वही अधिकतर वहाँ आमदनी का जरिया है। सन् १९११ में कुल आमदनी २,४०,३०४ पौण्ड १४ शिलिंग हुई, इसमें से १,४६,६२८ पौण्ड ६ शिलिंग ३ पैंस आमदनी उस महसूल से हुई जो बाहर से आयी हुई वस्तुओं पर लगाया गया था। जो आदमी व्यापार करते हैं उन्हें लाइसेन्स लेना पड़ता है। विशेष-विशेष पेशे वालों पर भी कर लगता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। सन् १९११ ई० में Building Tax Ordinance घर बनाने का कानून पास हुआ और सब घरों पर कर लगने लगा। फिजी के आदिम निवासियों में प्रत्येक बालिग पुरुष को १० शिलिंग से लेकर १ पौण्ड तक प्रतिवर्ष टैक्स देना पड़ता है। फिजी की जमीन पर वहाँ के आदिम निवासियों का अधिकार है। यह जमीन पट्टे पर उठायी जाती है। सरकार पट्टे के रुपयों को इकाट्ठा करके फिजियन जमींदारों में बाँट देती है।

कृषि और व्यापार

फिजी में तीन चीजों की खेती ज्यादातर होती है—गन्ना, केला और नारियल। फिजी की भूमि गन्ने के लिए विशेषतया उपयोगी है और नदियों और समुद्र के किनारे की जमीन में तो बड़ी कसरत से गन्ना पैदा होता है। मुख्यतया छह जिले गन्ने की खेती के लिए प्रसिद्ध हैं—

रेवा	१०००० एकड़	में	गन्ने की खेती	होती है
वा	१४०००	,,	,,	,,
लतौका	१५०००	,,	,,	,,
नबुआ	६०००	,,	,,	,,
राकीराकी	१२००	,,	,,	,,
लवासा	१०५००	,,	,,	,,

अकेली सी० एस० आर० कम्पनी ही ६० हजार टन चीनी प्रतिवर्ष तैयार करती है। केला भी फिजी में बहुतायत से होता है। वैसे तो केला फिजी में सैकड़ों वर्षों से होता है; परन्तु सन् १८४८ ई० में चीन से केले के पौधे लाये गये थे। चीनी पौधे कद में बहुत छोटे होते हैं और तूफान और आँधी उन्हें विशेष हानि नहीं पहुँचा सकती। सन् १९०९ से १९११ तक ४१,१७२ डिब्बे केले आस्ट्रेलिया को और १,१७,४७९ डिब्बे केले न्यूजीलैण्ड को भेजे गये।

इनके अतिरिक्त कपास, कॉफी, मक्का, तम्बाखू, अण्डी, चावल इत्यादि भी फिजी में पैदा होते हैं। रस्सी इत्यादि बनाने के लिए केतकी भी फिजी में पैदा की गयी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमीग्रेशन विभाग

प्राय: तीन तरह के आदमी फिजी में शर्तबन्दी में काम करते हैं : (१) भारतवासी, (२) फिजी के आदिम निवासी, (३) पालीनीशियन लोग।

इनमें आदिम निवासियों को रखने में तो ज्यादा खर्च पड़ता है और वे मजदूरी भी नहीं करते, पालीनीशियन लोगों ने अब अत्याचारों से तंग आकर शर्तबन्दी में काम करना बन्द कर दिया है। अतएव बेचारे भारतवासियों को ही सैंकड़ों मुसीबतों के सहते हुए और मार खाते हुए कुलीगीरी का काम करना पड़ता है। कलकत्ता और मद्रास में सरकारी इमीग्रेशन एजेण्ट हैं। ये लोग आरकाटियों (Recruiters) को नौकर रखते हैं। ये आरकाटी लोग हमारे भोले-भाले भाइयों को बहकाया करते हैं। कोई चौबों की शक्ल में मथुरा में घूमता है तो कोई हरिद्वार में पण्डा बना बैठा है, कोई रियासत में कहता है कि 'कुलियों को २२ रुपये माहवारी नौकरी हम दिलवाते हैं। हमारा यह काम स्वार्थ का नहीं, यह गवर्नमेण्टी काम है', तो कोई कानपुर में सेठ बना हुआ जेब में घड़ी डाले हुए और हाथ में छड़ी लिये हुए कहता है 'हम तुमको नौकरी दिलवायेगा, कलकत्ते में हमारी जमैका नाम की धर्मशाला बन रही है। हम नौ आने रोज देगा।' कोई डॉक्टर बन जाता है तो कोई सिपाही के भेष में घूमता हुआ गाँव वालों को बहकाता है। तात्पर्य यह कि ये धूर्त आरकाटी पुराने जमाने के राक्षसों की तरह नाना प्रकार के भेष धारण करके हमारे भाइयों को बहकाया करते हैं। एक समाचार-पत्र के सम्पादक ने अपने एक सम्पादकीय लेख में लिखा था।

"In no country in the world would this state of matters be tolerated for a moment and we think the position serious."

अर्थात "संसार के किसी भी देश में ये बातें सह्य न होंगी, हम इस स्थिति को गम्भीरतापूर्वक ध्यान देने योग्य समझते हैं।"

आगे चलकर सम्पादक जी ने लिखा है :

"There is now a number of recruiting agents.........who have done all that man can do to treat the labourers as a preserve for them to plunder.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Contractors are everywhere plundering and seizing the labourer and selling him for something like Rs. 210 or more per head, of which the poor labourer receives not even a pinch of salt. Thus the very essence of scoundrelism, an absolute traficing in human flesh, of which the responsible Government takes no notice, is tolerated everywhere, while schemes permitting of the labourer, proceeding to the labour districts in a state, where all the comfort which he desires, are sternly suppressed.

अर्थात "अब बहुत-से आरकाटी पाये जाते हैं, जिन्होंने यह समझ रखा है कि मजदूर हमारे लूटने के लिए ही बनाये गये हैं और जिन्होंने मजदूरों को बहकाने और बेचने में कोई उपाय बाकी नहीं छोड़ा। ये ठेकेदार लोग जगह-जगह मजदूरों को बहका रहे हैं और पकड़ रहे हैं और २१० रुपये प्रति मनुष्य के हिसाब से बेच रहे हैं। इन २१० रुपये में उस बेचारे मजदूर को एक कानी कौड़ी भी नहीं मिलती। यह बदमाशी, मनुष्यों का यह क्रय-विक्रय, हर जगह पर सह्य समझा जाता है, और गवर्नमेण्ट जो हमारी रक्षा की उत्तरदायी है इस पर ध्यान भी नहीं देती। परन्तु किसी रियासत के एक जिले में मजदूरों के भेजने के लिए तो स्कीम तैयार की जाती है—चाहे इन रियासतों में मजदूरों को अभीष्ट आराम और सुख हों—तो वह स्कीम बड़ी सख्ती के साथ रद्द कर दी जाती हैं।"

उपरोक्त कथन सर्वथा सत्य है, परन्तु इसे सुनता कौन है ? रियासतों में मजदूर नहीं भेजने चाहिए। क्यों ? इसलिए कि ऐसा करने से हिन्दुस्तानियों को लाभ होने की सम्भावना है ! हमारे आरकाटी सेठों की जो ट्रिनीडाड, जमैका, क्यूबा, नेटाल, हौण्डूरास, फिजी नामक धर्मशालाएँ हैं (क्योंकि आरकाटी लोग इन टापुओं को अपनी धर्मशाला बताते हैं) उन्हीं को मजदूरों के भेजने की आवश्यकता है !

इस विषय को हम यहीं छोड़ते हैं, आगे उपसंहार शीर्षक अध्याय में इस पर विस्तृत रूप से लिखेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमीशन की नियुक्ति

सन् १९१३ ई० में भारतवर्ष से एक कमीशन नियुक्त हुआ, सरकार ने इस कमीशन में दो आदमी मुकर्रर किये थे। एक तो मिस्टर मकनील साहब और दूसरे खुरजा निवासी सेठ नत्थीमल के भतीजे श्रीयुत् चिम्मनलाल जी। जब हम लोगों ने सुना कि कमीशन आ रहा है तो हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। ये लोग सितम्बर के महीने में फिजी पहुँचे। यद्यपि अभी हम इस कमीशन के कार्यों की आलोचना करना ठीक नहीं समझते, तथापि इस विषय में थोड़ा-सा निवेदन हमें करना है। जब कोठियों के गोरे लोगों को यह ज्ञात हुआ कि कमीशन आने वाला है तो कई दिन पहले से उन्होंने हमारे भाइयों को धमकाना आरम्भ किया! उन्होंने भारतवासियों से कहा "देखो तुम्हारे लिये कमीशन आ रहा है। अगर तुमने हमारे खिलाफ एक भी बात कही तो फिर समझ लेना कि बस तुम्हारी आफत आ गयी। कमीशन वाले तो दो-चार दिन में यहाँ से चले जायेंगे और तुम्हें हमारे यहाँ पाँच वर्ष तक काम करना है। खबरदार! यदि एक भी बात मुँह से निकाली, नहीं तो हम घूँसों से तुम्हारा मुँह तोड़ देंगे। इस प्रकार डराये गये लोगों ने कमीशन के सामने क्या कहा होगा, यह आप स्वयं सोच सकते हैं। जब कमीशन के सदस्य लतौका में पहुँचे तो मिस्टर मैकनील तो दौरे पर गये, लेकिन श्रीयुत् चिम्मनलाल जी कुछ अस्वस्थ होने के कारण लतौका होटल में ही रहे। एक दिन क्या हुआ कि एक गोरे ओवरसियर ने एक भारतवासी के इतने घूँसे मारे कि बेचारा अधमरा हो गया, घूँसों के मारे उसके मुँह से खून गिरने लगा और उसके दो दाँत भी टूट गये! उसी दशा में वह उन दाँतों को हाथ पर रखकर चिम्मनलाल जी के पास लाया और कुल हाल कह सुनाया। श्री चिम्मनलाल जी ने उसे एक चिट्ठी देकर थाने में जाने के लिए कहा। वह थाने को जा रहा था कि बीच में ओवरसियर साहब मिल गये और उन्होंने उसे खूब धमकाया और कहा 'सब्र करो, चार दिन बाद चिम्मनलाल चले जायेंगे, क्या चिम्मनलाल तुम्हारे बाप हैं? पाँच वर्ष के लिए हम तुम्हारा बाप है। कमीशन के जाने पर हम तुम्हारी गर्मी सब निकाल देंगे, वह बेचारा इस धमकी में आ गया और चुप रह गया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन-जिन कोठियों में कमीशन गया वहाँ प्लैण्टर लोगों के सामने ही हमारे भाइयों से प्रश्न किये गये। अत्याचारी के सामने उसके विरुद्ध गवाही देना बहुत ही कठिन काम है। यह काम और भी कठिन हो जाता है, जब पाँच वर्ष उस अत्याचारी के नीचे और काम करना हो। कमीशन के सदस्य नोकोमोदो भी गये थे, जहाँ से कि वाइनी वकासी नामक कोठी एक मील थी। इसी कोठी में कुन्ती नामक चमारिन रहती है। खेद है कि कमीशन के सदस्यों ने कुन्ती से पूछताछ करने का कष्ट ही नहीं उठाया।

हम लोगों ने श्रीयुत् चिम्मनलान जी की सेवा में एक पत्र द्वारा निवेदन किया था। इस पत्र में अपने कष्टों का हाल लिखा गया था और सुधार के लिए प्रार्थना की गयी थी। पत्र का सारांश यह था :

"जितने ओवरसियर होने चाहिए, सब विवाहित होने चाहिए। इन लोगों का भारतीय रीति-रिवाज और हिन्दी भाषा से थोड़ा-बहुत परिचित होना आवश्यक है, जिससे कि वे हम लोगों के दुख-सुख को समझ सकें।

प्राय: कुली-इन्सपेक्टर ओवरसियर या बड़े साहब के घर पर जाकर ब्राण्डी उड़ाते हैं। उसका कर्तव्य है कि खेत में जाकर हम लोगों के कष्टों की जाँच करें और उनके निवारणार्थ प्रयत्न करें। जो आदमी ओवरसियर का काम कर चुका हो, उसे कुली-इन्सपेक्टर नियुक्त नहीं करना चाहिए, क्योंकि जो आदमी पहले ओवरसियरी का काम कर लेता है उसके दिल में दया और शील का लवलेश भी नहीं रहता। कुली-इन्सपेक्टर भी विवाहित होने चाहिए। उनके लिए यह अत्यन्त आवश्यक होना चाहिए कि वे हिन्दी भाषा बोल सकें और समझ सकें। प्रति मास उन्हें प्रत्येक कोठी में जाकर रिपोर्ट लिखकर लानी चाहिए।

जो लोग भारतवर्ष से आकर यहाँ मर गये हैं, उनका धन सरकारी खजाने में जमा है। हम पूछते हैं कि सरकार ने उसे किस काम में व्यय किया ? क्या सरकार का यह कर्तव्य नहीं है कि उस धन से दो-एक स्कूल ही बनवा दे, जिससे कि हम लोगों को अपने बच्चों को पढ़ाने का सुभीता हो !

बर्टन साहब ने अपनी पुस्तक Fiji of To-day के २४३वें पृष्ठ में लिखा है—'कम्पनी नहीं चाहती है कि हिन्दुस्तानी लोग पढ़ें।' क्या कम्पनी यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती है कि हम भारतवासी सदा अशिक्षित और प्लैण्टरों के गुलाम ही बने रहें ?

जो हमारे भाई भारतवासी अपनी युवावस्था में कम्पनी का काम करते हैं, वे जब बूढ़े हो जाते हैं तो उनकी परवरिश करने वाला कोई नहीं रहता। वे बेचारे फिजी में भूखों मरते हैं। कुली-एजेण्टों का यह कर्तव्य है कि अपाहिज आदमियों को भारतवर्ष भेज दें। इसका व्यय सरकार को उस रुपये में से देना चाहिए जोकि मृत भारतवासियों का सरकारी खजाने में जमा हो।

हिन्दुस्तानियों को जो वेतन वहाँ मिलता है वह बहुत थोड़ा है। इस पर भी सरकार खाद्य-पदार्थों पर बहुत कर लगाती है। उदाहरणार्थ, दाल पर फी टन ३ पौण्ड ड्यूटी है, इसलिए इतने कम वेतन में काम नहीं चल सकता। यहाँ की कुछ चीजों का भाव सुन लीजिए। आटा एक शिलिंग का ६ पौण्ड, चावल एक शिलिंग का ४ पौण्ड और दाल एक शिलिंग की ४ पौण्ड।

जो गोरे लोग बलात् हमारे देश की स्त्रियों पर पाशविक अत्याचार करते हैं, उन्हें खूब कड़ी सजा मिलनी चाहिए।

सरदार वह होना चाहिए जिसको कुली-एजेण्ट खुद मँगवायें और स्वय उसे कोठी में भेजें। सरदार का सम्बन्ध सीधा कुली-एजेण्ट से होना चाहिए, न कि ओवरसियरों से। ओवरसियर लालच देकर गिरमिटिया सरदारों से खूबसूरत औरतों को मँगवाते हैं और जो नहीं लाते तो सरदारी से उनको छुड़ा देते हैं। सरदारों को उनके सब कर्तव्य समझा देने चाहिए। कुली एजेण्टों को चाहिए कि सरदारों के काम पर कड़ी दृष्टि रखें। बर्टन साहब ने 'फिजी ऑफ टू डे' में २१० पन्ने पर लिखा है कि एक ओवरसियर ने एक सरदार से कहा कि तुम जाकर एक रूपवती स्त्री ले आओ। वह सरदार लिखा-पढ़ा होशियार था, उसने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। इसी वास्ते ओवरसियर ने सरदार को खूब मारा और उल्टी उसके ऊपर नालिश कर दी। बेचारे सरदार को छह महीने की जेल हुई। पादरियों ने इस पर लाट साहब के पास अर्जी भेजी। तब कहीं वह सरदार जेल से छूटा। वह दुष्ट ओवरसियर कोठी से निकाल दिया गया।

जिन कोठियों में १५ से अधिक छोटे-छोटे बच्चे होते हैं, उनमें एक नर्स

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखी जाती है, जोकि स्त्रियों के काम पर जाने पर उनके बच्चों की देखभाल करती है। नर्स के काम के लिए हिन्दुस्तानियों से सलाह लेकर विश्वसनीय स्त्रियाँ रखनी चाहिए। कितनी ही धूर्त नर्सें कुट्टिनी का काम करती हैं।

भूमि के विषय में भी हम सबको बहुत कष्ट है। हम लोगों को फिजियन लोगों को पैसा देना पड़ता है, तब वे बड़ी मुश्किलों के बाद राजी होते हैं। इस पर भी जो सरकार की मर्जी में आया तो जमीन मिली और नहीं तो सब प्रयत्न और धन व्यर्थ जाता है। दिन पर दिन हम लोगों के लिए कड़े कानून बनाये जाते हैं। गोरा जितनी जमीन लेना चाहे उसको उतनी मिल सकती है। वह सस्ती से सस्ती २ शिलिंग से ३ शिलिंग बीघे तक खरीद सकता है। कानून बनाने वाले वे ही गोरे हैं जिनकी हजारों बीघे भूमि है और जोकि हम भारतवासियों को भूमि देना पसन्द नहीं करते। हमारे भाई जब जंगल काटकर जमीन तैयार करते हैं तब उनकी जमीन छीन ली जाती है। जिन के पास चार या पाँच वर्ष से सरकारी जमीन है, उनको सरकार से नोटिस मिला है कि जब सरकार को आवश्यकता होगी तब छह महीने का नोटिस देकर सरकार निकाल देगी।"

हमारे दुर्भाग्य से श्रीयुत् चिम्मनलाल जी बीमार पड़ गये और कमीशन उन स्टेटों में जा भी नहीं सका जो कि जंगल में बसी हुई हैं और जहाँ कि गोरे लोग हमारे भाइयों को और भी अधिक कष्ट देते हैं।

श्रीयुत चिम्मनलाल जी दबेऊलेबू जिला रेवा में फिजियनों के एक स्कूल का उत्सव देखने के लिए गवर्नर के साथ गये थे। वहाँ पर एक फिजियन जमींदार ने श्रीयुत् चिम्मनलाल जी से हाथ मिलाते वक्त अपनी भाषा में कहा था—"क्या आप नहीं जानते हैं कि आपके देश की स्त्रियाँ गिरमिट में काम करने के लिए इस देश में आती हैं और उन पर यहाँ तरह-तरह के जुल्म किये जाते हैं ? क्या इन स्त्रियों को देखकर आपकी आँख से लोहू नहीं निकलता ?" खेद है कि श्रीयुत् चिम्मनलाल जी फिजी की भाषा नहीं जानते थे। मैं वहीं पीछे खड़ा हुआ था और चाहता था कि कोई दुभाषिया इस बात को श्री चिम्मनलाल जी को समझा दे, देखें वे इसका क्या उत्तर देते हैं ! पर खेद है, ऐसा नहीं हुआ। यदि ऐसा होता भी तो एक सहृदय भारतवासी के लिए

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो इसका केवल एक उत्तर था, वह यह कि लज्जा से मुख नीचा करके दो आँसू बहाता।

मेरी राम-कहानी

फिजी में अपने पहुँचने का हाल मैं लिख चुका हूँ। मैं नौसूरी नामक कोठी में भेज दिया गया था। वहाँ पर ओवरसियर ने आठ फुट लम्बी आठ फुट चौड़ी कोठरी दी, जिसमें मुझे और एक मुसलमान तथा एक चमार को रहने के लिए आज्ञा दी गयी ! मैंने उस ओवरसियर से कहा कि मैं इन लोगों के साथ रहना ठीक नहीं समझता। पर ओवरसियर ने मुझसे ललकारकर कहा—"जाओ हम नहीं जानटा, रहना होगा।" तत्पश्चात मैंने अपने साथियों से कहा कि आप ही कृपा करके किसी दूसरी कोठरी में चले जाइए। जैसे-तैसे वे रात को एक दूसरी कोठरी में जाने को राजी हुए। प्रातःकाल में हम तीनों लोगों के लिए एक लोहे की हाँड़ी मिली; उसे वे लोग Iron Cast कहते हैं। इस हाँड़ी की प्रशंसा करना मेरी शक्ति के बाहर है। वह काली हाँड़ी मानो कुली-प्रथा की कालिमा को प्रकट कर रही थी। कोई दो घण्टे में मैंने उसे साफ किया, और फिर उसमें चावल चढ़ा दिये। मैंने चावल चढ़ाये ही थे कि इतने में वह चमार और मुसलमान ओवरसियर को लेकर चले आये। उन लोगों ने शिकायत कर दी कि वह हाँड़ी हमको नहीं दी गयी। ओवरसियर ने मुझे आज्ञा दी कि पहले इन लोगों को हाँड़ी दो, पीछे तुम भोजन बनाना। मुझे हाँड़ी देनी पड़ी। फिर मैं एक स्वतन्त्र भारतवासी के यहाँ गया और उससे हाँड़ी लेकर अपना काम चलाया। पहले छह महीने में जो सामान एक सप्ताह का मुझे मिलता था, उसे मैं चार दिन में ही खा डालता था और शेष दिन स्वतन्त्र भारतवासियों से माँग-जाँच कर काम चलाता था और अपनी क्षुधा देवी को नमस्ते करके सन्तोष धारण करने की प्रार्थना किया करता था। परन्तु मेरी दयालु क्षुधा देवी कम्पनी के दाल-चावलों को देखते ही सुरसा का पथ पकड़ लेती थी। यद्यपि मैं कुली-प्रथा की कालिमा को प्रकट करने वाली भैरवदेव के रंग की हाँड़ी को बड़ी शीघ्रता से माँजता था तथापि वह अपनी कालिमा को नहीं त्यागती थी। इतने में मेरी दयालु क्षुधादेवी क्षण-क्षण में मुझे ललकार-ललकारकर ओवरसियरों से कुछ ही कम दुख देती थी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सम्पूर्ण रसद को चार ही दिन में चट कर पाँचवें दिन कालोनियल शुगर रिफायनिंग कम्पनी, फिजी के कर्मचारी और रसद का एक्ट पास करने वालों को आशीष दिया करती थी। क्षुधादेवी कभी मुझसे युद्ध में हार जाती थी तब मैं खींच-खाँच कर किसी सप्ताह में रसद पाँच दिन को कर लिया करता था। एक दिन मैंने अपने मैनेजर से कहा कि मुझे रसद और मिलना चाहिए। मैनेजर ने कहा "वेल टुम आडमी हाय कि घोरा" ? मैंने उत्तर दिया "था तो आदमी लेकिन इस कुदाली ने मुझे घोड़ा बना दिया है। इसी कुदाली ने मेरी क्षुधादेवी को जगाया है।" मैनेजर हँस पड़ा और कहा अच्छा चिट्ठी ले जाओ। मैं वह चिट्ठी खाने का सामान देने वाले साहब के पास दुकान में ले गया। २ पौण्ड यानी एक सेर कच्चे चावल मिले। मैनेजर के पास ले आया। उसने कहा हमारे सामने राँधो, मैंने भात बनाकर तैयार किया। उसके सामने तीन हिस्सा खा गया, तब तो मैनेजर साहब चकित हुए। उसके दूसरे सप्ताह से मुझे रसद कानून से एक सेर अधिक मिलने लगी। चौथे सप्ताह में एक व्यक्ति ने मैनेजर से कहा कि मुझे भी रसद अधिक मिले, मेरे भी खाने-भर को नहीं होती। तोताराम को तो मिलने लगी है। मैनेजर ने कहा, कानून के मुताबिक दिया जायगा। उस दिन से मेरे लिये भी अधिक मिलना बन्द हो गया। उसी दिन से क्षुधादेवी फिर सताने लगी। पहले मुझे भी फुल टास्क यानी पूरा काम दिया गया था, पर वह इतना अधिक था कि मुझसे कभी नहीं हो सकता था। ओवरसियर मुझे बहुत तंग किया करता था। ज्योंही मेरे काम को देखने आता, दो-चार थप्पड़ मुँह में जमा जाता था ! एक बार मैंने मन में ठान लिया कि चाहे कैद में भले ही जाना पड़े, परन्तु इस दुष्ट ओवरसियर को मारे बिना न छोड़ूँगा। एक दिन यह ओवरसियर साहब कोट-पतलून पहने और हैट लगाये हुए झूमते-झूमते आये और आते ही एक घूँसा मेरे सिर में जमाया। गोरे लोग घूँसे लगाने में तो बड़े तेज होते हैं, उस घूँसे के मारे मेरा सिर भन्ना गया। मैं चुप रह गया, ओवरसियर साहब क्यों मानने वाले एक डबल घूँसा फिर लगा ही तो दिया। अबकी बार मुझे क्रोध आ गया। मैंने कुदाली तो रख दी और एक साथ ओवरसियर की टाँगों में सिर डालकर ऐसा पटका कि धड़ामधम नीचे चित्त जा पड़े। गिरते ही मैंने दोनों पाँव साहब की छाती पर जमा दिये और फिर मारना शुरू किया। इतने घूँसे मारे कि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओवरसियर साहब के दो दाँत टूट गये, मुँह से लोहू निकलने लगा, कनपटी फूट गयी। पाठक ! यह न समझें कि यह काम मैंने बड़ी वीरता से किया था, मुझे इस बात का डर था कि कहीं अगर यह उठ बैठा तो मुझे मार डालेगा, और मार डालना उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी, क्योंकि पीछे से वह बेकसूर (not guilty) सिद्ध होकर छूट जाता। बस इसी डर के मारे मुझ में चौगुना जोश आ गया था। साहब के इतने घूँसे लगे कि वे नशे में हो गये और नीचे से बोले That will do अर्थात बस करो, भाई बस। मैं उन दिनों अंग्रेजी बिलकुल नहीं समझता था। मैं नहीं समझा कि 'दैट विल डू' क्या होता है ? मैं इसका तात्पर्य यही समझा कि अभी इसमें बल है ! बस फिर मैंने दाहिने हाथ के घूंसे जमाना प्रारम्भ किया। अब की बार ओवरसियर साहब ने हाथ हिलाकर कहा 'वौय नो' नो के मानी मैं समझ गया और मैंने उसे छोड़ दिया। तत्पश्चात मैंने उससे कहा "अगर तुमने नालिश की तो समझ लेना जान से मार डालूंगा।" वह ओवरसियर टूटी-फूटी हिन्दी बोल लेता था और थोड़ा समझ भी लेता था। उसने मुझसे कहा कि यह बात किसी से कहना नहीं। मैं उसका अभिप्राय समझ गया। बात यह थी कि अगर उस कोठीवाले को खबर लग जाती कि गोरा एक कुली से पिट गया है तो वह गोरे को निकाल देता और यह कहता कि जो आदमी १०० कुलियों से काम लेने के लिए रखा गया है, यदि वह एक से पिट गया तो वह नौकरी के योग्य नहीं ! मैंने भी सिर हिला दिया कि मैं नहीं कहूँगा। फिर ओवरसियर साहब ने कहा "आज से हम-तुम Friend (दोस्त) हुए।" यद्यपि मैं उसकी भाषा नहीं समझता था, पर उसकी आकृति और कहने के ढंग से उसका भाव समझ लेता था। और वह जो दो-चार अशुद्ध हिन्दी के शब्द बोलता था उन्हें मैं अच्छी तरह से समझ लेता था। फिर उसने अपने पास से कई पैंस देकर नारियल मँगाये और एक नारियल मेरे हाथ में दिया कि इसको तोड़कर इसका पानी पियो और एक अपने हाथ में लिया। पीते वक्त ओवरसियर साहब ने कहा "Good luck" (गुड लक)। मैं समझा तो नहीं; परन्तु मुझे उसके चेहरे को देखकर हँसी आ गयी और मैंने कहा कि आज तो साहब समझ गया होगा कि 'गुड लक' कैसा होता है !

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी में डाक्टरी परीक्षा

एक बार एक डाक्टर साहब परीक्षा लेने के लिए आये। मैंने सोचा कि यदि कहीं इन्होंने मेरे लिये Full task लिख दिया तो बस काम करते-करते दम निकल जायगा। कई सौ मजदूर डाक्टर साहब को घेरकर खड़े हो गये और डाक्टर साहब अपनी स्टैथस्कोप लगाकर जाँच करने लगे। जब मैंने देखा कि मेरे नाम के पुकारे जाने में थोड़ी देर है, मैं एक फर्लांग दूर चला गया और वहाँ से भागता हुआ आया। डाक्टर साहब ने मुझे भागते हुए नहीं देख पाया, क्योंकि वहाँ भीड़ बहुत थी। मेरा नाम पुकारा गया, मैं हाजिर हुआ। मेरा दिल दौड़ने के कारण धड़कने लगा था। ज्योंही स्टैथस्कोप लगायी गयी त्योंही डाक्टर ने कहा, "क्या तुम्हें कोई बीमारी हो गयी है ?" मैंने कहा "मुझे दमा हो गया है।" डाक्टर ने कहा, "कलकत्ते वाले डाक्टर ने तो यह लिखा ही नहीं कि तुम्हें दमा है।" मैंने कहा "उन दिनों मेरी बीमारी दवी हुई थी और मुझे बहुत कुछ सेहत थी। अब दमा फिर उखड़ आया है।" डाक्टर साहब बातों में आ गये और उन्होंने 'आधा काम' लिख दिया।

इस प्रकार मुझे झूठ बोलना पड़ा। अगर मैं चालाकी न चलता तो मेरे नाम पूरा काम लिखा जाता और काम करते-करते मेरे प्राण जाते, जेलखाने में पड़ा-पड़ा भूखों मरता और ओवरसियरों की मार खानी पड़ती सो अलग। अस्तु, मैं मर्त्यलोक के यमराज ओवरसियर की मार से एक प्रकार बच गया, अब यमलोक के यमराज मुझे इस झूठ बोलने के लिए भले ही दण्ड दें, मैं उसे सहर्ष सह लूँगा। मैं आधा काम करता था और ६ पैंस रोज कमाता था। ५ वर्ष तक मुझे जो-जो कष्ट भोगने पड़े उन्हें मैं ही जानता हूँ। पाँच वर्ष बाद जब मैं स्वतन्त्र हुआ तो मेरे ऊपर १५ शिलिंग का कर्ज था। लीजिए पाठक ! मैंने ५ वर्ष तक कठिन परिश्रम करके और भूखों मर के क्या कमा पाया ! केवल मैं ही नहीं, हमारे सैकड़ों भाई जो गिरमिट से छुटकारा पाते हैं तो उनके पास एक कौड़ी भी नहीं होती। हाँ दो-चार आदमी भले ही ऐसे निकलें जो गिरमिट में काम करके दस-पाँच रुपये प्रति वर्ष बचा लें। स्वतन्त्र होने पर मैंने कुछ पौण्ड उधार लेकर थोड़ी-सी जमीन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पट्टे पर ली और गन्ने की खेती करने लगा। जब मुझे खेती में कुछ लाभ हुआ तो मैंने सोचा कि अब घर चिट्ठी भेजनी चाहिए। मैंने बीच में चिट्ठी यह सोचकर न भेजी थी कि यदि मेरे घर वालों ने मेरे कष्टों का वर्णन पढ़ा तो वे घबड़ा जायेंगे। जब फिजी में आये हुए मुझे ८ वर्ष हो गये तो मैंने एक पत्र अपने भाई को, जो कलकत्ते में मुनीमगीरी करता था, भेजा। इस पत्र में मैंने विस्तारपूर्वक उन सब कष्टों का वर्णन किया था जोकि मुझे फिजी में गिरमिट में काम करने में सहने पड़े थे।

मैं अपने हृदय में विचार करता था कि मेरा भाई मेरा पता पाकर बड़ा प्रसन्न होगा। जब पत्र को भेजे हुए डेढ़ महीना हो गया तो उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। अन्त में एक पत्र कलकत्ते से आया। ज्योंही मुझे पत्र मिला, मुझे बड़ी उत्कण्ठा उसके खोलने की हुई। पत्र खोलते ही मैंने पढ़ा—"तुम्हारे भाई ने ज्योंही तुम्हारे कष्टों का विवरण पढ़ा कि उसके दिल में बड़ा धक्का लगा और उसे बड़े जोर से बुखार चढ़ आया, दो दिन तक बराबर बुखार चढ़ा रहा, तीसरे दिन अकस्मात उसका देहान्त हो गया!" इस हृदय-विदारक समाचार को सुनकर मुझे दुख हुआ और मुझे बाल्यकाल की सब घटनाएं एक-एक करके स्मरण आने लगीं, जबकि मैं अपने भाई के साथ भोजन किया करता था। जब मैं उन कष्टों का स्मरण करता हूँ जो कि उस दुष्ट आरकाटी के कारण मुझे सहने पड़े तो मेरे हृदय के घाव फिर हरे हो जाते हैं और मेरे मुख से सहसा यही शब्द निकलते हैं—'हा! परमात्मन् यह कुली-प्रथा कब बन्द होगी और इन धूर्त आरकाटियों से हमारे भाइयों का कब पिण्ड छूटेगा!'

इधर जब मेरी माँ को मेरा कुछ समाचार न मिला तो उसे बड़ी भारी चिन्ता हुई। गाँव के लोग कहते हैं कि एक बार एक साधु लड़का मेरे ग्राम हिरनगौ में आया। कहा जाता है कि उस लड़के की सूरत मुझसे कुछ मिलती-जुलती थी। ज्योंही मेरी माँ ने सुना कि कोई साधु मेरी शक्ल का आया हुआ है त्योंही वह उस साधु के पास गयीं और दौड़कर उसे पकड़ लिया और कहने लगीं—"बेटा क्यों साधु हो गया है? अब तो अपनी दुखित माँ पर दया कर और जटा मुड़ाकर अपने घर में रह।" उस साधु ने कहा, "माँ!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तेरा लड़का नहीं हूँ। मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, मैं तो क्षत्रिय हूँ।" पर मेरी माँ का मस्तिष्क मेरी याद करते-करते इतना विचलित हो गया था कि वह साधु की बात पर विश्वास ही नहीं करती थी! आखिरकार वह साधु तंग होकर मेरे गाँव से भाग गया!

कोई दो वर्ष परिश्रम करके मैंने फिजियनों की भाषा पढ़ी और उसे अच्छी तरह समझने और बोलने भी लगा। एक वर्ष तक मैंने बढ़ई का काम सीखा, तदनन्तर धातुकार का भी काम मैंने बहुत दिनों तक सीखा था। फोटो लेना मैंने इस उद्देश्य से सीखा था कि मैं खेतों पर भारतीयों के चित्र लूँ! मैंने छिपकर ऐसे कितने ही चित्र लिये थे, जिनमें गोरे लोग भारतीय स्त्रियों और पुरुषों को पीट रहे थे। मेरा विचार इन चित्रों को 'सरस्वती' मासिक पत्रिका में छपवाने का था। लेकिन एक दिन जब मैं सूबा शहर को गया हुआ था तो एक अपरिचित मनुष्य बनावटी चिट्ठी मेरे नाम की लेकर आया और सब तसवीरें माँगकर ले गया! घर आकर मैंने चिट्ठी पढ़ी तो उसकी लिपि कुछ मेरी लिखावट से मिलती थी। इसी से उसका दाँव चल गया। मैंने बहुत चाहा कि मामला चलाऊँ; परन्तु वह मनुष्य लापता हो गया और मुझे स्वदेश को आना था, इसलिए मैं चुप हो गया। तसवीर जाने के दो दिन बाद मुझको एक सरकारी सिपाही ने आकर हुक्म सुनाया कि आज से किसी खेत में कम्पनी या कोठी वालों के मजदूरों की तसवीर न खींचना। अगर उदूल हुक्मी करोगे तो अभियोग चलाया जायगा और सजा होगी।

यह तो पहले लिख चुका हूँ कि मैं खेती करने लगा था। एक बार सन् १९१० ई० में जबकि मेरी गन्ने की खेती तैयार थी, एक बड़ा भारी तूफान आया और मेरी तमाम खेती नष्ट हो गयी। तत्पश्चात मैंने फिर उधार लेकर कार्य आरम्भ किया। परमेश्वर की कृपा से फिर थोड़ा-बहुत लाभ होने लगा।

मैं प्रायः यह किया करता था कि अपना काम अपने नौकरों पर छोड़कर कोठियों में जाया करता था और वहाँ जाकर अपने भारतीय भाइयों की दशा देखा करता था और उन्हें उनकी भलाई की सलाह दिया करता था। फिजी की बीसियों कोठियाँ मैंने स्वयं जाकर देखी थीं और उनके समाचार ब्रिटिश इण्डियन एसोसियेशन को दिये थे। उपरोक्त सभी भारतीय भाइयों के दुख-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवारणार्थ यथाशक्ति प्रयत्न करती थी। सभा का पत्र-व्यवहार मैं हिन्दी में किया करता था।

कोठी वाले कितने ही गोरे मुझसे इतने नाराज हो गये थे कि कितनी ही कोठियों में मेरा जाना बन्द करवा दिया था! जिन कोठियों में मैं अपने भारतीय भाइयों से मिलने जाता था वहीं वे मुझे निकलवाने का यथाशक्ति प्रयत्न करते थे। एक बार मैं एक कोठी में घूमते-घूमते पहुँचा। कोठी के भीतर घुसने की तो मुझे आज्ञा थी नहीं, अतएव मैं सड़क के किनारे बैठकर जोर से भजन गाने लगा। भजन गाने का मेरा उद्देश्य यही था कि जब कोई गाना सुनेगा तो अवश्य मेरे पास मेरा गाना सुनकर आयेगा। कितने ही आदमी कोठी के बाहर सड़क पर मेरे निकट आ गये। मैंने गाना बन्द कर उनसे बातचीत करना प्रारम्भ किया। बातें करते-करते मेरी दृष्टि एक मुसलमान युवती पर पड़ी। उसकी आकृति को देखकर यह ज्ञात होता था कि मानो वह अभी रोये देती है! उस स्त्री की छोटी लड़की उसके निकट खड़ी हुई थी। मैंने उस स्त्री से पूछा, "क्या तुम्हें कोई खास तकलीफ है?" यह सुनते ही उस स्त्री की अश्रुधारा बहने लगी और उसने रोते-रोते मुझे अपना हाल सुनाना प्रारम्भ किया। उसने कहा, "मेरा नाम ललिया है और मेरे पति का नाम इस्माइल। कई वर्ष हुए, जब मैं अपने पति के साथ कानपुर में रहती थी। मेरा पति स्टेशन से यात्रियों का बोझा ढोया करता था और इस तरह आठ-दस पैसे जो कमाता था उसमें हम तीनों—यानी पति, मैं और यह छोटी लड़की गुजर करते थे। एक दिन मेरा पति मजदूरी करने के लिए गया हुआ था, मैं घर पर थी। इतने में एक आदमी मेरे घर पर आया और उसने मुझसे कहा, 'तुम यहाँ बैठी हो और वहाँ तुम्हारे मालिक के बड़ी चोट आ गयी है! वह कई सन्दूक लिये जा रहा था, वह सन्दूक उसके पाँव पर गिर पड़े और कई जगह बड़ी भारी चोट पहुँची। अगर तुम उसे देखना चाहो तो मेरे साथ चलो।' मैं घबरा गयी और उसके साथ चलने को राजी हो गयी। यह मुझे लेकर एक बड़े मकान के दरवाजे पर पहुँचा। मुझसे कहा देखो इसी में तुम्हारा मालिक है, यह डॉक्टर साहब का मकान है। बिना डॉक्टर साहब की आज्ञा के इसमें जाना ठीक नहीं। थोड़ी देर ठहरो अभी डॉक्टर साहब आते होंगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी देर बाद ही एक आदमी कोट-पतलून पहने चश्मा लगाये आ पहुँचा। जो आदमी मुझे घर से लिवा लाया था उसने डॉक्टर साहब से कहा, "देखिए डॉक्टर साहब यह उसी आदमी की औरत है जिसका कि आप इलाज कर रहे हैं। यह अपने मालिक से मिलना चाहती है।" डॉक्टर साहब ने कहा, "अभी हम नहीं मिलने देगा। कैसे अहमक हो समझते नहीं ! इस वक्त उसके दिल पर बड़ी भारी चोट है। उसकी जान आफत में है। यदि उसने अपनी औरत को देखा तो इसमें शक नहीं कि उसकी जान निकल जायगी और इस औरत को भी बहुत घबराहट होगी। अभी चार-पांच दिन उसका इलाज हम कर लें, फिर उससे मिला लेना, वह कहीं भागा नहीं जाता है।" पहले आदमी ने कहा "हुजूर इसके पास कुछ खाने को नहीं है, यह कहाँ जाय ?" डॉक्टर साहब ने कहा, "अच्छा इसका और इसकी लड़की का यहीं खाने का इन्तजाम कर दो।" इस प्रकार मैं अपनी इस छोटी लड़की के साथ वहीं रह गयी। दस दिन तक वह आदमी मुझे बहकाता रहा कि अब तुम्हारे मालिक को सेहत हो रही है, आज नहीं कल उससे मिलना। दस दिन बाद फिर वे ही डॉक्टर साहब आये। मैंने उनसे अर्ज की कि मुझे मेरे मालिक से मिला दो। डॉक्टर साहब बोले "तुम अभी तक यहीं बनी हो ! वह तो कोई चार-पाँच दिन हुए हमारे शफाखाने से चला गया। हमने बहुत कहा कि अभी आराम नहीं हुआ ठहर जा, पर उसने कहा कि मेरे बाल-बच्चे भूखों मरते होंगे मैं नहीं ठहरूँगा।" इसलिए ना-उम्मीद होकर मैं वहाँ से निकल आयी। मार्ग में तीन आदमी दूर-दूर पर खड़े हुए मुझे मिले। पहले आदमी ने कहा—कहाँ जाती हो ? किस की तलाश में हो ? मैंने सारा किस्सा कह सुनाया। उस आदमी ने कहा—तुम्हारे आदमी का नाम इस्माइल था। मैंने कहा—हाँ। तब उसने बड़े अचम्भे के साथ कहा—अरे वह तो कलकत्ते भेज दिया गया, उसे आरकाटी ने बहका दिया था। मैं बड़ी घबरायी। थोड़ी दूर पर दूसरे आदमी ने भी ये ही बातें कहीं। आगे चलने पर तीसरे आदमी ने कहा, "पीछे तुम्हारा पति अपने घर पर आया था, उसे तो आरकाटी ने बहका दिया कि तेरी स्त्री कलकत्ते भेज दी गयी; इसलिए वह तो कलकत्ते गया। अगर तुझे उससे मिलना हो तो जल्दी तू भी कलकत्ते जा। मैं कलकत्ते जाने पर राजी हो गयी। उस आदमी ने मुझे बहुत-से आदमियों के साथ जो कलकत्ते आ रहे थे, भेज दिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मैं कलकत्ते की डिपो में पहुँची तो मुझे पता लगा कि मेरा मालिक तीन दिन हुए फिजी भेज दिया गया ! इसके बाद मैं भी इस लड़की के साथ यहाँ भेज दी गयी। आज तीन वर्ष हो गये, मैं इस कोठी में काम करते-करते मरी जाती हूँ, मुझे नहीं मालूम मेरा मालिक कहाँ है। मैं तुम्हारा बड़ा अहसान मानूंगी, अगर तुम उससे मुझे मिला दो।" इतना कहकर वह स्त्री फूट-फूटकर रोने लगी। और उसकी लड़की भी अब्बा-अब्बा कहकर रोने लगी। मैंने उससे कहा बेटी ! तुम मुझे अपने मालिक का नाम, अपनी सास-ससुर वगैरह का नाम और अपना सब हाल लिखवा दो, मैं तुम्हारे मालिक को तलाश करूँगा। मैंने अपनी डायरी में उसका सब हाल लिख लिया और उसे तसल्ली देकर मैं स्टीमर पर सवार होकर कई घण्टे के बाद सूबा आ पहुँचा। सूबा आते ही मैं एजेण्ट जनरल के पास गया और मैंने उनसे प्रार्थना की कि कृपया आप अपने आफिस के क्लर्क से कहकर एक सूची बनवा दीजिए जिसमें कि गत तीन वर्ष में आये हुए इस्माइलों की कोठियों के पते हों। एजेण्ट जनरल ने मुझसे कहा, "हम यह काम करवाने का तुम्हारा नौकर नहीं है।" मैंने एक व्यक्ति से सुना कि एक कोठी में इस्माइल नामक एक पुरुष है। मैंने पहले उसी कोठी में जाने का निश्चय किया। जब मैं स्टीमर पर सवार होकर उस कोठी में पहुँचा तो मैंने इस्माइल को बुलवाया और मैंने उसकी स्त्री के विषय में पूछा। इस्माइल के मुख पर कुछ पसीना आ गया और वह घबराकर बोला—"मेरी औरत ललिया थी।" मैंने उससे कह दिया कि तुम्हारी औरत अमुक कोठी में, जो यहाँ से ५०० मील पर है, काम करती है। मैं तुम्हारी ओर से एक अर्जी पन्द्रह दिन की छुट्टी के लिए एजेण्ट जनरल के नाम लिखे देता हूँ, तुम इस पर अपने दस्तखत करो। अर्जी लिखकर मैंने अपने साथ ली। तदनन्तर नाव पर सवार हो मैं उस कोठी में पहुँचा जहाँ कि ललिया काम करती थी। जब मैंने उससे यह हाल कहा तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई और प्रसन्नता के कारण उसकी आँखों में आँसू आ गये। मैंने उसकी ओर से भी एक अर्जी एजेण्ट जनरल के नाम लिखी। दोनों अर्जी लेकर मैं एजेण्ट जनरल के पास गया। एजेण्ट जनरल बड़ा नाराज हुआ और उसने कहा—"जाओ हम नहीं जानटा, कोठी वाला जाने।" मैं बड़ा हैरान था कि क्या करूँ। अन्त में मैंने सोचा, चलो कोठी वाले के पास ही चलें और उसी से छुट्टी के लिए कहें। तत्पश्चात मैं ललिया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लेकर कोठी वाले के पास गया। कोठी वाले ने हम दोनों को फटकारकर कहा—"मानते ही नहीं, क्यों मुझे तंग करते हो! हमारा काम 'सफर' करेगा।·········गन्ना कटने के लिए तैयार है। जाओ हम छुट्टी नहीं देगा।"

लौटकर मैंने विचार किया कि किसी दूसरी तरकीब से अभी छुट्टी दिलाऊँगा। इधर क्या हुआ, इस्माइल काम करते-करते और अपनी स्त्री व लड़की की फिक्र से बीमार पड़ गया। उसने अर्जी दी, वह अस्पताल भेज दिया गया। अस्पताल के डॉक्टर ने उसे काम पर वापस कर दिया और लिख दिया, इसे कोई रोग नहीं, बहाना बनाता है। वेचारा फिर काम पर वापस आया। अब की बार उसकी तबियत और भी ज्यादा खराब हो गयी। वह अस्पताल फिर भेजा गया, बड़े डॉक्टर ने उसे देखा और लिख दिया "इसको कोढ़ की बीमारी है, यह बहुत कमजोर है इससे काम नहीं होगा। अगर बैठे-बैठे इसको तनख्वाह देना चाहते हो तो भले ही दो। बेहतर तो यह होगा कि इसे इण्डिया को वापस भेज दो। जहाज चौदह या पन्द्रह दिन में जाने वाला है।' कोठी के मालिक ने यही विचार कर लिया कि इसे शीघ्र ही हिन्दुस्तान भेज देना चाहिए। जब मुझे यह खबर लगी तो मैं फिर उस अस्पताल में पहुँचा। मैंने इस्माइल से पूछा तो उसने कहा कि डॉक्टर के कहने के मुताबिक ये मुझे जबरदस्ती अभी हिन्दुस्तान भेजने वाले हैं। अब मैं अपनी औरत से कैसे मिलूंगा? मैंने सोचा कि यह तो बड़ा अनर्थ हुआ। मैं झटपट ही एक बैरिस्टर के पास गया और मैंने उसे दो गिन्नी अपने पास से इसलिए दीं कि किसी तरह प्रयत्न करके इसे अभी हिन्दुस्तान जाने से रोक लिया जाय। बैरिस्टर साहब ने प्रयत्न करके पूछताछ की और कहा कि अब तो उसका जाना निश्चित हो गया। अब क्या हो सकता है? जहाज छूटने वाला था। मैं वहाँ से चलकर जहाज के निकट आया, देखा तो इस्माइल को जहाज में सवार पाया। इस्माइल की हार्दिक अभिलाषा थी कि वह अपनी स्त्री से मिले। भारतवर्ष को जहाज छूटते वक्त इस्माइल के नेत्र अश्रुओं से परिपूर्ण थे। यद्यपि असह्य दुख के कारण मुझसे वह कुछ कह नहीं सकता था; पर उसकी आकृति से दुख टपकता था। मुझे भी उस समय हार्दिक खेद था। मैंने दिल में सोचा कि मेरा प्रयत्न सब व्यर्थ गया और मैंने ललिया से जो प्रतिज्ञा की उसे मैं पूरी न कर सका।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने जहाज के एक खल्लासी से कह दिया था कि इस्माइल की देखभाल रखना। यह बीमार है, इसे यथाशक्ति सहायता देना। जहाज रवाना हो गया, मैं 'जैसी भगवान की इच्छा' कह के घर लौट आया। जब वह जहाज भारतवर्ष से फिजी लौटा तो उस खल्लासी ने मुझसे कहा कि हिन्दुस्तान की जमीन पर पैर रखते ही कलकत्ते में इस्माइल की मौत हो गयी। मुझे यह सुनकर बड़ा खेद हुआ, मैं सोचने लगा कि यह समाचार मैं ललिया को कैसे सुनाऊँगा! वह इस्माइल से मिलने की राह देखती होगी। मैं कड़ा दिल कर के ललिया की कोठी को रवाना हुआ। वहाँ पहुँचकर पहले तो मैंने उससे कहा कि तुम्हारा पति हिन्दुस्तान भेज दिया गया। वह फूट-फूटकर रोने लगी। मैंने तसल्ली देकर कहा, अब तुम्हारे गिरमिट के थोड़े दिन बाकी हैं तुम्हें भी हिन्दुस्तान चार महीने बाद भिजवा देंगे। दूसरे दिन इतवार को मैंने उसकी मृत्यु का हाल सुना दिया। सुनते ही ललिया को मूर्च्छा आ गयी और वह बीमार पड़ गयी। बड़ी कठिनाई से १५ दिन में उसे थोड़ा-बहुत आराम हुआ। अपने दुख को वह स्वयं ही जानती थी। इस दुर्दशा में भी कोठी वाले उससे बराबर काम लेते रहे! धिक्कार है सहस्रवार ऐसे पौण्ड, शिलिंग और पैसों पर जिनके लिए प्लैण्टर लोग मनुष्य जाति पर ये अत्याचार करते हैं। ये अर्थपिशाच और धनलोलुप प्लैण्टर कहते हैं :

"Material resourses of the colonies cannot be developed without these labourers."

अर्थात बिना इन मजदूरों के उपनिवेशों के द्रव्य-साधनों में उन्नति नहीं हो सकती। हमारी समझ में मनुष्यों को दासत्व-शृंखला में बाँधने से यह लाख गुना बेहतर है कि उपनिवेश ऊजड़ और कंगाल बने रहें।

आस्ट्रेलिया की सैर

हम लोगों में बहुत-से ऐसे होंगे जो यह भी नहीं जानते होंगे कि आस्ट्रेलिया में सौ-दो सौ भारतवासी रहते हैं या नहीं। इस बात का कारण हमारे अनुत्साह के सिवाय और क्या हो सकता है? हम लोगों के हृदय में इस बात की इच्छा ही उत्पन्न नहीं होती कि दूसरे देशों में रहने वाले अपने भारतीय भाइयों के विषय में कुछ जानने का प्रयत्न करें। और न हो, तो सैर करने के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए ही हम में से दस-पाँच आदमियों को ऐसे द्वीप-द्वीपान्तरों में जाना चाहिए, जहाँ कि भारतवासी बसे हुए हैं। हमारे यहाँ के राजा-महाराजा और सुशिक्षित धनवान पुरुष भी जब सैर करना चाहते हैं तो सीधे इंगलैण्ड या फ्रांस को चल देते हैं।

एक बार सैर करने के लिए मैंने आस्ट्रेलिया जाने की इच्छा की। आस्ट्रेलिया की सरकार से मुझे आज्ञा लेनी पड़ी। मैं सिडनी पहुँचा। तत्पश्चात मैं वहाँ के एक होटल में चला गया और सात शिलिंग देकर वहाँ ठहर गया। गोरे लोगों से अलग मुझे एक कमरा दिया गया। मैं उस कमरे में जाकर लेट रहा। मेरे पहुँचते ही वहाँ हल्ला हो गया 'काला आदमी आया है।' बस, फिर क्या था, कितनी ही स्त्रियाँ और पुरुष मुझे देखने के लिए मेरे कमरे पर आये! भीड़ के मारे मेरी तबियत हैरान थी। मेरे विषय में कोई कुछ कहता था, कोई कुछ। एक स्त्री मुझसे बोली "औल ब्लैक, हैव यू गौट नो सोप ?" पर मैंने उसकी बात का उत्तर देना ठीक न समझा। मुझे इस बात का डर था कि अगर कहीं इन लोगों को यह ज्ञात हो गया कि मैं थोड़ी अंग्रेजी बोल और समझ सकता हूँ तो ये बातें पूछते-पूछते मेरा पिण्ड न छोड़ेंगे। मैंने एक साथ जोर से फिजियन भाषा में कहा, "लाकौ सालेवू न औसो ज्यौसौ" अर्थात 'चले जाओ, कोठरी बहुत भर गयी है।' यह सुनकर बहुत-से लोग चले गये, लेकिन तब भी कितनी ही स्त्रियाँ वहीं खड़ी रहीं। मुझे प्यास लगी तो मैंने अपना लोटा बेग में से निकाला। लोटे को देखते ही वे चिल्लाने लगीं "Come, Come, look at this water pot" यह आवाज सुन कर और भी भीड़ इकट्ठी हो गयी। भीड़ में से एक स्त्री बोली यह मँजता है, दूसरी बोली यह कभी नहीं माँजा जाता, इतने में एक तीसरी स्त्री उसे उठा ले गयी और नहाने के साबुन से उसे साफ करने लगी। भला नहाने के साबुन से लोटा किस तरह साफ हो सकता था? तदनन्तर किसी अन्य स्त्री ने कहा कि इसमें Sand soap (बालू का साबुन) लगाओ। ऐसा किया जाने पर वह लोटा साफ हो गया। इसके बाद मैंने पाखाने जाना चाहा और मैं लोटा लेकर चलने लगा तो फिर सबको आश्चर्य हुआ। जब मैं पाखाने से लौटा तो होटल की मैनेजर स्त्री ने कहा 'You have spoiled our latrine.' तुमने हमारा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शौचालय खराब कर दिया मैंने क्रुद्ध होकर कहा, 'Then give me back my seven shillings, I will not stay here.'—"तो मेरे सात शिलिंग लौटा दो। मैं यहाँ नहीं ठहरूँगा।"

मैंने सोचा कि यहाँ रहने से बहुत-सी असुविधाएँ होंगी, चलो किसी हिन्दुस्तानी भाई के यहाँ चलकर ठहरें।

यहाँ पर दो-चार बातें आस्ट्रेलिया-प्रवासियों के विषय में कहना अनुचित न होगा। आस्ट्रेलिया में कोई ६६४४ भारतवासी हैं। आस्ट्रेलिया में अब और भारतवासी नहीं बसने पाते। "शिक्षा की परीक्षा" जिसका कि आविष्कार नेटाल ने किया था, आस्ट्रेलिया में भी प्रचलित है। आस्ट्रेलियन अफसर नये आने वाले भारतवासी की परीक्षा लेते हैं कि वह अंग्रेजी पढ़-लिख सकता है या नहीं, और जबरदस्ती भारतवासियों को फेल कर देते हैं और आस्ट्रेलिया में नहीं घुसने देते। यह मुफ्त की परीक्षा देते समय परीक्षा देने वालों के जो हार्दिक भाव होते हैं उन्हें वे ही अच्छी तरह जान सकते हैं, जिन्होंने कभी इस तरह की परीक्षा दी हो। आप उस बेचारे की स्थिति पर तो ध्यान दीजिए जो कि सात समुद्र पार से अनेक कष्ट सहता हुआ बहुत रुपये खर्च करके, आया हो और फिर परीक्षा में फेल करके वापस कर दिया जाय। क्या ही अच्छा हो यदि 'दुष्टं दुष्टवदाचरेत्' की नीति से भारतवर्ष में आने वाले आस्ट्रेलियन लोगों की हिन्दी में परीक्षा ली जाय !

लेकिन यह खैरियत है कि आस्ट्रेलियन लोग दक्षिण अफ्रीका वालों की तरह बहुत निर्दयी नहीं हैं। जो ६६४४ भारतवासी इस समय आस्ट्रेलिया में बस गये हैं, उन पर आस्ट्रेलियन सरकार अत्याचार नहीं करती। यद्यपि आस्ट्रेलिया में नये भारतवासी नहीं बसने पाते, पर सैर करने के लिए या जलवायु के परिवर्तन के लिए मैलबोर्न नगर के वैदेशिक विभाग (Department for External Affairs) से आज्ञा मिल जाती है। परन्तु इसमें भी एक बड़ी बाधा है, वह यह कि १०० पौण्ड की जमानत देनी पड़ती है। जो भारतवासी आस्ट्रेलिया में बस गये हैं, उनमें अधिकतर पंजाबी, सिख और पठान हैं। सिख लोग ज्यादातर गेहूँ की खेती करते हैं और पठान लोग ऊँट रखते हैं। पढ़े-लिखे ये लोग बिलकुल नहीं। परन्तु हर्ष की बात है कि ये लोग यूरोपियन लोगों की तरह जमीन व घर खरीद सकते हैं, राजनीतिक अधिकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी उनको प्राप्त हैं, चुंगी की मेम्बरी के लिए वोट भी दे सकते हैं। सर्व-साधारण की संस्थाओं में जा सकते हैं और होटलों में ठहर सकते हैं। पुलिस भी उन पर कोई विशेष अत्याचार नहीं करती।

पहले कुछ निम्न कोटि के गोरों ने भारतवासी सिखों और पठानों से छेड़छाड़ की थी; परन्तु जब उसके प्रत्युत्तर में भारतवासियों ने दो-चार डण्डे जमा दिये तो फिर छेड़ने का साहस उन्हें न हुआ! आस्ट्रेलियन लोगों में प्रायः यह भाव प्रचलित हो गया है कि भारतवासी बड़ी जल्दी क्रुद्ध हो जाते हैं और लाठी लेकर सीधे हो जाते हैं, इसलिए इनसे छेड़छाड़ करना ठीक नहीं! कुछ भी क्यों न हो, हम यह अवश्य कहेंगे कि प्रायः आस्ट्रेलियन लोग दक्षिण अफ्रीका वालों से हमारे साथ बर्ताव करने में कई गुने अच्छे हैं। हाँ, एक बात बड़े आश्चर्य की है, वह यह कि आस्ट्रेलियन लोग इस बात पर कोई आपत्ति नहीं करते कि हिन्दुस्तानी पुरुष आस्ट्रेलियन स्त्रियों से विवाह करे। उनकी पालिसी यह है कि चूंकि हिन्दुस्तानी आस्ट्रेलिया में रुपया कमाते हैं, इसलिए उन्हें उस रुपये को यहीं खर्च करना चाहिए।

आस्ट्रेलियन औरतें बड़ी खर्चीली होती हैं और जो कोई उनसे विवाह करता है तो उसकी आय का अधिकांश मेमसाहब ही खर्च कर डालती हैं! पठान लोगों ने ही अधिकतर आस्ट्रेलियन स्त्रियों से विवाह किया है, और थोड़े-बहुत सिख भी ऐसे हैं जिन्होंने कि इन स्त्रियों के साथ शादी की है। इन स्त्रियों को अथवा इनकी सन्तति को ये लोग आस्ट्रेलिया से किसी दूसरी जगह नहीं ले जा सकते। आस्ट्रेलियन सरकार की यह बात न्यायसंगत नहीं है। यह बात सच है कि हमारे देश के लोगों ने निर्धन आस्ट्रेलियन स्त्रियों से विवाह किया है, पर इससे यह अवश्य प्रकट होता है कि आस्ट्रेलियन लोग काले रंग से बहुत घृणा नहीं करते।

होटल से मैं चला आया और किसी हिन्दुस्तानी का घर तलाश करने लगा। अकस्मात मुझे एक जानता-पहचानता अंग्रेज मिल गया जो कि फिजी में काम करता था। वह मुझे सिडनी से १५ मील की दूरी पर ले गया और मुझे मेवाराम नामक एक पंजाबी जाट का घर दिखा दिया। मेवारामजी के दरवाजे पर मैं गया। मेवारामजी से मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा बड़ा आदर-सत्कार किया। मेवारामजी ने एक आस्ट्रेलियन स्त्री से विवाह कर लिया था और वे मिस्टर मेव के नाम से पुकारे जाते थे। मेरे लिए मेवारामजी ने दो-तीन शिलिंग के सेव और अंगूर ला दिये। भूखा तो मैं था ही, खाकर खूब सोया। कई दिन मैं मेवारामजी के यहाँ रहा। फिर सिडनी इत्यादि की सैर करता हुआ मैं स्टीमर द्वारा फिजी को चला आया।

फिजी में अब कैसे भारतवासियों के जाने की आवश्यकता है ?

कुली बनकर शर्तबन्दी में तो वहाँ एक भी भारतवासी को कभी न जाना चाहिए, पर यदि कोई अपना खर्चा करके जाना चाहें तो जा सकते हैं। जो आदमी लुहारी का काम जानते हों या घोड़ों के नाल लगाना जानते हों, उनकी गुजर वहाँ बहुत अच्छी तरह हो सकती है। ऐसे आदमी तीन रुपये रोज कमा सकते हैं। फिजी में सर्वेयर लोगों की बड़ी जरूरत है। निस्सन्देह सर्वेयरों को वहाँ खूब आमदनी हो सकती है। वकील बैरिस्टर भी वहाँ जाकर अच्छी आमदनी कर सकते हैं। लेकिन जो वकील या बैरिस्टर स्वार्थी हों और रुपया कमाना ही जिनके जीवन का लक्ष्य हो वे फिजी को न जायें, क्योंकि फिजी में तो मणिलालजी के समान वकीलों बैरिस्टरों की आवश्यकता है। सबसे ज्यादा जरूरत फिजी में हिन्दुस्तानी डॉक्टरों की है। यदि भारतवर्ष से कोई डॉक्टर चले जायें तो अपने भाइयों को बड़ी सहायता पहुँचेगी। जो बैरिस्टर वहाँ जाना चाहें उनको अपनी डिग्री का प्रमाण-पत्र साथ ले जाना चाहिए। जिनको भारतीय भाइयों के साथ हार्दिक प्रेम से बरतने और उनके आन्तरिक दुखों के विमोचन के उपाय सोचने में जमुहाई आये उन महाशयों को वहाँ जाना उचित नहीं है। जिनके हृदय में शान्ति, दया, क्षमा, परोपकार, देश-सेवा, दीनों का उद्धार ये गुण बस रहे हों उन्हीं से प्रवासी भाइयों का उद्धार हो सकता है। जिनको निरन्तर पैसे की धुन के सिवाय और कुछ नहीं सूझता हो वे महाशय कृपा करके फिजी न जायें।

धन्य हैं वे लोग जो स्वार्थ को त्यागकर प्रवासी भाइयों के दुख में भाग ले रहे हैं और कुटुम्ब से मुँह मोड़ टापुओं में जाकर अपने भाइयों को धैर्य दे रहे हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे लोगों के जाने से फिजी के दुखित भारतीय लोगों के बहुत कुछ कष्ट दूर हो जायेंगे। फिजी के वर्तमान गवर्नर Sir Bickam Sweet Escott बड़े ही उदार और न्यायप्रिय हैं और हम यह बात निस्सन्देह कह सकते हैं कि ऐसा अच्छा गवर्नर फिजी में कभी नहीं आया। गवर्नर साहब कहते हैं "हमारी हार्दिक इच्छा है कि फिजी के भारतवासी सुशिक्षित हो जायँ और यहाँ के राज्य-सम्बन्धी कार्यों में भाग लेने लगें।" फिजी की उन्नति खास तौर पर वहाँ के भारतवासियों की उन्नति पर निर्भर है, क्योंकि जो वहाँ के आदिम निवासी हैं वे धीरे-धीरे कम होते जाते हैं। वहाँ ४०,००० भारत-वासी हैं, जो वहाँ के यूरोपियन लोगों की संख्या से १२ गुने हैं। भारतवर्ष के किसी बन्दरगाह से न्यूजीलैण्ड या आस्ट्रेलिया होते हुए फिजी जा सकते हैं। आस्ट्रेलिया होकर जाने में वहाँ उतरने की आज्ञा पहले से मँगानी होगी, पर न्यूजीलैण्ड होकर जाने में कोई विशेष दिक्कत नहीं होगी। और सबसे सस्ता मार्ग तो यह है कि British India Steam Navigation Company के उन जहाजों से जायँ जो कि 'कुली जहाज' कहलाते हैं। इन्हीं जहाजों से हम कुली लोग बहकाकर भेजे जाते हैं। इन जहाजों से जाने वालों को यह भी ज्ञात हो जायेगा कि जहाजों पर हमारे भाइयों को कितने कष्ट दिये जाते हैं; परन्तु इन जहाजों का आना-जाना ठीक-ठीक निश्चित नहीं रहता।

स्वदेश की यात्रा

है ऐसौ कोउ अधम मनुज जीवित जगमाँहीं
जाके मुख सों वचन कबहुँ निकस्यौ यह नाहीं
"जन्मभूमि अभिराम यही है मेरी प्यारी
वारौ जापै तीन लोक की सम्पति सारी"
सात समुन्दर पार विदेशन सों करि विचरन
भयो नाहिं घर चलन समय हरषित जाकौ मन ?

(जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी)

उपर्युक्त कथन अक्षरशः सत्य है। शायद ही संसार में कोई ऐसा अधम मनुष्य निकले जिसका कि मन विदेश से अपने घर को आते समय प्रसन्न न हुआ हो। इक्कीस वर्ष फिजी में रहकर मेरे हृदय में अपनी मातृभूमि और माता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दर्शन करने के लिए उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई। मैंने अपना यह विचार डाक्टर मणिलालजी से कहा, उन्होंने कहा अगर तुम वहाँ जाकर कुछ काम करो तो तुम्हारा जाना ठीक है। मैंने कहा, न तो मुझमें इतनी बुद्धि है और न मैं कुछ अधिक पढ़ा-लिखा ही हूँ। मैं वहाँ अपने भाइयों की क्या सेवा कर सकूँगा? श्रीयुत् मणिलालजी ने कहा "तुम्हारे लिये एक काम मैं बताता हूँ कि तुम गाँवों में जाकर कुली-प्रथा के विरुद्ध प्रचार करो और अपने ग्रामीण भाइयों को यहाँ के कष्टों को बता दो।" मैंने भी यही कहा कि मैं आपकी आज्ञा को पालन करने का यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा। तत्पश्चात मैंने इमीग्रेशन विभाग को इस बात को सूचना दी कि मैं भारतवर्ष को जाना चाहता हूँ। वहाँ से उत्तर आया कि २७ मार्च, १९१४ को सूबा से स्टीमर कलकत्ते को चल देगा। वहीं सूबा पहुँचना चाहिए। इसके बाद फिजी के हर जिले से प्रतिनिधि आकर एकत्रित हुए और सूबा में मुझे एक अभिनन्दन-पत्र दिया गया। यद्यपि मैं इस आदर के योग्य कदापि नहीं था, तथापि 'आज्ञागुरुणांह्यविचारणीया' अर्थात गुरुओं की आज्ञा मानना ही धर्म है, यह सोचकर मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया। इन लोगों ने भी मुझे यही आज्ञा दी कि तुम जाकर गाँव के लोगों में हमारे दुखों को सुनाओ और आरकाटियों के विरुद्ध यथाशक्ति आन्दोलन करो। जिस समय मैं उन लोगों से विदा हुआ उस समय मेरे हृदय में खेद और हर्ष दोनों के भाव उत्पन्न हो रहे थे। खेद, इसलिए था कि मैं अपने भाइयों से जुदा हो रहा था और हर्ष इसलिए कि मैं अपनी मातृभूमि को आ रहा था।

इमीग्रेशन विभाग ने पहले से विज्ञापन दे रखा था कि जो कोई हिन्दुस्तान जाने वाला हो वह सूबा में हमारे कार्यालय पर आये। इस समाचार को पाकर कोई १३०० भारतवासी Immigration Office में एकत्रित हुए। कितने ही तो इनमें अपना घर, खेत, माल-असबाब सब बेचकर स्वदेश को आने की तैयारियाँ कर चुके थे। इस आशा से उन्होंने अपनी वस्तुओं को आधे व तिहाई मूल्य पर दे दिया था! परन्तु इनमें से कुल ८३३ आदमी लिये गये, शेष सब धक्का मारकर निकाल दिये। एक भारतवासी का जो फिजी में रहता था, पिता भारतवर्ष में मर गया। उसकी माँ की चिट्ठी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिजी में पहुँची कि मैं भूखों मरी जाती हूँ, कौड़ी पास नहीं, जैसे हो तैसे जल्दी चले आओ। वह बेचारा भागता हुआ आफिस में पहुँचा। जब वह भीड़ से निकलकर भीतर जाने लगा तो एक गोरे सिपाही ने उसे पकड़ लिया और उसे कोठरी में बन्द कर दिया। दूसरे दिन उस पर यह अभियोग लगाया गया कि इमीग्रेशन के आफिस का मार्ग रोक रहा था। बस उस पर १० शिलिङ्ग जुर्माना हुआ और भारतवर्ष को आने की आज्ञा उसे नहीं मिली। उसके हृदय में अपनी विधवा माँ के देखने की उत्कट इच्छा थी, परन्तु उस सिपाही की धूर्तता के कारण वह भारतवर्ष आने से रोक दिया गया। पाठक-गण ! क्या आप उस मनुष्य के दुख का अनुमान कर सकते हैं ?

तदनन्तर हम लोगों को सूबा डिपो में जाना पड़ा। वहाँ पर नित्यप्रति हम लोगों की हाजिरी होती थी। वहाँ भी हम लोगों के साथ पशुओं के समान बर्ताव किया जाता था। एक बेचारे भारतवासी से कहीं यह अपराध बन पड़ा कि उसने नीबू के पेड़ से एक नीबू तोड़ लिया। सो भी किसलिए ? इसलिए कि उसका छोटा-सा बच्चा नीबू के लिए बहुत देर से रो रहा था। फिर क्या था, गोरे साहब ने हाथ पकड़कर उसे घसीट डाला, नीबू उससे छीनकर फेंक दिया और उसको जो टिकट भारतवर्ष जाने के लिए मिला था वह छीन लिया और उसे वहाँ से निकाल दिया ! उसे फिजी में ही रहना पड़ा। रेल पर पहुँचने पर जब रेल छूट जाती है और बैठने नहीं पाते तो हम लोगों को बड़ा खेद होता है, यद्यपि हमें इस बात की आशा रहती है कि चार-पाँच घण्टे बाद दूसरी ट्रेन मिल जायेगी, तो फिर उस मनुष्य को कितना रंज हुआ होगा जिसे कि एक नीबू तोड़ने के अपराध में फिजी में वर्ष भर और रहना पड़ेगा और कष्ट भोगने पड़ेंगे !

जहाज चलने के एक दिन पहले इमीग्रेशन आफिस के क्लर्क ने हम लोगों से पूछा, कितने रुपये घर लिये जा रहे हो ? क्योंकि यह बात वहाँ पर लिखी जाती है। कितने ही हमारे मूर्ख भाइयों ने लिख दिया कि हम २००० रुपये या ४००० रुपये लिये जाते हैं। पीछे से कलकत्ते पहुँचने पर मुझे ज्ञात हुआ कि इनके पास एक कौड़ी भी नहीं थी, कलकत्ते से घर तक के लिए किराया भी तो था नहीं ! ये लोग यह नहीं समझते कि झूठ लिखा देने से बहुत हानि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है। जब कभी कोई फिजी-प्रावासी भारतवासियों के दुख वर्णन करता है तो इमीग्रेशन आफिस वाले यह प्रमाण पेश करते हैं कि देखो इतने लाख रुपये प्रतिवर्ष कुली लोग कमाकर फिजी से भारतवर्ष ले जाते हैं। इसके अतिरिक्त इमीग्रेशन आफिस के क्लर्क लोग तो शून्य का कुछ मान ही नहीं समझते। किसी कुली ने कहा, हम १५ रुपये घर लिये जा रहे हैं; पर क्लर्क साहब ने एक शून्य और बढ़ाकर १५० रुपये लिख दिये। इसके अतिरिक्त कोई छल्ला, अँगूठी इत्यादि पहने हो तो उसका भी मूल्य दस-बीस गुना लिख देते हैं! उदाहरणार्थ कोई चाँदी का छल्ला पहने हुए है तो क्लर्क साहब पूछते हैं 'यह छल्ला कितने का है ?' उसने कहा, हुजूर! यह आठ आने का है !! क्लर्क साहब कहते हैं, यह छल्ला आठ आने का है ? यह कम से कम आठ रुपये का है। हम इसका दाम रजिस्टर में आठ रुपये लिखता है। यह कहकर उस छल्ले के दाम आठ रुपये लिख दिये। इस प्रकार से लिखे गये रुपयों का जोड़ यदि लाखों पर पहुँचे तो इसमें आश्चर्य ही क्या है।

जहाज में बैठने में भी इमीग्रेशन विभाग के हैड क्लर्क साहब बड़ा कष्ट देते हैं। यदि किसी आदमी के पास अधिक सामान हो तो उसे बड़ी तकलीफ सहनी पड़ती है। क्लर्क साहब एक बार जितना सामान एक आदमी ला सकता है उतना ही लाने देते हैं। दूसरी बार फिर नहीं जाने देते, चाहे उसका सामान डिपो में वहीं पड़ा रह जाय।

हम लोग भेड़-बकरियों की तरह जहाज में भर दिये गये। मार्ग की कठिनाइयों के वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। एक बार जबकि हमारे भाइयों को जहाज में खाना बँट रहा था और एक गोरा डाक्टर हाथ में बेंत लिये दो-एक भारतवासी को मारता जाता था, मैंने फोटो से उसकी तस्वीर खींची। गोरे डाक्टर को यह बात ज्ञात हो गयी। वह मेरे पास आया और मुझसे कहा 'जरा इस फोटो को मुझे दीजिए। देखें आप कैसा खींचते हैं, मैंने धोखे में आकर उसे प्लेट सहित कैमरा दे दिया, उसने झट से मेरा कैमरा और प्लेट इत्यादि को समुद्र में फेंक दिया। मैं देखता ही रह गया!

जहाज में हम ८३३ भारतवासी फिजी से लौटकर आये थे। इनमें से लगभग ५०० के पास तो कलकत्ते से घर तक जाने के लिए किराया भी नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। जो लोग कहते हैं कि टापुओं में जाकर भारतवासी धन बटोर लाते हैं उन्हें आँखें खोलकर उपर्युक्त बात पर ध्यान देना चाहिए। मुझे फिजी से चलते समय एक विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हो गया था कि मेरी तलाशी ली जायेगी। अतएव मैंने अपने सन्दूक पर से अपने नाम को तारकोल से मिटवा दिया और अपने एक मित्र का नाम लिखवा दिया। इस सन्दूक में बहुत-से कागज-पत्र ऐसे थे जिनमें कि फिजी-प्रवासी भारतवासियों के दुखों और कष्टों का वर्णन था और कितने ही मजिस्ट्रेटों के फैसलों (Judgement) की प्रतिलिपि भी थीं। श्रीमान गांधीजी, श्रीयुत् मणिलालजी इत्यादि से जो पत्र-व्यवहार हुआ था, उसकी नकलें थीं। यद्यपि इन वस्तुओं में कोई वस्तु हानिकारक नहीं थी, पर मुझे ख्याल था कि फिजी के गोरे मेरा पीछा जहाज में भी नहीं छोड़ेंगे। आखिरकार तलाशी हुई। असली सन्दूक तो, जिसमें कि कागज-पत्र थे, मेरे एक मित्र के पास था, पर एक दूसरे ट्रन्क की तलाशी ली गयी। जहाज में हम लोगों ने चन्दा इकट्ठा किया और १८ आदमियों को घर तक जाने के लिए दाम दिये। मैंने विचार किया कि कलकत्ते चलकर हम लोग मिलकर किसी बैरिस्टर के पास चलेंगे और अपने दुखों का वर्णन लिखाकर एक प्रार्थना-पत्र सरकार की सेवा में भेजेंगे। इस बात के लिए मैंने साठ आदमियों को तैयार भी कर लिया था और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए थोड़ा चन्दा भी इकट्ठा कर दिया था। अप्रैल १९१४ को हम लोग कलकत्ते आ पहुँचे। अपनी मातृभूमि के दर्शन कर हम लोगों का हृदय गद्‌गद् हो गया। खेद की बात है कि जिन लोगों को मैंने बैरिस्टर के पास चलने के लिए तैयार किया था, वे जहाज से उतरते ही इधर-उधर चले गये और मैं अकेला ही वहाँ रह गया! हिरनगौ में अपने घर पहुँचकर अपनी माँ के चरण छूने से मुझे जो प्रसन्नता हुई वह अवर्णनीय है!

उपसंहार

इस अन्तिम अध्याय में मुझे कुली-प्रथा के विषय में कुछ कहना है।

जो कोई उपनिवेशों में जाकर गिरमिट में काम करने वाले भारतवासियों को अपनी आँखों से देखेगा उसे यह अवश्य ज्ञात हो जायगा कि राज-कर्मचारियों के लिए हुए विवरण और कमीशनों की लिखी हुई रिपोर्टें प्रायः

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवासी भारतवासियों की वास्तविक स्थिति को प्रकट नहीं करती। सूक्ष्म दृष्टि से देखने वाले को यह फौरन ज्ञात हो सकता है कि कुली-प्रथा दासत्व का नया संस्करण मात्र है। Sir Charles Bruce ने The Broad Stone of Empire नामक पुस्तक में लिखा है कि "जब गोरे लोग उष्ण देशों में शारीरिक परिश्रम न कर सके तो फिर काले मजदूरों की आवश्यकता हुई। दासत्व-प्रथा के बन्द होने के पहले कितने ही उपनिवेशों में हब्शी लोग ही मजदूरों का काम करते थे, परन्तु जब दासत्व-प्रथा बन्द हुई तो स्वतन्त्र हब्शी लोग इस कार्य को अत्यन्त नीच और दासोचित समझने लगे! कुछ उपनिवेशों में वहाँ के आदिम निवासी इतने असभ्य थे कि वे नियमित रूप से खेती का काम न कर सके। यही बातें कुली-प्रथा के जन्म का कारण हुईं और इसी प्रथा से कुली मौरीशस, नेटाल, ट्रिनीडाड, जमैका, ब्रिटिश गायना इत्यादि को भेजे जाने लगे।"

सन् १८५७ ई० में लार्ड सेलिसबरी ने इस प्रथा के विषय में लिखा था कि अंग्रेजी राज्य ने भारतवर्ष में मारकाट बहुत कम करा दी है, इस कारण आबादी बहुत बढ़ गयी है, इसलिए लोगों को खाने-पीने का आराम नहीं है, अतएव भारतवासियों का उन देशों में जाना अच्छा है जहाँ कि उन्हें अपने देश से अधिक मजदूरी मिले। लार्ड सेलिसबरी ने अन्त में लिखा था—

"Above all things we must confidently expect, as an indispensable condition of the proposed arrangements, that the colonial laws and their administration will be such that Indian settlers, who have completed the terms of service to which they agreed, as the return for the expense of bringing them to the colonies, will be free men in all respects, with privileges no whit inferior to those of any other clan of Her Majesty's subjects resident in the colonies.

(साप्ताहिक भारतमित्र, १ जून, १९१४)

अर्थात सर्वोपरि बात यह है कि प्रस्तावित प्रबन्ध की इस अटूट शर्त पर हमें विश्वासपूर्वक आशा करनी चाहिए कि उपनिवेशों के कानून और उनका प्रयोग ऐसा हो कि जिन प्रवासी भारतवासियों के शर्तनामे की मियाद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरी हो जायेगी, वे उपनिवेशों में अपने लाये जाने के कष्ट के बदले में सब प्रकार से स्वतन्त्र होंगे और उपनिवेशों में रहने वाली महारानी की अन्यदेशीय प्रजा के अधिकारों से उनके अधिकार किसी प्रकार कम न होंगे।"

यह कहना अनावश्यक है कि लार्ड साहब ने जो आशा दिलायी थी वह बिलकुल निर्मूल निकली। उपनिवेशों में जो दुख हमारे भाइयों को दिये जाते हैं, उनका अन्त नहीं है। इससे सरकार को भी कष्ट होता है क्योंकि वहाँ के भारतवासियों पर जब अत्याचार होता है तब यहाँ पर आन्दोलन होता है। राजकीय उपनिवेशों में गोरे प्लैण्टर हम लोगों के साथ गधे और कुत्ते जैसा व्यवहार करते हैं। यदि यह व्यवहार किसी अन्य राष्ट्र के लोगों के साथ किया जाता तो यह कुली-प्रथा कभी की बन्द हो गयी होती। फिजीद्वीप में कुछ जापानी शर्तबन्दी में लाये गये थे। यद्यपि गोरे लोगों ने हम भारतवासी कुलियों से कहीं अधिक सुविधाएँ जापानियों के लिए रखीं थीं; पर तब भी लगभग एक-तिहाई जापानी कड़ा काम करते-करते मर गये! तब जापान सरकार ने अपने जापानियों को वहाँ से लौटा लिया। सुलेमान द्वीप के निवासी भी इसी तरह गिरमिट में काम करने के लिए फिजीद्वीप में लाये गये थे, पर वे भी इन दुखों को न सह सके और वे भी लौटा लिये जा रहे हैं। यह भारतवासी ही हैं जो चने चबाकर १२ घण्टे काम कर सकते हैं। मैं अपने २१ वर्ष के अनुभव से कह सकता हूँ, जितना काम एक भारतवासी मजदूर एक दिन में कर सकता है उतना काम तीन अंग्रेज, जापानी या चीनी मजदूर एक दिन में कठिनता से कर सकते हैं, यदि दोनों की असुविधाएँ समान हों और दोनों को एकसा खाना दिया जाय। फिजीवालों ने जब चीन-सरकार से मजदूरों के लिए प्रार्थना की थी तो चीन-सरकार ने साफ मना कर दिया। क्या हमारी सरकार ने यह दृढ़ निश्चय कर लिया है कि कुली-प्रथा बन्द न की जाय? क्या सरकार का यह कर्तव्य नहीं है कि अपनी प्रजा की रक्षा करे? जापानी, सुलेमानी और पालीनीशियन लोगों ने फिजी में कुलियों का जाना बन्द करा दिया तो फिर हमारी सरकार ही इस बात की क्यों आज्ञा देती है कि जितने कुली चाहो इस देश से भरकर ले जाओ? जिस देश के स्वतन्त्रता-प्रिय लोगों ने दासत्व-प्रथा को उठाने के लिए तन-मन-धन से प्रयत्न किया,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हा! उसी देश के लोग दासत्व-प्रथा जैसी कुली-प्रथा के पृष्ठपोषक बने हैं, यह कितने खेद की बात है? कामन्स की सभा में जब श्रीमान् डौंग्लास हाल ने इस विषय में पूछा था तो श्रीमान् मौण्टेगू ने, जो उपसचिव हैं, कहा था :

"I may add that the recent Inter Departmental Committee under Lord Sanderson has recommended that the system be allowed to continue subject to certain recommendation in regard to particular colonies and they are under discussion."

अर्थात "मैं कह सकता हूँ कि पिछली अन्तर्विभागीय कमेटी ने, जिसके कि प्रधान लार्ड सैंडरसन थे, यह सिफारिश की है कि कुली-प्रथा जारी रखी जाये और खास-खास उपनिवेशों में कुछ सुधार किये जायँ और इन सुधारों के विषय में अभी बातचीत चल रही है।"

तब तो हम जानते जब अंग्रेज लोग कुली-प्रथा में शिलिंग रोज पर भेजे जाते और खाने के लिए साढ़े चार सेर आटा और सवा सेर कच्ची दाल सात दिन को दी जाती, पानी पीने को एक टीन का लोटा और खाना रखने के लिए एक टीन की थाली, सोने के लिए तीन आदमी को कुली लैन की एक कोठरी दी जाती और जमीन पर मूसे की खोदी हुई मिट्टी पर बिना खटिया गद्दा-तकिये के सोना पड़ता और तीन बजे रात में उठकर काम पर जाने की तैयारी करनी होती, काम पर दिन में एक-दो बार ओवरसियर की किक् (लात ठोकर) लगती तो फिर लार्ड सैण्डरसन और श्रीमान् मौण्टेगू क्या यही कहते कि कुली-प्रथा जारी रखी जाय ?

जब राजर्षि गोखले ने Indentre system कुली-प्रथा के विरुद्ध एक प्रस्ताव को कौंसिल में पेश किया था तो सरकारी सदस्य क्लार्क साहब ने इस बात को मंजूर किया था कि शर्तबन्दी के असली नियम कुलियों को नहीं समझाये जाते। सन् १९१२ के सरकारी गजट के ३१६वें पृष्ठ पर क्लार्क साहब लिखते हैं।

It is perfectly true that terms of the contract do not explain to the coolies the fact that if he does not carry out

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

his contract or for other offences (like refusing to go to hospital when ill, breach of discipline etc.) he is to incur imprisonment or fine.

अर्थात् "यह बात बिलकुल ठीक है कि शर्तबन्दी में जो नियम रखे जाते हैं उनमें से किसी नियम से कुली को यह बात ज्ञात नहीं होती कि अगर वह शर्त के अनुसार काम न कर सकेगा, अथवा कोई दूसरा अपराध करेगा (जैसे बीमार होने पर अस्पताल को न जाना, आज्ञा-भंग करना इत्यादि) तो उस पर जुर्माना होगा या उसे कैद होगी।

खेद तो हमें इस बात का है कि सब बातों को जानते हुए भी क्लार्क साहब ने कुली-प्रथा का समर्थन किया था ! सम्भवत: क्लार्क साहब यह चाहते हैं कि उपनिवेशों के प्लैण्टरों के स्वार्थ के लिए भारतवासियों के अधिकार, स्वतन्त्रता और जीवन तक को नष्ट कर दिया जाय !

जहाँ तक हमें ज्ञात है, अब केवल सुरीनाम ही एक ऐसा विदेशी उपनिवेश है जहाँ ब्रिटिश उपनिवेशों की भाँति कुली भेजे जाते हैं। वैसे तो सभी उपनिवेशों में हम लोगों के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया जाता है, पर आश्चर्य और दुख तो हमें इस बात का है कि ब्रिटिश उपनिवेशों में विदेशी उपनिवेशों की अपेक्षा और भी बुरा बर्ताव हम लोगों के साथ किया जाता है। W. W. Pearson ने, जो कि दक्षिण अफ्रीका गये थे, एक लेख जुलाई के मॉडर्न रिव्यू में पुर्तगाल के पूर्वी अफ्रीका के विषय में लिखा है। पियरसन साहब के कथन का सारांश यह है कि जो आदमी ब्रिटिश साम्राज्य में पैदा होने का घमण्ड रखता हो और जो यह विचार करता रहा हो कि ब्रिटिश झण्डे के नीचे सब लोगों के साथ न्याय और समानता का वर्ताव किया जाता है, उसे यह देखकर बड़ी लज्जा आयेगी कि जो बर्ताव पुर्तगाल वालों के उपनिवेशों में भारतवासियों के साथ किया जाता है वह उससे कहीं बेहतर है जो ब्रिटिश उपनिवेशों में उनके साथ किया जाता है।

दीनबन्धु ऐण्ड्रूज की कुली-प्रथा के विषय में सम्मति

जनवरी सन् १९१४ के मॉडर्न रिव्यू में दीनबन्धु सी. एफ. ऐण्ड्रूज ने कुली-प्रथा के विषय में कितनी ही सारगर्भित बातें लिखी हैं। उनके उक्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख का अनुवाद यहाँ देना अप्रासंगिक न होगा। श्रीमान् ऐण्ड्रूज साहब लिखते हैं—"लेकिन अब मैं देखता हूँ कि कुली-प्रथा का प्रश्न एक जुदा ही प्रश्न है और इस प्रश्न के हल करने से स्वतन्त्र भारतवासियों को बहुत लाभ होगा। मेरा विश्वास है कि अब भारतवर्ष में हमारा सबसे पहला कर्तव्य यह है कि हम सब मिलकर यह कानून बनाने के लिए आन्दोलन करें कि एक भी भारत-वासी कभी भी किसी भी मतलब के लिए शर्तबन्दी में कुली बनाकर न भेजा जाय। इस कानून को हम Abolition of Indenture System (कुली-प्रथा का उच्छेद) नाम से पुकारते हैं। शर्तबन्दी की इस प्रथा को बन्द करने के लिए हमें पहला कारण यह बताना चाहिए कि एक सभ्य देश के लिए यह अनुचित है कि उसके नागरिक अपने को एक प्रकार की वास्तविक गुलामी में बेच डालें और चूँकि भारतवर्ष अब संसार के उन्नतशील राष्ट्रों में स्थान प्राप्त कर रहा है, इसलिए भारतवासी इस बात की दृढ़-प्रतिज्ञा करते हैं कि हम इस कुली-प्रथा को जड़-मूल से नष्ट कर देंगे, क्योंकि यह प्रथा हमारी कीर्ति को नष्ट कर रही है। यदि कुली-प्रथा के पक्ष में कोई यह तर्क पेश करे कि शर्तबन्दी में काम करने वाले भारतवासी कुलियों की आर्थिक स्थिति उनकी उस समय की स्थिति से अच्छी होती है जबकि वे स्वतन्त्र थे, तो इसका उत्तर यह है कि यही तर्क तो दासत्व-प्रथा के पक्षपाती पेश करते थे, और इसी तर्क ने दासत्व-प्रथा के बन्द होने में पचास वर्ष की और देर लगायी थी! इस तर्क का खण्डन विस्तारपूर्वक करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि स्वयं इतिहास ने ही इसका खण्डन कर दिया है। यदि कोई यह तर्क पेश करे कि कुली-प्रथा में कुलियों की रक्षा के लिए बहुत-से नियम बने हुए हैं और कुली-प्रथा में वैसे अत्याचार नहीं होते जैसे कि प्राचीन दासत्व-प्रथा में होते थे, तो मैं उससे बहस नहीं करूँगा। मैं केवल उसे यह दिखा दूंगा कि किसी पिछले साल में जहाँ भारतवर्ष में दस लाख पीछे ३७ आदमियों ने आत्महत्या की वहाँ नेटाल में शर्तबन्दी में काम करने वाले कुलियों में दस लाख पीछे ६६२ आदमियों ने आत्महत्या की। यहाँ पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस साल में कोई विशेष कारण आत्मघात के नहीं हुए, आप किसी भी वर्ष को ले लें, सब में लगभग यही अनुपात रहेगा। जिस प्रथा के इस प्रकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से नतीजे निकलें वह अपने आप अत्यन्त निन्दनीय है, चाहे उसमें रक्षा के कितने ही नियम क्यों न बनाये जायँ। यदि दूसरी हालतों में इस प्रथा से उत्पन्न हुए दुखों के फल दृष्टिगोचर न हों, तब भी यह प्रथा इतनी भयानक है और इसमें अन्याय और अत्याचार की इतनी आशंकाएँ हैं कि सबसे अधिक बुद्धिमानी की बात यही है कि इस प्रथा को बिलकुल बन्द ही कर दिया जाय। यदि हम यह बात तर्क के लिए मान भी लें कि प्लैण्टर लोग दयाशील होंगे और हर तरह से कुलियों के रक्षा के नियम काम में लाये जायेंगे तब भी हमें यह बात कहनी पड़ेगी कि यह प्रथा एक उन्नतशील राष्ट्र के लिए सर्वथा अनुचित और अयोग्य है। कोई भी इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता कि इंगलैण्ड और अमरीका में यह प्रथा इसी तरह जारी रहती, जिस तरह कि यह भारतवर्ष में प्रचलित है। स्वयं हम लोग भी भारतवर्ष में इस प्रथा की अमानुषिकता को जान गये हैं और इस प्रथा से हमारा जो बेइज्जती होती है उसे भी हम अपने हृदय में पहचान गये हैं। यदि वर्तमान समय के सर्वोत्तम वीर और सर्वोत्कृष्ट मनुष्य श्रीमान गांधी के प्रयत्न का केवल यही फल हो कि उपरोक्त भाव हमारे हृदय में उत्पन्न हो जायँ और हम कुली-प्रथा के विरुद्ध कार्य में प्रवृत्त हों तो भी गांधीजी का प्रयत्न निष्फल और व्यर्थ नहीं कहा जा सकता। हम यह मानते हैं कि हमें अपने दूसरे दोषों को भी दूर करना होगा। हम लोग अपनी नीच जातियों के साथ जो अमानुषिक बर्ताव करते हैं उसे दूर करना होगा। हम इन बातों का भी ख्याल रखेंगे। परन्तु कुली-प्रथा का प्रश्न एक निकट का प्रश्न है।

यदि हम इस प्रश्न का सामना ठीक तरह से और न्याय के साथ करेंगे तो सम्पूर्ण सभ्य संसार की दृष्टि से हम आदरणीय होंगे। क्या हम सब मिलकर इस बात का प्रतिपादन करेंगे कि कुली-प्रथा बन्द कर दी जाय? यदि हम इस बात के लिए तैयार हैं तो हम सबको एक साथ मिलकर काम करना चाहिए। क्या हिन्दू क्या मुसलमान और क्या ईसाई सबको एक स्वर से यही कहना चाहिए कि कुली-प्रथा बन्द कर दी जाय। फिर हमारी इस स्पष्ट और न्याययुक्त प्रार्थना को कोई नहीं रोक सकता। हमें इस बात के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ को तिलांजलि देनी होगी और संसार को यह दिखाना होगा कि हम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ बातें ही नहीं करते, दृढ़ता से काम भी करते हैं। इसमें हमें अन्य स्वार्थी लोगों के साथ भी न्यायपूर्वक और यथोचित रीति से बर्ताव करना होगा। हमारा विरोध और प्रतिकार भी किया जायेगा। भारतवासियों के अन्तःकरण इस असह्य अन्याय से विचलित हो गये हैं। परन्तु हम यह नहीं जानते कि हम क्या करें! चारों ओर से आदमी चिल्ला रहे हैं, हम क्या करें? हम क्या करें? आओ हम सब मिलकर कुली-प्रथा को बन्द करें। यदि हम यह काम करेंगे तो हमारा यही काम उपनिवेशों के स्वतन्त्र भारतवासियों के आन्दोलन में बहुत कुछ सहायता देगा।''

दीनवन्धु ऐण्ड्रूज की हम शतमुख से प्रशंसा करते हैं और उनकी इस कृपा के लिए प्रत्येक भारतवासी उनका कृतज्ञ होगा। दासत्व-प्रथा और कुली-प्रथा में केवल इतना ही फर्क है कि पहली प्रायः जीवन-भर के लिए होती थी और दूसरी निश्चित समय तक के लिए।

हमारा क्या कर्तव्य है—प्रत्येक भारतवासी का यह कर्तव्य है कि इस प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन में सहायता करे। यह कोई राजविद्रोह का काम नहीं होता है। आरकाटी लोग सरकारी नियमों का भी उल्लंघन करके लोगों को फुसलाते हैं और हम लोग आरकाटियों के विरुद्ध आन्दोलन करते हैं; अतएव हमारी समझ में यह कार्य सर्वथा राजभक्तिपूर्ण है। कई जगह ऐसा हुआ कि कुली-प्रथा के विरुद्ध व्याख्यान देने का प्रबन्ध किया गया, पर आरकाटियों के बहकाने से लोगों ने इस कार्य को राजविद्रोहपूर्ण समझकर व्याख्यान के लिए अपना स्थान ही नहीं दिया! कितने खेद की बात है कि नाच-गाने के लिए हम अपना स्थान राजी से दे दें, पर कुली-प्रथा के विरुद्ध लैक्चर के लिए प्रार्थना करने पर भी न दें! समाचार-पत्रों का यह प्रथम कर्तव्य है कि इस कुली-प्रथा के विरुद्ध निरन्तर लेख छापें। हिन्दी पत्रों में 'भारतमित्र' और अंग्रेजी पत्रों में 'मॉडर्न रिव्यू' को छोड़कर ऐसे बहुत कम समाचार-पत्र हमारे देखने में आये हैं जिन्होंने कि इस ओर विशेष ध्यान दिया हो। हमें उपरोक्त पत्रों के सम्पादकों की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा करनी चाहिए और अन्य समाचार-पत्रों को उनके इस प्रशंसनीय कार्य का अनुकरण करना चाहिए। जमींदार लोगों का यह कर्तव्य है कि अपने-अपने गाँवों में लोगों को आरकाटियों के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फन्दे में न फँसने के लिए, उपदेश दें। परमेश्वर ने जिन लोगों को धनवान बनाया है उन्हें उचित है कि इस कार्य में आर्थिक सहायता दें और जगह-जगह पर कुली-प्रथा निवारिणी सभा स्थापित करें। जिन लोगों में वक्तृत्व-शक्ति है उनसे यह प्रार्थना करनी चाहिए कि कभी-कभी दो-चार शब्द इस कुली-प्रथा के विरुद्ध भी कह दिया करें। जो कौंसिल के मेम्बर हैं उनका कर्तव्य है कि इस प्रथा के विरुद्ध व्यवस्थापिका सभा में प्रस्ताव पेश करें। यदि इन लोगों से यह कार्य भी नहीं हुआ तो इनको प्रजा का प्रतिनिधि समझना भारी भूल है। हम लोगों को उचित है कि स्वयंसेवक बनें और तीर्थों में यात्रियों को इन धूर्तों से बचायें।

सरकार का क्या कर्तव्य है ?

सरकार को उचित है कि बिना विलम्ब इस प्रथा को बन्द कर दे। इस प्रथा के प्रचलित करने के पाप का प्रायश्चित्त यही है कि प्रथा फौरन बन्द कर दी जाय और ऐसी स्कीम बनायी जाय और ऐसे कार्य खोले जायँ जिनसे कि अपने देश भारतवर्ष ही में मजदूरों की माँग बढ़े। मध्य प्रदेश में बहुत-सी जमीन खाली पड़ी है, और देशी रियासतों में तो भूमि की कमी ही क्या है ? दूसरे प्रान्तों में भी कितने ही जिले ऐसे हैं जिनमें बहुत-सी जगह खाली है। उदाहरणार्थ, संयुक्त प्रदेश में बस्ती जिला, मद्रास में गंजम जिला इत्यादि। सरकार का कर्तव्य है कि इन स्थानों को बसाने का प्रयत्न करे।

कांग्रेस का कर्तव्य है कि विशेष समिति बनाये, जो प्रवासी भारत-वासियों के विषय में ज्ञातव्य बातों की हम लोगों को सूचना दिया करे। जो-जो अत्याचार और अन्याय हमारे भाइयों पर दूसरे देशों में किये जाते है उनमें से प्रत्येक के लिए समाचार-पत्रों में खूब आन्दोलन करना चाहिए।

गवर्नमेण्ट ने जो 'उद्योग और व्यापार' विभाग खोल रखा है और जिसमें कि लाखों रुपये व्यय होते हैं, सबसे पहले उसका फर्ज है कि सरकार से ऐसे काम खुलवाये, जिनमें भारतवासी मजदूर अपने देश में ही नौकरी पायें।

मेरा विचार है कि जहाँ-जहाँ पर डिपो खुली हुई हैं वहाँ-वहाँ स्वयं जाकर अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार टापुओं के दुखों को सुनाऊँ। पर इस कार्य में मुझे सर्वसाधारण की सहायता की आवश्यकता है। पाठक कृपया मुझे लिखें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि किन-किन नगरों में डिपो खुली हुई हैं। मैं उन स्थानों के नाम अपने भ्रमण के प्रोग्राम में अवश्य लिख लूँगा और यथावकाश वहाँ जाने का प्रयत्न भी करूँगा। स्थानाभाव से इस विषय में यहाँ अधिक नहीं लिख सकता।

हमें विश्वास करना चाहिए कि कुली-प्रथा बन्द होगी और अवश्य बन्द होगी। जब हमारे देश के नेता राजर्षि गोखले उसके विरुद्ध आन्दोलन कर रहे हैं तो फिर हमें निराश कभी न होना चाहिए। राजर्षि गोखले ने इस प्रथा के विरुद्ध प्रस्ताव करते हुए कौंसिल में कहा था :

"This motion, the council may rest assured, will be brought forward again and again, till we carry it to a successful issue. It affects our national self-respect and therefore the sooner the Government recognises ths necessity of accepting it, the better it will be for all parties."

अर्थात "कौंसिल इस बात पर विश्वास रखे कि यह प्रस्ताव बराबर कौंसिल में बार-बार पेश किया जायगा, जब तक कि हम लोग इसमें सफल न हों। इस प्रथा का बुरा प्रभाव हमारे जातोय आत्मसम्मान पर पड़ता है। जितनी जल्दी गवर्नमेण्ट हमारे इस प्रस्ताव को स्वीकृत करेगी उतनी ही ज्यादा सब लोगों की भलाई होगी।"

सरकार से इस विषय में विशेष प्रार्थना करने की आवश्यकता है। जब तक सरकार प्रजा के हित को अपना हित न समझेगी तब तक प्रजा का असन्तोष नष्ट नहीं हो सकता। प्रजा को सन्तोष देना ही सरकार का सबसे पहला कर्तव्य है।

पाठकगण ! मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार आपकी सेवा में यह निवेदन किया है। सम्भवतः कुछ लोग इसे पढ़कर कहेंगे—'चलो जी, इस कुली की बात को क्या सुनते हो। यदि कोई सुशिक्षित आदमी कहता तो हम सुनते और विश्वास भी करते।' मैं ऐसे सुहृदय (!) लोगों से विनयपूर्वक क्षमा माँगता हूँ और अन्त में यही कहता हूँ :

प्रिय देशबन्धुओ ! आओ हम सब मिलकर कुली-प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन करें। यदि हम लोगों ने तन-मन-धन से प्रयत्न किया तो परमेश्वर हमारी सहायता अवश्य करेगा।

Library
185496
डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट—
हरप्यारी देवी, ओमप्रकाश आर्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

097
185496

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R.P.S

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या 097 ARY-F आगत संख्या 185496

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar